

Published by
Shri Mangaldas L. Gbadish
For
The Managing Trustees of
Shri VIJAYADEVSUR SANGH G'AN SAMITI
The Godiji Jain Temple and Charities
Pudhona, Bombay 3

The Trustees of (Shri Vijayadevsur Sangh)
The Godiji Jain Temple & Charities

- (1) Sheth Gokuldas Lallubhai
- (2) Sheth Parachand Rupchand
- (3) Sheth Laxmichand Durlabhji.
- (4) Sheth Bhairchandbhai Naginbhai Jhaveri.
- (5) Sheth Keshavlal Bulakhidas
- (6) Sheth Mohanlal Maganlal.
- (7) Sheth Mohanlal Tarachand J P
- (8) Sheth Laxmichand Raichand Sarvarya
- (9) Sheth Raranchand Choonilal Dalia
- (10) Sheth Mulchand Vadilal
- (11) Sheth Fulchand Naginbhai Jhaveri.
- (12) Sheth Ranchhoddas Chhotalal.

Printed by
K. G. SHARANGPANI
Aryabhushan Press
915/1 Shivajinagar Poona 4.

SHRI VIJAYADEVSUR SANGH

SERIES No 9

श्री मद्भगवत्सूत्रम्

(पञ्चदश गोशालकाख्य शतकम्)

श्रीमदभयदेवसूरिवर्यविहितविवरणयुतम् ॥

EDITED BY

Prof N V VAIDYA M. A

Fergusson College Poona 4

Preface

The University of Bombay has prescribed the Fifteenth Śataka from the Bhagavata Sūtra (Gosāla Mata) for the M A examination for the years 1954 and 1955. It was edited by Dr P L. Vaidya as an Appendix to his edition of Uvaśagadasāo. But that edition is now out of print and the students, therefore are finding it difficult to procure the copies of the text. Many students wrote to me requesting me to undertake the publication but I was hesitating—for obvious reasons I then requested my friend Shri Popatlal Shah M L A., to do something in the matter and I am glad to state that he immediately promised to defray the entire publication costs and asked me to proceed with the work immediately. It was a very generous gesture on his part and I am indeed very grateful to him for the same.

In the meantime I had also written to the Trustees of the Shri Godiji Maharaj Jain Temple and charities regarding the difficulty experienced by the students and the Trustees though none of them knew me personally very kindly and generously agreed to publish the text as well as the commentary on behalf of their series viz The Vijayadevsur Sangh Series. I am indeed grateful to the enlightened Trustees of the above-mentioned charities for their very generous & spontaneous response to my request. I have no doubt that the students of the M A class would also be equally grateful to the Trustees for this Dnyāna Dāna.

I am indebted to my student friend Shri P N Mulay B A B T, for preparing the Press-copy of the commentary.

श्री गोर्दी पाम्बनाथाय नमः ।

PUBLISHERS NOTE

We the members of Shree Vijayadevsur Sangh Gnan Samiti are glad to publish this **GOŚĀLA-MATA** the Fifteenth chapter of Shree Bhagavati Sūtra—as the 9th Volume of Vijayadevsur Sangh Series We are very much grateful to Professor N V Vaidya, M A for advising us to take up the publication work and for his taking so much interest to give facilities to the student world All honour goes to Shri N V Vaidya for editing this work and giving his valuable time without any expectations

We will feel ourselves doubly rewarded if more and more students come forward to take up the study of Ardha-Magadhi Language

Members Of
Vijayadevsur Sangh Gnan Samiti

- (1) Sheth Keshavlal Bulakhidas
- (2) Sheth Ratanchand Chunilal Dalia
- (3) Sheth Panachand Rupchand
- (4) Sheth Laxmichand Raichand Saravaiya
- (5) Sheth Fattchchand Zaverbhai
- (6) Narottamdas Bhagvandas Shah,
- (7) Mohanlal Dipchand Choksi
- (8) Chhotalal Girdharbhai
- (9) Mangaldas Lallubhai Ghadiali



OUR PUBLICATIONS

- | | |
|--|-------|
| (1) श्री सुजगताक्षरस्य भाग १ | ४-०-० |
| (२) ' ' भाग २ | ३-०-० |
| (३) श्री पंच मतिकमणस्य सार्य (गुजराती)
विशेषगर्हित पृष्ठ ४४ | २-०-० |
| (४) नामांकित नागरिक, सोठ मोतीशह (गुजराती) | २-८-० |
| (5) JAINISM IN GUJARAT
(1100 A D to 1600 A. D) | 5 0-0 |

॥ श्रीमद्भगवतसूत्रम् ॥

पञ्चरत्नम सय ॥ (मूत्राणि ५३९-५६०)

नमो सुयदेवयाप भगवईप ॥

१ तेण कालेण तेण समणण सावत्थी नाम नयरी होत्था ।
वण्णो । तीस ण सावत्थीण नयरीण वट्ठिया उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाप 5
तत्थ ण कौट्टप नाम चेइए होत्था वण्णो । तत्थ ण सावत्थीप
नयरीण हालाहला नाम कुंभकारी आजीपिओवासिया परियसइ
अहु जाअ अपरिभूया, आजीवियसमयसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा
त्रिणिच्छियट्ठा अट्ठिर्मिजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो आजीवियसमए
अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे सि आजीवियसमएण अप्पाण 10
भावेमाणी विहरइ ॥

१ तेण कालेण तेण समणण गोसाले मखलिपुत्ते चउब्बीसरास-
परियाए हालाहलाए कुमकारीए कुमकरावणसि आजीवियसथ-
सपरिवुड आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ । तए ण तस्स
गोसालस्स मखलिपुत्तरस्स अन्नया कयाइ इमे छ विमायरा अतिय 15
पाउडमवित्था । त जहा-१ साणे, १ कलदे, १ कण्णिपारे, ४ अच्छिदे,
५ अग्निपेसायणे, ६ अज्जुणे गोमायुपुत्ते । तए एण ते छ विमायरा
अट्ठिणिह पुच्चगय भगवसम सण्हि १ भइदसणेहि निज्जुहति, २ ता
गोसाल मखलिपुत्त उवट्ठाइसु । तए ण से गोसाले मखलिपुत्त तेण
अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उलोयमेत्तेण सत्थेसि पाणाण सत्थेसि 20
भूयाण सत्थेसि जीणाण सत्थेसि सत्ताण इमाइ छ अणइक्कमाणेज्जाइ
वागरणाइ वागरेइ । त जहा-१ लाम, १ अलाम १ सुह ४ इक्ख

५ जीविय ६ मरणं तदा । तए ण मे गोसाले मखलिपुत्ते तेण
अट्ठमस्स मत्तानिमित्तस्स केणइ उलोयमेत्तेण सावत्थीए नयरीए
अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली कवलप्पलावी,
असंखू सयसुप्पलावी अजिण जिणसद्ध पगासेमाणे विहरइ ॥
(सू० ५३९)

३ तए ण सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव पेटेसु बहुजणो
अन्नमज्जस्स एवमाइक्खइ, जाव एव पस्सेइ—‘एव खलु देवाणुप्पिया,
गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे विहरइ, से
कहमेय मजे एव ॥’ । तए कालेण तए समणं सामी समासद्ध, जाव
१० परिता पडिगया । तेण कालेण तेण समणं समणस्स भगवआ
महावीरस्स जट्ठे अन्तेवासी इवभूइ नाम अणगारे गोशमणोत्तेण जाव
उट्ठउट्ठेण एवं वहा विवक्ख निवेडुइए जाव अट्ठमाणे बहुजणसद्ध
निसामेइ, बहुजणो अन्नमज्जस्स एवमाइक्खइ ४—‘एव खलु
देवाणुप्पिया, गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे
१५ विहरइ, से कहमेय मजे एव ॥’ ।

४ तए ण भगव गोयमे बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोज्जा निसम्म
जाव जायसद्धे जाव भत्तपार्णं पडिइसइ, जाव पज्जुवासमाणे एव
वयासी—‘एव खलु अह भत्ते, छट्ठ त चव जाव जिणसद्ध पगामेमाणे
विहरइ, से कहमेय भत्ते, एव ॥’ । त इच्छामि ण भत्ते गोसालस्स
२० मखलिपुत्तस्स उट्ठाणपरियाणिय परिकट्ठिय । ‘गोयमा’ इ समणे भगव
महावीरे भगव गोयम एव वयासी—‘ज ण गोयमा से बहुजणे अन्न
मज्जस्स एवमाइक्खइ ४— एव खलु गोसाले मखलिपुत्ते जिणे
जिणप्पलावी जाव पगामेमाणे विहरइ त ण मिच्छा । अह पुण
गोयमा, एवमाइक्खामि जाव पस्सामि—‘एव खलु एयस्स गोसालस्स
२५ मखलिपुत्तस्स मखलिनाम मख पिआ होत्था । तस्स ण मखलिस्स
मखस्स महा नाम भारिया हात्था, सुकुमाल जाव पडिइया । तए

ण सा भद्रा भारिया अन्नया कयाइ गुविणी यावि होत्था । तेण
 कालेण तेण समएण सरवणे नाम सनिवेसे होत्था, रिद्धत्थिमिय
 जाव मन्निभय्गसे वासादीए ४ । तत्थ ण सरवणे संनिवेसे
 गोवहुले नाम माहणे परिवसइ, अट्ठे जाव अपरिमूए, रिउन्वेय नाव
 सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तस्स ण गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला 5
 यावि होत्था । तए ण से मैखली मखे अन्नया कयाइ भद्राए भारियाए
 गुविणीए सद्धि चित्तफलगहत्थयए मत्तत्तणेण अप्पाण भावेमाणे
 पुट्ठाणुपुत्ति चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सनिवेसे
 जेणेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ ९ गोवहुलस्स
 माहणस्स गोसालाए एगदेससि भवनिक्खेय करेइ, ९ सरवणे 10
 सनिवेसे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुद्धानस्स भिक्खायरियाए
 अट्ठमाणे वसहीए सध्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ, मग्गणगवेसण
 करमाणे तस्सेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि
 वासावासं उवागए ॥

५ तए ण सा भद्रा भारिया नण्ह मासाण धहुपडिपुण्णाण 15
 अट्ठट्ठमाण राइदियाण धीइक्कताण सुकुमाल जाव पडिक्खयग दारग
 पयाया । तए ण तस्स दारगस्स अम्मावियरो पक्कारसमे दिवसे
 धीइक्कते जाव बारसाहे दिवसे अयमेयाह्व गोण गुणनिष्फन्न नाम
 धेज्ज करति— जम्हा ण अट्ठ इमे दारए गोवहुलस्स माहणस्स
 गोसालाए जाए त हीउ ण अट्ठ इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 20
 'गोसाले', 'गोसाले' ति । तए ण तस्स दारगस्स अम्मावियरो
 नामधेज्ज करति 'गोसाले' ति । तए ण से गोसाले दारए
 उम्मुक्कवालभावे त्रिण्णायपरिणयमेत्ते जो-पणगमणुप्पत्ते सयमेव
 पाडिपक्क चित्तफलग करेइ ९ चित्तफलगहत्थयए मत्तत्तणेण अप्पाण
 भावेमाणे विहरइ ॥ (सू० ५४०)

६ तेण कालेण तेण समएण अहं गोयमा, तीस वासाइ अगार-
 वासमज्जे वसित्ता अम्मापिहि देवत्तगणहि एवे बद्धा भावभाए पाव
 एग दयदूसमादाय मुढे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पवइत्तए ।
 तए ण अहं गोयमा, पढम वास अद्धमासअद्धमासण खममाणे
 5 अट्टियगाम निस्साए पढम अतरावास वासावास उवागए । दोअ
 वास मासमासेण खममाणे पुट्याणुपुट्टिय चरमाणे गामाणुगाम
 दूइउजमाणे जेणेय रायगिहे नयरे, जेणेय नाल्दा बाहिरिया, जेणेय
 तंतुवायसाला, तेणेय उवागच्छामि, अराणटिन्ध उमह अंगिण्टामि,
 * तंतुवायसालाए एगदेससि वासावास उवागए । तए ण अहं
 10 गोयमा, पढम मासखण उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥

७ तए ण से गोसाल मखलिपुत्ते चित्तफलगत्यगए
 मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुट्याणुपुट्टिय चरमाण जाव
 दूइउजमाणे जेणेय रायगिहे नयरे, जेणेय नाल्दा बाहिरिया,
 जेणेय तंतुवायसाला तेणेय उवागच्छइ, * तंतुवायसालाए
 15 एगदेससि भडनिकवेव करेइ, * रायगिह नयरे उज्जनीय जाव अज्जत्थ
 कत्थ वि वसहि अलममाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेससि वास-
 वास उवागए, जत्थेय ण अहं गोयमा । तए ण अहं गोयमा, पढममास-
 वखमणपारणमसि तंतुवायसालाओ पडिनिकरमामि, * नाल्दा-
 बाहिरिय मज्झमज्जेण जेणेय रायगिह नयरे तेणेय उवागच्छामि
 20 * रायगिहे नयरे उज्जनीय जाव अद्धमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिह
 अणुपविट्ठे । तए ण से विजए गाहावइ मम एज्जमाण पासइ,
 * ता इट्ठुट्ठु^० सिप्पामेव आसणाओ अभुट्ठु, * पायपीटाओ पच्चोहइ,
 * पाउयाआ ओमुयइ, * एगसाटिय उत्तरासग करेइ, * अजलि-
 मउलियहाये मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, * मम तिकवुत्तो
 5 आयाहिणपयाहिण करेइ, * मम वइइ नमसइ, * मम चिउलेण

असणमाणत्वाइमसाइमण पडिलाभेस्सामिं त्ति कट्ठु तुट्ठ, पडिलाभेमाणे
 रि तुट्ठे, पडिलाभिणं वि तुट्ठे । तए ण तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेण
 व उमुद्धणं दायगमुद्धेण पडिगाहगमुद्धेण तिगिहेण तिकरणमुद्धेण
 दाणण मए पडिलाभिणं समाणे देवाउए निवद्ध, ससारं पारितीकए,
 गिहसिं य से दमाइ पंच दिग्गाइ पाउभूयाइ, त जहा-१ वसुधारा बुद्धा, 5
 २ वसद्धरणे कुसुमे निवाइए, ३ चक्रुक्खेरे कए, ४ आहयाआ देव
 इड्ढीआ ५ अतरा वियण आगासे 'अहा दाणे दाणे' त्ति घुट्ठे । तए ण
 रायगिहे नगरे सिंघाडगं ताव पहेसु बहुजणो अममस्स एउमाइक्खइ
 ४, धने ण देवाणुप्पिया, विजए गाहावइ, कयत्थे ण देवाणुप्पिया
 विजए गाहावइ, कयएण्णे ण देवाणुप्पिया विजए गाहावइ, कय 10
 लक्खणे ण देवाणुप्पिया, विजए गाहावइ, कया ण लीया देवाणुप्पिया,
 विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया, माणुस्सए जम्म-
 जीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसिं तहाक्खे साहु
 साहुक्खे पडिलाभिणं समाणे इमाइ पंच दिग्गाइ पाउभूयाइ, त जहा-
 १ वसुधारा बुद्धा, ताव 'अहो दाणे दाणे' त्ति घुट्ठे । त धने कयत्थे 15
 कयएण्णे कयलक्खणे, कया ण लीया, सुलद्धे माणुस्सए जम्म-
 जीवियफले विजयस्स गाहावइस्स ॥

८ तए ण स गोसाले मत्तलितुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ
 सौञ्चा नितम्म समुप्पदससए समुप्पन्नकोउहहे जेणेए विजयस्स
 गाहावइस्स गिहे तेणेए उरागच्छइ, १ सा पासइ विजयस्स 20
 गाहावइस्स गिहसिं वसुधारा बुद्ध, वसद्धरणे कुसुमे निवाडिय, मम
 च ण विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडितिकवममाण पासइ,
 २ सा एट्ठुट्ठे जेणेए मन अतिए तेणेए उरागच्छइ, २ सा मम
 तिक्खुतो आयादिगणयाहिणं करेइ, २ सा मम वइइ नमसइ,
 ३ सा मम एव वयासो- 'तुज्जे ण भने, मम धम्मावरिया', अह ण 25

- तुज्झ भग्मतवासी । तए ण अह गोयमा, गोसालस्स मखलिपुत्तस्स
 पयमट्ठ नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए सच्चिट्ठामि । तए ण
 अह गोयमा, रायगिट्ठाओ नयराओ पडिनिवसमामि, १ ता नालद
 बाहिरिय मज्झमज्झेण जेणेउ ततुवायसाला, तेणव उवागच्छामि
 5 १ ता दोच्च मासवस्समण उवसपज्जित्ताण विहरामि । तए
 ण अह गोयमा, दोच्च मासवस्समणपारणगसि ततुवायसालाओ
 पडिनिवसमामि, १ नालद बाहिरिय मज्झमज्झेण जेणेउ रायगिट्ठे नयरे
 नाव अढमाणे आणन्दस्स गिट्ठ अणुप्पविट्ठे । तए ण से आणवे
 गाहायई मम एज्जमाण पासइ, एवं एव विवरदण नवरं मम त्रित्थण
 10 खज्जगविट्ठिए पडिलाभेस्सामि सि तुट्ठे, सेव तं चव नाव तच्च
 मासवस्समण उवसपज्जित्ताण विहरामि । तए ण अह गोयमा, तच्च
 मासवस्समणपारणगसि ततुवायसालाओ पडिनिवसमामि, १ तदेव
 नाव अढमाणे सुणदस्स गाहायस्स गिट्ठ अणुप्पविट्ठे । तए ण से
 सुणदगाहायई, एव जहेव विवरदणं नवरं मम सट्ठकाममुणिण्ण
 15 भौयणेण पडिलाभेइ, सेव तं चव नाव चउत्थ मासवस्समणं
 उवसपज्जित्ताण विहरामि । तीसे ण नालदाए बाहिरियाए अदूरसाम्भते
 पाथ ण कोहाए नाम सनिवेसे होत्था वण्णओ । तत्थ ण कोहाए
 सनिवेसे बहुले नाम माहणे परिवसइ अट्ठे नाव अपरिभूए, रिउ दय
 नाव सुपरिनिट्ठिए बायि होत्था । तए ण से बहुले माहणे
 20 कत्तियचाउम्मासियपाडिवगसि विउत्तेण महुच्चसज्जुत्तेण परमक्खेण
 माहणे आयामेत्या । तए ण अह गोयमा, चउत्थमासवस्समणपारणगसि
 ततुवायसालाओ पडिनिवसमामि १ नालद बाहिरिय मज्झमज्झेण
 निगच्छामि २ जेणेव कोहाए सनिवेसे तेणव उवागच्छामि कोहाए
 सनिवेसे उच्चनीय नाव अढमाणे बहुलस्स माहणस्स गिट्ठ
 25 अणुप्पविट्ठे । तए ण से बहुले माहणे मम एज्जमाण, तदेव नाव,

मम विउलेण बहुधयसजुत्तेण परमघेण पडिहामेऱसामि त्ति तट्टे ।
सहं नहा विउयस्म ॥

९ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम ततुवायसालाए अपासमाणे
रायगिहे नयरे सद्धिभतरवाहिरियाए मम सच्चओ समता भगणगवेसण
करेइ, मम कत्थ धि सुइ वा सुइ वा पयार्त्ति वा अलभमाणे जेणेय 5
ततुवायसाला तेणेउ उवागच्छइ, १ साडियाओ य पाडियाओ य
कुडियाओ य घाटणाओ य चित्तफलाय च माहणे आयामेइ,
१ सउत्तरोद्ध सुब करेइ, १ ततुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, १ नालद
वाहिरिय मज्झमज्झाण निगच्छइ, १ जेणेउ कोट्ठागसनिवेसे तेणेव
उवागच्छइ । तए ण तस्स कोट्ठागस्स सनिवेसस्स वाहिया बहुजणो 10
अन्नमज्जस्स एवमाइक्खइ ४—‘घसे णं देवाणुप्पिया, बहुले माहणे
त चैव जाव, जीघियफले बहुलस्स माहणस्स । तए ण तस्स गोसालस्स
मखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अतिय पयमट्ट सोच्चा निसम्म अयमेयात्थे
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—‘जारीसिया ॥ मम धम्मायरियस्स
धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इह्मी जुत्ती जसे बल 15
धीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागण, मो ररलु अत्थि
तारिसिया ण अन्नस्स कस्सइ तहात्थस्स समणस्स वा माहणस्स वा
इह्मी जुत्ती जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागण, त निस्सदिद्ध च
ण एत्थ मम धम्मायरिए धम्मोवदेसण समणे भगव महावीरे भविस्सइ
त्ति कट्ठु कोट्ठागसनिवेसे सद्धिभतरवाहिरिए मम सच्चओ समता 20
भगणगवेसण करेइ, मम सच्चओ जाव करेमाणे कोट्ठागसनिवसस्स
वाहिया पणियभूमीए मए सद्धि अभिसमन्नागण । तए ण से गोसाले
मखलिपुत्ते इट्ठुत्तु मम तिक्कपुत्तो आयाहिण पयाहिण जाव नमसित्ता
एव वयासी—‘तुम्हे ण भत्त मम धम्मायरिया, अह ण तुज्झ अतेयासी’ ।
तए ण अह गोयमा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स पयमट्ट पडिस्सुणेमि । 25

तए ण अह गोयमा, गोसालेण मग्गलिपुत्तेण सन्धि पाणियभूमीए
छासाइ लाम अलाम सुख दुक्ख सक्कारमसक्कार पच्चणुभवमाणे
अणिच्चजागरिय विहरित्था ॥ (सू० ५४१)

- १० तए ण अह गायमा, अबया कयाइ पढममरयकालसमयासे
अप्यनुट्टिकायसि गोसालेण मग्गलिपुत्तेण सन्धि सिद्धत्थगामाओ
नयरओ पुम्मगाम नयर मपट्ठिण विहराय । तस्स ण सिद्धत्थगामस्स
नयरस्स कुम्मगामस्स नयरस्स य अतरा पय्य ण मट एगे तिलथमए
पत्तिए पुप्फिए हरियमरेरेज्जमाणे सिरीए अईउ उयसोभेमाणे २ बिट्ठइ ।
तए ण से गोसाले मग्गलिपुत्ते त तिलथमए पासइ, ० ता मम वडई
नमसइ, २ ता नमसित्ता एउ वयासी-‘एस ण मने, निलथमए किं
निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ ? एण य सत्त तिलपुप्फजीवा
उवाइत्ता ० कहिं गच्छिहिंति, कहिं उयज्जिहिंति ?’ तए ण अह
गोयमा, गोसाल मग्गलिपुत्त एउ वयासी-‘गोसाला, एस ण तिलथमए
निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ, एण य सत्त तिलपुप्फजीवा
उवाइत्ता ० एयस्स चेव तिलथमगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त
तिला पच्चायाइस्सति ।’ तए ण से गोसाल मग्गलिपुत्ते मम एव
आइक्खमाणस्स एयमट्ठ नो सइहइ, नो पत्तियइ, नो रोप्पइ, एयमट्ठ
असइहमाणे अपत्तियमाणे नरोप्पमाणे मम पणिहाए ‘अय ण
मिच्छायावी भवउ’ ति कट्ठु मम अतियाओ साणेय २ पच्चोसक्कइ,
२० २ ता जेणव से तिलथमए तेणेव उवागच्छइ, ० त तिलथमए
सलेट्ठुयाय चेउ उप्पाहेइ, २ ता एमन एहेइ । तक्खणमत्त च ण
गायमा, दिव्ये अभयइलए पाउभूए । तए ण मे दि व अट्ठमवइलए
विप्पामेव पतणतणाण्ड, सिप्पामेउ परिज्जुयाइ, सिप्पामेउ नच्चोदग
नाइमट्ठिय परिउलएकुसिय रयरेणुविणासण दिउ सलिलादग वास
२५ वासइ, जेण से तिलथमए आसत्थ पच्चायाए, तत्थेउ वद्धमूले, तत्थेउ

पशद्विष्ट । ते य मत्त तिलपुष्करजीवा उदाइत्ता ० तम्सय तिलथमगस्स
एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥ (सू० ५४०)

११ तए ण अह गायमा गोसालेण मग्वलिपुत्तेण सद्धिं जेणेय
कुम्मगामे नयरे तणेय उपाग*उामि । तए ण तस्स कुम्मगामस्स
नयरस्स बहिया वेसियायण नाम बालतवस्सी छट्ठउट्टेण ५
आणकिवत्तण तगाक्कमेण उट्ठु बाहाओ पणिज्जिय ० सूरामिमुहे
आयाणभूमीए आयाणमाणे निहरइ । आदच्चतेयतायिआओ य से छप्प-
दीआ स*त्रआ समता अभिनेस्सयति, पाणभूयजीउसत्तद्वयद्वयाए च ण
पडियाआ ० तथयभुज्जो ० पच्चोरुमइ । तए ण स गासाल मग्वलिपुत्ते
वेसियायण बालतवस्सि पासइ, २ ता मम अतियाओ सणिय १ 10
पच्चोसक्कइ, ० सा जणेय वेमियायणे बालतवस्सी तणय उपागच्छइ,
० वेसियायण बालतवस्सि एय वयासी—‘ किं भय मुणी, मुणिण,
उदाट्टु जूयासेज्जायरए ’ । तए ण से वेमियायणे बालतवस्सी गोसालस्स
मग्वलिपुत्तस्स एयमट्ठु नो आट्ठाइ नो परियाणइ, तुमिणीए सच्चिद्वइ ।
तए ण से गासाले मग्वलिपुत्ते वेसियायण बालतवस्सि दोच्च पि 15
तच्च पि एय वयासी—‘ किं भय मुणी, मुणिण, जाय सेज्जायरए ’ । तए
ण ॥ वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेण मग्वलिपुत्तेण दोच्च पि तच्च
पि एय वुत्त समाणे आमुसुत्ते जाव मिसिमिसेमाण आयाणभूमीओ
पच्चोरुहइ ० तेयासमुग्घाएण समोहवइ, ० सत्तट्ठपयाइ पच्चोसक्कइ,
० गोसालस्स मग्वलिपुत्तस्स उहाए सरीरगस्सि तेय निसिइइ । 20
तए ण अह गायमा, गोसालस्स मग्वलिपुत्तस्स अणुकपणद्वयाए
वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स तेयपडिस्ताहरणद्वयाए एत्थ ण
अतरा अह सीयलिय तयलस्स निसिरामि, जाण सा मम सीयलियाए
तेरलेस्साए वेसियायणम्म बालतवस्सिस्स मा जसिणा तेयलेस्सा
पडिहया । तए ण से वेमियायण बालतवस्सी मम सीयलियाए 25

- तेयलेस्साए सीओसिण तेयलेस्स पडिह्य जाणिता गोसालस्स
 मरालिपुत्तरस्स सरिगस्स किंचि आवाह वा वावाह वा छविच्छय
 वा अकीरमाण पासित्ता सीओसिण तेयलम्म पडिहाहरइ, १ मम एव
 ययासी- 'से गयमेय भगव, से गयमेय भगव' । तए ण गोसालं
 5 मरालिपुत्ते मम एव ययासी- किं ण भते, एस्स जूयासेज्जायरए तुम्हे
 एव ययासी- 'से गयमेय भगव, से गयमेय भगव' । तए ण अह
 गोयमा गोसाल मरालिपुत्त एव ययासी- 'तुम ण गोसाला
 वेसियायण बालतवस्सि पाससि, १ ता मम अतियाओ सणिय
 १ पञ्चोत्तकसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उयागच्छसि,
 10 वेसियायण बालतवस्सि एव ययामी- 'किं भव सुणी, सुणिण, उदाहु
 जूयासेज्जायरए !' तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ट
 नो आवाह नो परिजाणइ, तुसिणीए सविट्ठइ । तए ण तुम गोसाला,
 वेसियायण बालतवस्सि वेच्च पि तच्च पि एव ययासी- 'किं भव
 सुणी, सुणिण, जव सेज्जायरए !' तए ण से वेसियायणे बाल-
 15 तवस्सी तुम वेच्च पि तच्च पि एव बुत्ते समाने आसुवत्ते पाव पञ्चो-
 त्तकइ, १ ता तव यटाए सरिगसि तेयलेस्स निस्सिरइ । तए ण अह
 गोसाला तव अणुकपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिम्म
 सीयतेयलेस्सापडिहाहरणट्ठयाए पत्थ ण अतरा सीयलिय तेयलेस्स
 निस्सिरामि, जव पडिह्य जाणिता तज थ सरिगस्स किंचि आवाह
 20 वा वावाह वा छविच्छेय वा अकीरमाण पासित्ता सीओसिण तेयलेस्स
 पडिहाहरइ मम एव ययासी- 'से गयमेय भगव, से गयमेय भगव ।
 तए ण से गोसालं मरालिपुत्ते मम अतियाओ एयमट्ट मोच्चा निसम्म
 भीए ज व सजायमए मम वदइ नमसइ, १ ता एव ययासी- 'कह ण
 भते, सवित्तविउल्लतयलेस्से भवइ !' तए ण अह गोयमा, गोसालं

मत्तलिपुत्त एव ययासी- 'जे ण गोसाला, एगाए सणहाए कुम्मास-
पिडियाए एगेण य वियडासएण छट्टउट्टण अणिविखत्तेण तवोक्कमेण
उट्ट घाहाओ पणिज्झिय १ जाव विहरइ स ण अतो छण्हं मामाण
सवित्तत्रिउल्लेयलेभ्भे भवइ । तण ण से गोसाले मत्तलिपुत्ते मम
एयमट्ट सम्म त्रिणएण पडिसुणइ ॥ (सू० ५४३)

3

१० तण ण अह गायमा अक्षया कयाइ गोसालेणं मत्तलि-
पुत्तेण सद्धिं कुम्मगामाओ नयराणो सिद्धत्थगाम नयर
सपट्टिप विहराप, जाहे य मो त वेस हट्टमागया, जत्थ ण से
तिलथमए । तण ण से गोसाले मत्तलिपुत्ते मम एव ययासी-
'हुम्मे ण भत, तया मम एव आइक्खह जाव पट्ठह- 10
गोसाला एस थ तिलथमए निप्फज्जिरसइ, नो न निप्फज्जिरसइ,
तं एव जाव पञ्चायाइससि, 'त ण मिच्छा । इअ ख ण पच्छक्खमेउ
ईसइ- 'एस ण से तिलथमए नो निप्फजे, अनिप्फज्जमेउ ते य
सत्त तिलपुप्फजीवा उदात्ता १ नो एयस्म चेउ तिलथमगस्स एगाए
तिलसगलियाए सत्त तिला पञ्चायाया । तण ण अह गीयमा, गोसालं 15
मत्तलिपुत्त एव ययासी- तुम ण गोसाला, तया मम एव आइक्ख-
माणस्म जाव पट्ठमाणस्स एयमट्ट नो सइहमि, मो पत्तियमि, ना
रोपमि, एयमट्ट अमइहमाण अपत्तियमाणे अरोपमाणे मम पणिहाए
'अय ण मिच्छावादी भवउ' ति कट्ठु मम अतियाओ साणिय २
पञ्चोसक्खसि, १ ता जेणेउ से तिलथमए तेणेव उवागच्छसि जाव 20
एगतमते एवेसि । तक्खणमेस गोसाला, दिव्वे अ-भयइएण पाउसूए ।
तण ण से दिव्वे अ-भयइएण खिप्पामेव त थव जाव तस्स चेउ
तिलथमगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पञ्चायाया । त एस
ण गोसाला, से तिलथमए निप्फजे, नो अनिप्फज्जमेव । ते य सत्त
तिलपुप्फजीवा उदात्ता १ एयस्स चेव तिलथमगस्स एगाए 25

तिलसगलियाण सत्त तिला पन्चायाया । ए॒र खलु गोसाला, यणस्मद-
काइया पउट्टपरिहारं परिहरति । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम
ए॒रमाइवपमाणस्स जाव पए॒रमाणस्स ए॒यमट्ठ नी सदह॒र ३, ए॒यमट्ठ
असदह॒माणे जाव अरा॒पमाणे जेणे॒र से तिलयमए तेणे॒र उवाग॒उइ,
५ ताओ तिलयमयाओ त तिलसगलिय सुहुइ, २ ता करयलसि सत्त
तिले पप्फोदेइ । तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स ते मस तिने
गणमाणस्स अयमेयास्वे अउ॒त्तियए जाव समु॒पज्जि॒त्था-‘ए॒य खलु
स॒उत्ती॒या त्रि पउट्टपरिहारं परिहरति ।’ ए॒स ण गोय॒मा, गोसालस्स
मखलिपुत्तस्स पउट्टे ए॒स ण गोय॒मा, गोसालस्स मखलिपुत्तस्स मम
१० अ॒तियाओ आयाण अ॒ग्रक्रमेण पण॑न्ते ॥ (सू० ५४४)

१३ तए ण स गोसाले मखलिपुत्ते ण्णाए स गहाण कुम्मासपिडियाए
२ ए॒गण च त्रि॒यहास॒एण उट्ठ॒उट्ठेण अणि॒क्खि॒त्तेण तया॒क्रमेण उट्ठ
वाहाओ पणि॒ज्जि॒त्थ २ जाव विहरइ । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते
अतो ए॒ण्ह भा॒साण स॒खिउ॒त्तिउ॒त्तेवले॒से जा॒ए ॥ (सू० ५४५)

१५ १४ तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अन्नया कयाइ इमं
उ॒ त्रि॒सा॒वरा अ॒तिय पाउ॒म्भवि॒त्था । त जहा १ साणे त जाव स॒व
जाव अजिणे जिणसइ पगासेमाणे विहरइ । त मा खलु गोय॒मा,
गोसाले मखलिपुत्ते जिणे, जिण॒प॒प॒लायी जाव जिणसइ पगासेमाणे
विहरइ । गोसाल ण मखलिपुत्ते अजिणे, जिण॒प॒प॒लायी जाव पगासे-
२० माणे विहरइ । तए ण सा भहइमहात्था भहवपरिस्ता गहा सिने
(भग० ३ ११) जाव पडिगया । तए ण सावर्थाए नयरोए सिंघाडग
जाव व॒ज्जणो अ॒न्नम॒न्नस्स जाव प॒रुवेइ-‘ज ण दे॒वाणु॒पिया,
गोसाले मखलिपुत्त जिणे जिण॒प॒प॒लायी जाव विहरइ तं
मि॒न्ता । सम॑णे मम॒र म॒लायीरे ए॒व आ॒इक्खइ जाव प॒रुवेइ । ए॒व
०८ खलु तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स मखली नाम मरे पिया होत्था ।

तए ण तस्स मखालस्स, एव तं चव सव्वं भण्णिव जाव अजिणे
जिणसद्ध पगासेमाणे विहरइ, त भो खलु गोसाले मखालिपुत्ते जिण,
जिणप्पलावी जाव विहरइ । गोसाले मखालिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी
जाव विहरइ । समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव
जिणसद्ध पगासेमाणे विहरइ । तए ण से गोसाले मखालिपुत्त 5
बहुजणस्स अतिथ एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव
मिसिम्मिसमाणे आयावणभूमीओ पच्छोरुइ, १ साययिं नययिं
मज्झमज्झेण जेणे हाहाहलाए कुमकारीए कुमकारावणे तणव
उवागच्छइ २ हाहाहलाए कुमकारीए कुमकारावणसि आजीविद्यसध-
सपरिबुडे मट्ठया अमारिस्स वट्ठमाणे एव यायि विहरइ ॥ (सू० ५४२) 10

१५ तेण कालेण तेण समणेण समणस्स भगवओ महारारिस्स
अत्तेवासी आणदे नामं येरे पगमइए जाव विणीए छट्ठछट्ठेण
अणिक्कियत्तेण तथोक्कमेण सजमेण तवत्ता अप्पाण भायेमाणे विहरइ ।
तए ण से आणदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगसि पट्ठमाए पोरिसीए, एव
१६ जा गवमयामी तहेण आपुच्छइ, तहेव जाव उच्चर्नायमाज्झिम जाव 15
अट्ठमाणे हाहाहलाए कुमकारीए कुमकारावणस्स अदूरसामते
वीडवयइ । तए ण से गोसाले मखालिपुत्ते आणद येर हाहाहलाए
कुमकारीए कुमकारावणस्स अदूरसामतेण वीडवयमाण पासइ, २ सा
एव वयासी-‘एहि ताव आणदा, इओ एम मह उअमिय निसामेहि ।’
तए ण स आणदे थेरे गोसालेण मखालिपुत्तेण एव बुत्ते समाणे जेण 20
हाहाहलाए कुमकारीए कुमकारावणे, जेणे गोसाले मखालिपुत्ते तेणेव
उवागच्छइ । तए ण से गोसाले मखालिपुत्ते आणद येर एव वयासी-
“एअ खलु आणदा इओ चिराईयाए अट्ठाए वेइ उच्चावया वणिथा
अत्थत्थी अयगयेसी अत्थकसिया अत्थविगासा अत्थगयेसणयाए
नाणाविहविउल्लपणियमवमायाए सगडीसागडेण सुवहुं भत्तपाण 25

- पथ्ययण गदाय एम मह अगामिय अणाहिय डिभागाय दीहमद्ध
 अह्विं अणुप्पादिद्वा । तए ण तस्मिं वणिग्याण तीसे अगामियाए जाव
 दीहमद्धाए अह्वीए किंचि देस अणुप्पत्ताण समाणाण से पुच्चगहिए
 उदए अणुपुब्बेण परिभुजेमाणे परिभुजेमाणे गीणे । तए ण ते वणिग्या
 5 खीणोदगा समाणा तण्हाए परिभजमाणे अन्नमन्ने सहावति, १ एव
 वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया, अह्म इमीन्ने अगामियाए जाव अह्वीए
 किंचि देस अणुप्पत्ताण समाणाण से पुच्चगहिए उदए परिभुजेमाणे
 खीणे, २ सेय खलु देवाणुप्पिया, अह्म इमीस्स अगामियाए जाव
 अह्वीए उदमस्स सज्यओ समता मग्गणग्रेसण करेत्तए । त्ति कट्ठु
 10 अन्नमन्नस्स अतिए एयमट्ठ पडिस्सुणति, १ तीसे ॥ अगामियाए जाव
 अह्वीए उदमस्स सज्यओ समता मग्गणमवेसण करति, उदमस्स
 सज्यओ समता मग्गणग्रेसण करेमाणे एम मह वणसड आसादति
 किण्ह किण्होमास जाव निरुवभय पासादीय जाव पडिन्ध ।
 तस्स ण वणसडस्स बहुमज्झदेसमाए पथ्य ण महेग यम्मीय
 15 आसादिति । तस्स ण यम्मीयस्स चत्तारि वप्पुओ अट्ठभुगयाओ
 अभिनिसडाओ तिरिय सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ,
 पन्नगद्धमन्त्राणसठियाओ पामादीयाओ जाव पडिरूयाओ । तए ण
 ते वणिग्या हट्ठुट्ठ अन्नमन्न सहावति, १ एव वयासी- 'एव खलु
 ववाणुप्पिया, अह्मे इमीसे अगामियाए जाव सज्यओ समता मग्गण—
 20 गरसण करेमाणेहिं इमे वणसडे आसादिए, किण्हं किण्होमास ।
 इमस्स ण वणसडस्स बहुमज्झदेसमाणे इमे यम्मीए आसादिए,
 इमस्स ण यम्मीयस्स चत्तारि वप्पुओ अट्ठभुगयाओ जाव पडि-
 रूवाओ । त सेय खलु देवाणुप्पिया अह्म इमस्स पट्ठम वप्पिं
 भिदित्तए, अविद्या ओराले उदगरयण अस्सादेस्सामो । तए ण ते
 १ अन्नमन्नस्स अतिए एयमट्ठ पडिस्सुणति, १ तस्स यम्मीयस्स

पद्मं यप्प मिद्विती। तं ण तत्थ अच्छं पत्थ जच्च तण्णय फालिय-
 यण्णाभ ओराल उदगरयण आसाद्विती। तप ण ते यणिया हट्ठतुट्ठ
 पाणिय पिबन्ति, १ वाहणाइ पज्जन्ति, २ भायणाइ भरति, भरेत्ता दोच्च
 पि अन्नमन्न एव ययासी- एव खलु देवाणुप्पिया, अम्हे इमस्स
 यम्मीयस्स पद्माए वप्पाए मिस्साए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, त
 सेय खलु देवाणुप्पिया, अम्ह इमस्स यम्मीयस्स दोच्च पि यप्प
 मिद्वितीप, अविद्याइ एत्थ ओरालं सुजणरयण आमादेस्सामो ।। तप
 ण ते यणिया अन्नमन्नस्स अतिथ एयमट्ठ पडिस्सुणाति, १ तस्स
 यम्मीयस्स दोच्च पि यप्प मिद्विती। ते ण तत्थ अच्छं उच्च ताघणिज्ज
 महत्थ महग्घ महरिह ओराल सुवणरयण अस्साद्विती। तप ण ते 10
 यणिया हट्ठतुट्ठ भायणाइ भरति, पट्टणाइ भरति १ सा तच्च
 पि अन्नमन्न एव ययासी- 'एव खलु देवाणुप्पिया, अम्हे इमस्स
 यम्मीयस्स पद्माए वप्पाए मिस्साए ओराले उदगरयणे आसादिए,
 दोच्चाए वप्पाए मिस्साए ओराल सुजणरयणे अस्सादिए, त सेय खलु
 देवाणुप्पिया, अम्ह इमस्स यम्मीयस्स तच्च पि यप्प मिद्वितीप । अवि 15
 यारं एत्थ ओराल मणिरयण अस्सादेस्सामो ।। तप ण ते यणिया
 अन्नमन्नस्स अतिथ एयमट्ठ पडिस्सुणाति, १ तस्स यम्मीयस्स तच्च पि
 यप्प मिद्विती।। ण तत्थ रिमल निम्मल नित्तल निक्कल महत्थ
 महग्घ महरिह ओराल मणिरयण अस्साद्विती। तप ण ते यणिया
 हट्ठतुट्ठ भायणाइ भरति, १ सा चउत्थ पि अन्नमन्न एव ययासी- 20
 'एव खलु देवाणुप्पिया, अम्हे इमस्स पद्माए वप्पाए मिस्साए ओराल
 उदगरयणे अस्सादिए दोच्चाए वप्पाए मिस्साए ओराले सुवणरयणे
 अस्सादिए, तच्चाए वप्पाए मिस्साए ओराले मणिरयणे अस्सादिए,
 त सेय खलु देवाणुप्पिया, अम्ह इमस्स यम्मीयस्स चउत्थ पि यप्प
 मिद्वितीप, अविद्याइ उत्तम महग्घ महरिह ओराल-वहरयण 25

- अस्सादेस्सामो । तण ण तेसिं वणिगाण एगे वणिण हियकामण,
सुहकामण, पत्थकामण, आणुक्कणिण, निस्सेसिण हियसुहनिस्सेस-
कामण ते वणिण एव वयासी- 'एव खलु देवाणुप्पिया, अम्ह इमस्स
यम्मीयस्स पट्ठमाण वप्पाए जाव तच्चाए वप्पाए भित्ताए ओराले
5 मणिरयणे अस्सादिण, त होउ अत्ताहि पञ्चत्त, एत्ता चउत्थी वप्पा
मा भिज्जउ, चउत्थी ण वप्पा सउवसणा यावि होत्था । तण ण ते
वणिगा तस्स वणियस्स हियकामगस्स जाव हियसुहनिस्सेस-
कामगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणरस्स एवमट्ठ नो सइहाति,
जाव नो रोपति, एवमट्ठ असइहमाणा जाव अरोणमाणा तस्स
10 यम्मीयस्स चउत्थ वि वप्प भिंदति । तं ण तत्थ उग्गाविस जाव
अणागल्लियच्चडित्ठिक्खरोस समुहिं तुरिय चवल धमत विट्ठीयिस सप्प
सघट्ठेति । तण ण से विट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिण्हिं सघट्ठिण समाणे
आसुवत्ते जाव मिसिभित्तेमाणे सणिय १ उट्ठेइ १ ता सरसरसरस्स
यम्मीयस्स सिहरतल इक्खेइ, १ आइच्च निज्झाइ, १ ते वणिण
15 अणिमिसाप विट्ठीए सव्वओ समता समभिलोप्पइ । तण ण ते वणिगा
तेण विट्ठीयिसेण सप्पेण अणिमिसाप विट्ठीए सव्वओ समता समभि-
लोइया समाणा खिप्पामेव समडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्च कूडाहच्च
भास्सरासीकया यावि होत्था । तत्थ ण जे से वणिण तेसिं वणिगाण
हियकामण जाव हियसुहनिस्सेसकामण से ण अणुकपयाए वेवयाए
20 समडमत्तोवगरणमायाए नियम नगर साहिण" । एवामेव आणदा, तव
वि धम्मायरिण्ण धम्मीवणसएण समणेण नायपुत्तेण ओराले परियाए
आसाइए, ओराला कित्तिवण्णसइसिलागा, सइवमणुयासुरे एए
पुव्वति गुवति धुवति इति खलु 'समगे भगव महावीरे, इति १' ।
त जइ मे से अब्ब किंचि वि वयइ, तो ण तवेण तेएण एगाहच्च
भास्सरासिं करोमे, जहा वा वालेण ते वणिगा । तुम च ण

आणदा, सारकरामि संगोवामि, जहा वा से वणिप तेसि वणिग्याण
हियकामण वाव निस्सेसकामण अणुकपयाण देवयाण समद वाव
साहिण। त गच्छ ण तुम आणदा, तत्र धम्मायरियस्स धम्मोपसगस्स
समणस्स नायपुत्तम्म एयमद्वं परिकहेहि ॥ तप ण से आणदे धेरे
गोसालेण मंखलिपुत्तेण एव वुत्ते समाणे भीण वाव सजायमण 5
गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अतियाओ हालाहलाए कुमकारीए
कुमकारायणाओ पडिनिक्खमइ, १ सिग्घं तुरिय सारत्थि नयरि
मज्झमज्झेण निगच्छइ, १ सा जेणेइ कोट्टण चेइण, जेणेइ समण
भगव महावीरे तेणेय उवागच्छइ १ समण भगव महावीर, निक्खुत्तो
आयाहिण पयाहिण करेइ १ सा यइ नमसइ, १ सा एव वयासी- 10
‘एव खलु अह भत, छट्ठकरमणपारणगसि तु मंदिं अटमणुच्चाए
समाणे सावत्थीए नयरिण उच्चनीव वाव अटमाणे हालाहलाए
कुमकारीए वाव यीइयामि। तप ण गोसाले मंखलिपुत्ते मम
हालाहलाए नाव पासिछा एव वयासी-‘एहि, ताव आणदा, इओ
एग मह उरमिय निस्सामेहि’। तप ण अह गोसालेण मंखलिपुत्तेण 15
एव वुत्ते समाण जेणेइ हालाहलाए कुमकारीए कुमकारायणे, जेणेय
गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेय उवागच्छामि। तप ण से गोसाले
मंखलिपुत्ते मम एव वयासी-‘एव खलु आणदा, इओ चिराईयाए
अच्छाए केइ उच्छाया वणिगा, एव त चव सव निरवसं भाणियं जाव
नियगनयर साहिण’। त गच्छ ण तुम आणदा, धम्मायरियस्स 20
धम्मोपसगस्स वाव परिकहेहि ॥ (सू० ५४७)

१६ त पमू ण भते, गोसाले मंखलिपुत्ते तवेण तेएण एगाहघ
कूडाहघ भासरसि करेत्तए। तिसए ण भते, गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स
जाव करेत्तए।-समथे ण भते, गोसाले जाव करेत्तए। पमू ण आणदा
गोसाले मंखलिपुत्ते तवेण जाव करेत्तए। तिसए ण

जाव करेत्तए । समत्थे ण आणदा गोसाले जाव करेत्तए, नो चेव ण अरहते भगवते परियावणिय पुण करेज्जा । जावइए ण आणदा, गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवतेए, एत्तो अणतगुणविसिद्धराए चेव तवतेए अणगाराण भगवताण, खतिखमा पुण अणगारा भगवतो ।

- 5 जावइए ॥ आणदा, अणगाराण भगवताण तवतेए, एत्तो अणतगुणविसिद्धराए चेव तवतेए थेराण भगवताण, खतिखमा पुण थेरा भगवतो । जावइए ण आणदा, थेराण भगवताण तवतेए एत्तो अणतगुणविसिद्धराए चेव तवतेए अरहताण भगवताण, खतिखमा पुण अरहता भगवतो । त पभू ण आणदा
- 10 गोसाले मखलिपुत्ते तथेण तेएण जाव करेत्तए दिसए ण आणदा, जाव करेत्तए, समत्थे ण आणदा, जाव करेत्तए नो चेव ण अरहते भगवते, परियावणिय पुण करेज्जा ॥ (सू० ५४८)

- १७ त गच्छ ण तुम आणदा, गोयमार्जेण समणाण निग्गयाण पयमट्ठं परिकहेहि—^१ मा ण अज्जी, तुव्वं केइ गोसाल मखलिपुत्त
- 18 धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ धम्मियाए पडिस्तारणाए पडिस्तारेउ, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले ण मखलिपुत्ते समणेहि निग्गयोहि मिच्छ विप्पडिवत्ते । तए ण से आणदे येरे समणेण भगवया महावीरेण एव तुत्ते समाणे समण भगव महावीर एवइ भमसइ, १ सा जेणेय गोयमाइसमणा निग्गया तेणेय उवागच्छइ १
- 20 गोयमाइसमणे निग्गये आमतेइ, १ सा एव वयासी—^२ एव खलु अज्जी, छट्ठंवरमणपारणगासि समणेण भगवया महावीरेण अट्ठमणुजाए समाणे सावत्थीए नयरीए उच्चनीयं तं चव सव जाव जायपुत्तस्स पयमट्ठं परिकहेहि, त मा अज्जी, तुव्वं केइ गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ न व मिच्छ विप्पडिवत्ते ॥ (सू० ५४९)

- 25 १८ जाव च ण आणदे थेरे गोयमार्जेण समणाण निग्गयाण

एयमट्टं परिकटेइ ताव च ण से गोसाले मंगलिपुत्ते हालाहलाण
 कुमकारीए कुमकारावणाओ पडिनिक्खमइ १ ता आजीवियसघ-
 सपरिघुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घ तुरिय नाव सार्वीय
 नयरीं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ २ ता जेणेव कोट्टए चेइए जेणेव
 समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ समणस्स भगवओ 5
 महावीरस्स अट्टरस्तामते छिच्छा समण भगव महावीर एव वयासी-
 ' सुट्ठ ण आउसो कासवा, भम एव वयासी, साहु ण आउसो कासवा,
 मम एव वयासी, गोसाले मत्तलिपुत्ते मम धम्मतेवासी १ । जे ण से
 मत्तलिपुत्ते तव धम्मतेवासी से ण सुक्के सुक्काभिजाइए भविता कालमासे
 फाल किच्छा अन्नयरेसु देवलोपसु देवत्ताए उववसे, अट्ट ण उवाइनाम 10
 छुट्टियायणाए, अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि
 १ गोसालस्स मत्तलिपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, १ इम सत्तम
 पट्टपरिहार परिहरामि । जे वि यावि आउसो कासवा, अम्ह
 समयसि केइ सिज्झति वा सिज्झिस्सति वा सज्जे ते चउरासीइ
 महाक्कप्पसयसहस्साइ सत्त विध्वे, सत्त सान्निगम्भे, सत्त पट्टपरिहारे, 15
 पच कम्माणि सयसट्ठाइ सट्ठि च सहस्साइ छच्च सए तिग्गि य
 कम्मसे अणुपुब्बेण खवदत्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति
 परिनिव्यापति सज्जदुक्खाणमत करेसु वा करेति वा करिस्सति वा ।
 से जहा वा गगा महानदी जओ पवूहा, जहि वा पज्जुयतिथया, एत
 ण अट्ठा पचजोयणसयाइ आयामेण, अट्ठजोयणं विक्खभेण, पच 20
 धणुसयाइ उच्चहेण, एएण मगापमाणेण सत्त गगाओ सा एगा महा
 गंगा, सत्त महागगाओ सा एगा सादीणगंगा, सत्त सादीणगंगाओ सा
 एगा मच्चुगगा, सत्त मच्चुगगाओ सा एगा लोहियगगा, सत्त लोहिय-
 गगाओ सा एगा आग्गीगगा, सत्त आवतीगगाओ सा एगा परमावती,
 एवामेव सपुट्ठावरेण एग गंगासयसहस्स सत्तर सहस्स छच्च 25

- गुणपञ्च गगास्तया भवतीतिमन्त्राया । तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते,
 त जहा-सुधुमवादिकलेवरे चंय, वायरवादिकलेवरे चंय । तत्थ ण
 जे से सुधुमवादिकलेवरे से ठप्पे । तत्थ ण ज से वायरवादिकलेवरे
 तथो ण धाससण १ गण २ एणमेग गगावालय अवहाय जावदण्णे
 5 कालेण से कोट्टस्सीणे नीरण निह्ववे निट्टिण भवइ से त सरे सरप्पमाण ।
 एण सरप्पमाणेण तिलि सरसयसाहस्सीओ से णो महाकप्प ।
 चउरासीइ महाकप्पसयसहस्साइ से एग महामाणसे । अणताभी
 सज्जुहाओ जीये चय चइत्ता उयरिल्ले माणसे सज्जुह देव उयवज्जइ १ ।
 से ण तत्थ दिग्गाइ भागभोगाइ भुजमाणे विहरइ, १ सा ताओ देव
 10 लोगाओ आउक्खण्ण ३ अणतर चय चइत्ता पदमे सान्निगमे जीये
 पच्चायाइ १ । से ण तओर्हितो अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे
 सज्जुहे देवे उयवज्जइ १ । से ण तत्थ दिग्वाइ भोगभोगाइ जाव विहारित्ता
 ताओ दवलोगाओ आउक्खण्ण ३ जाव चइत्ता, वाच्चे सान्निगमे जीये
 पच्चायाइ १ । से ण तओर्हितो अणतर उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे
 15 सज्जुहे देवे उयवज्जइ ३ । से ण तत्थ दिग्वाइ जाव चइत्ता तच्चे
 सान्निगमे जीये पच्चायाइ ३ । से ण तओर्हितो जाव उव्वट्टित्ता उयरिल्ले
 माणसुत्तरे सज्जुहे देवे उयवज्जइ ४ । से ण तत्थ दिग्वाइ भोग
 जाव चइत्ता चउत्थे सान्निगमे जीये पच्चायाइ ३ । से ण तओर्हितो
 अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसुत्तरे सज्जुहे देव उयवज्जइ ५ । से ण
 20 तत्थ दिग्वाइ भोग जाव चइत्ता पचम सान्निगमे जीये पच्चायाइ ५ ।
 से ण तओर्हितो अणतर उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसुत्तरे सज्जुहे देवे
 उयवज्जइ ६ । से ण तत्थ दिग्वाइ भोग जाव चइत्ता छट्ठे सान्निगमे
 जीये पच्चायाइ ६ । से ण तओर्हितो अणतर उव्वट्टित्ता बमलोगे
 नाम से कप्पे पण्णत्ते, पाइणपट्ठीणायए उर्दीणद्वाहिणचित्थिण्णे बहा
 25 अणपदे जाव पच धर्दिसगा पण्णत्ता । त जहा- १ असोगर्दिसण,

नाव पडिहया । से णं तत्थ देवे उववज्जइ ७ । से ण तत्थ दस
 सागरोयमाइ दिव्याइ भोग नाव चइत्ता मत्तमे सान्निगमे जीरे
 पच्चायाइ ७ । से ण तत्थ नवण मासाण धहुपडिपुण्णाण अट्ठट्ठमाण
 नाव वीइकताण सुकुमालगमद्वरण मिउडुडल्लुचियकेसण मट्ठगडतल-
 कण्णपीट्ठण देवाउमारनप्पभण वारण पयायइ । से ण अह कासया । तप ५
 ण अह आउसो कामजा, कोमारियपवज्जाण कोमारणण भमचेरयासेण
 अविन्दकण्णण चैव सराण पडिलमामि १ इमे सत्त पउट्ठपरिहारे
 परिहरामि । त जहा- १ एणेज्जस्स, २ महारामस्स, ३ मडियस्स,
 ४ रोहस्स, ५ भारद्वायस्स, ६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स,
 ७ गोसालरस्स मत्तलिपुत्तस्स । तत्थ ण जे से पढमे पउट्ठपरिहारे से ण 10
 रायगिट्ठस्स नयरीण बहिया मडिडुच्छिंहासि चेइयसि उदाइस्स
 कुब्बियायणरस्स सरीर विप्पजहामि, १ एणेज्जगस्स सरीरग अणुप्प-
 विसामि, २ बावीस यासाइ पढम पउट्ठपरिहार परिहरामि । तत्थ ण जे
 से दोउचे पउट्ठपरिहारे से ण उद्दडपुरस्स नयरीण बहिया चदोयरणसि
 चेइयसि एणेज्जगस्स सरीरग विप्पजहामि, १ महारामस्स सरीरग 15
 अणुप्पविसामि, २ ण्णवीस यासाइ दोउचं पउट्ठपरिहार परिहरामि ।
 तत्थ ण जे से तन्चे पउट्ठपरिहारे से ण चपाण नयरीण बहिया
 अगमविहामि चेइयसि महारामस्स सरीरग विप्पजहामि, १ मडियस्स
 सरीरग अणुप्पविसामि, २ वीस यासाइ तच्च पउट्ठपरिहार परिहरामि ।
 तत्थ ण जे से चउत्थे पउट्ठपरिहारे से ण वाणारसीण नयरीण बहिया 20
 काममहावणसि चेइयसि मडियस्स सरीरग विप्पजहामि, १ रोहस्स
 सरीरग अणुप्पविसामि, २ ण्णूणरीस यासाइ चउत्थ पउट्ठपरिहार
 परिहरामि । तत्थ ण जे मे पचमे पउट्ठपरिहारे से ण आलमियाण
 नयरीण बहिया पत्तकालगयसि चेइयसि रोहस्स सरीरग विप्पजहामि,
 १ भारद्वायस्स सरीरग अणुप्पविसामि, २ अट्ठारसं यासाइ पचम 25

- पठट्टपरिहार परिहरामि । तत्थ ण जे से छट्ठे पठट्टपरिहारे से ण वेसालीण नयरीण वहिया काडियायणासे चेदयसि भारद्वायस्स सरीर विप्पजहामि, १ अज्जुणमस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, २ सत्तरस वासाइ छट्ठ पठट्टपरिहार परिहरामि । तत्थ ण जे से सत्तमे
- ५ पठट्टपरिहारे से ण इहेव सावत्थीण नयरीण हालाहलाय कुभकारीण कुभकारावणसि अज्जुणमस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि, १ गोसालस्स मर लिपुत्तस्स सरीरग 'अल थिर धुव धारणिज्ज सीयसह उण्हसह खुटासह गियिट्ठसमसगपरंसहोवसगसह थिर-सधयण' ति कट्ठु त अणुप्पविसामि, १ सोलस वासाइ इम सत्तम
- १० पठट्टपरिहार परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा, एगण तेतोसेण धम्मसएण सत्त पठट्टपरिहारा परिहरिया भवतीतिमक्खाया । त सुट्ठु
- ॥ आउसो कासवा, मम एव वयासी-साहु ण आउसो कासवा, मम एव वयासी- 'गोसाले मण्डलिपुत्ते मम धम्मतेवासि' ति १ ॥ (सू० ५५०)
- ११ तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मण्डलिपुत्त एव वयासी-
- १५ 'गामाला, स जटानामए तणए सिया, गामेल्लुप्पहिं पराभजमाणे १ कथं य गहू वा दुरिं वा दुग्ग वा निज्ज वा पयय वा विसम वा अणस्सापमाणे एगण मए उण्णालोमेण वा सणालोमेण वा कप्पासपण्ण वा तणसूएण वा अक्काण आउरेत्ताण चिट्ठज्जा, से ण अणाउरिण आउरियामिति अप्पाण मसइ, अप्पउत्तं य पच्छिन्नमिति अप्पा ण मसइ, अणिलुक्के निलुक्क-
- २० मिनि अप्पाण मसइ, अपलए पलायमिति अप्पाणं मसइ, एवामेव तुम पि गामाला, अणधे सत्त अन्नमिति अप्पाण उपलभन्ति । त मा एउ गामाला नादिहसि गोमाला, सधउते सा छाया नोअथा' ॥ (सू० ५५१)
- २० तए ण से गामाले मण्डलिपुत्त समणेण भगवया महावीरेण एव धुत्ते ममाणे आसुरुत्त ५ समण भगव महावीर उच्चाउयाहिं
- २५ आउसणाहिं आउसइ, १ उच्चाउयाहिं उद्धसणाहिं उद्धसेइ, १ चा

उद्याययाहिं निष्मउणाहिं निष्मउेइ ॥ उद्याययाहिं निष्मउेइणाहिं
निष्मउेइ, १ एव वयासी- 'नट्टे सि कयाइ, निणट्टे सि कयाइ, मट्टे
सि कयाइ, नट्टरिणट्टमट्टे सि कयाइ, अउज न भयसि नाहि ते
भमाहिंते सुहमत्थि' ॥ (सू० ५५९)

२१ तेण कालेण तेण समणसं समणस्स भगवओ महावीरस्स 5
अतिशसी पाइणजाणवण सव्याणुभूई नाम अणगारे, पगइमइए जाव
विणीए, धम्मायरियाणुरागेण एयमट्ट असइएमाणे उट्टाप उट्टेइ, १
जेणेव गोसाले मगलिपुत्ते तेणेउ उवागच्छइ, १ गोमाल मल्लिपुत्त
एव वयासी- 'जे वि ताउ गोसाला, तहाइएस्स समणस्स या
माएणस्स या अतिय एगमवि आरियं धम्मिय सुउयण निमामेइ, से वि 10
ताय ईइइ भमसइ, जाव वहाण मगल इवय चेश्व पउजुयसइ,
जिमग पुण तुमे गोसाला, भगवया चेउ पत्थाविण, भगवया चेउ
मुढाविण, भगवया चेय सेहाविण, भगवया चेउ सिक्काविण, भगवया
चेय वट्ठस्सइए, भगवओ चव मिच्छ रिप्पडियेके । त मा एउ गोसाला,
नारिहसि गोसाला, सच्चेय त सा छाया नो अन्ना' । तए ण से गोसाले 15
मगलिपुत्ते सव्याणुभूइणाम अणगारेण एउ पुत्ते समाणे आसुक्ते
५ सव्याणुभूई अणगार तरेण तेण पगाहच्च कूडाहच्च भामणसिं
करेइ । तए ण से गोसाले मल्लिपुत्ते सव्याणुभूइ अणगार तरेण तेण
पगाहच्च कूडाहच्च भासणमिं करेत्ता धोक्क विं समण भगव
महावीर उद्याययाहिं आउसणाहिं आउसइ जाव सुह मत्थि ॥ 20

२२ तए कालेण तेण समणसं समणस्स भगवओ महावीरस्स
अतिशसी कोसलजाणवण सुनकरत्ते नाम अणगारे पगइमइए जाव
विणीए धम्मायरियाणुरागेण बहा वव्याणुभूई तदेव जाव स च्चेय
ते सा छाया नो अन्ना । तए ण से गोसाले मल्लिपुत्ते सुनकरत्तणं
अणगारेण एउ पुत्ते समाणे आसुक्ते ५ सुनकरत्त अणगार 25

तवेण तेणं परितावेइ । तए ण से भुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं
 मखलिपुत्तेण तवेण तेणं परितावेण समाने जेणेव समणे भगवं
 महावीरे तेणेव उवागच्छइ, १ समण भगव महावीर तिक्रबुत्तो वदइ
 नमसइ, २ ता समयेअ एव महव्वयाइ आरुभेइ, २ समणा य समणीओ
 5 य खामेइ, २ आलोदयपठिकते समारिपत्ते आणुपुब्बीए कालगए ॥

- ११ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्त अणगारं तवेण
 तेणं परितावेत्ता तच्च पि समण भगव महावीर उच्चावयाहिं
 आउत्तणाहिं आउत्तइ, ३ वं व चं व जाव सुट मत्थि । तए ण समणे
 भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव ययासी—‘जे वि ताव गोसाला,
 10 तहाखवस्स समणस्स वा माहणस्स वा व चं व जाव पज्जुयासइ,
 किमंण पुण गोसाला तुम मए चेअ पव्वाविण जाव मए चेव बहुस्सुई-
 कए, मम चेव मिच्छु विप्पडियत्ते । त मा एव गोसाला, जाव भो
 अत्ता । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेण भगवया महावीरेण
 एव बुत्ते समाने आसुक्खे ५ तेयासमुग्घापण समीहजइ, सत्तट्ठ पयाइ
 15 पच्चोसकइ १ ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगसि
 तेय निसिरइ । से जहानामए पाउक्खलिया इ वा वायमइलिया इ वा
 सेलासि वा कुहुसि वा थमासि वा थूमसि वा आवारिज्जमाणी वा
 निवारिज्जमाणी वा सा ण तत्थ भो कमइ भो पक्कमइ एवामेव
 गोसालस्स वि मखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स
 20 वहाए सरीरगसि निसिद्धे समाने से ण तत्थ भो कमइ भो पक्कमइ
 आचियाचिर्यं करेइ, १ ता आयाहिणपयाहिण करेइ, १ उट्ट वेहास
 उप्पइए । से ण तओ पडिहए पडिनिवत्ते समाने तमेअ गोसालस्स
 मखलिपुत्तस्स सरीरग अणुदहमाणे २ अतो अणुप्पविट्ठे । तए ण से
 गोसाले मखलिपुत्ते सएण तएण अब्बाइट्ठे समाने समण भगव महावीर
 २५ एव ययासी—‘तुमं ण आउत्तो कासवा, मम तवेण तेणं अन्नाइट्ठे

समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाह्यकतीए छउमत्थे चेंव काले करेस्सासि' । तए ण समणे भगव महावीरे गोसाले मखलिपुत्त एव वयासी— 'नो खलु अह गोसाला, तव तवेण तेएण अन्नाइट्ठे समाणे अतो उण्ह नाव काल करेस्सामि; अह ण अन्नाइ सोलस यासाइ जिणे सुहृत्थी विहरिस्सामि । तुम ण गोसाला, 5 अप्पणा खेय सएण तेएण अन्नाइट्ठे समाणे अतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे नाव छउमत्थे चेंव काल करेस्सासि' ॥

२४ तए ण साज्जतीए नयरीए सिंघाडग नाव पटोसु बहुजणो अन्नमन्नस पयमाइक्कइ, नाव पय पक्खेइ— 'पय खलु देवाणुप्पिया, साज्जतीए नयरीए बहिया कौट्टए चेइए दुवे जिणा सल्लयंति, एग 10 ययति— तुम पुत्ति काल करेस्सासि, एगे वदति— तुम पुत्ति काल करेस्सासि । तए ण के पुण सम्मादाई के पुण मिच्छादाई । तए ण जे से अहप्पहाणे जणे से घयइ— समणे भगव महावीरे सम्मानाई, गोसाले मखलिपुत्ते मिच्छादाई । 'अज्जो' ॥ समणे भगव महावीरे समणे निग्गवे आमतेत्ता एव दयासी— अज्जो, से अहानामय तणरासी 15 इ वा कट्टरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुत्तरासी इ वा भुत्तरासी इ वा भोमयरासी इ वा अवकरासी इ वा अगणिश्रामिण अगणिश्रुसिण अगणिपरिणामिण हयतेण गयतेण नट्टतेण भट्टतेण हत्ततेण विणट्टतेण नाव पयामेइ गोसाले मखलिपुत्ते मम दहाए सरीरासि तेय निसिरेत्ता हयतेण गयतेण नाव विणट्टतेण आप । त 20 छवेण अज्जो, तुम्हे गोसाल मंगलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोण्ट, १ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेट्ठ, १ धम्मिएण मडोयारेण पडोयारेह, १ अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य चागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरण करेह ॥

२५ तए ण ते समणा निग्गया समणेण भगवया महावीरेण एव 25

श्रीमद्भगवद्गीतासूत्रम्

बुक्ता समाणा समण भगव महाग्रीर वदति नमसति २ जेणेव गोस
मखलिपुत्त तेणेव उवागच्छति २ न्ता गोसाल मखलिपुत्त धम्मिय
पडिचोयणाए पडिचोयति, २ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसार
२ धम्मिएण पडोयारणं पडोयारति, २ अट्टेहि य हेऊहि य कारणाहि
5 नाव यागरण करति ॥

२६ तए ण से गोसाल मखलिपुत्त समणेहि निगथेहि धम्मियाए
पडिचोयणाए पडिचोयज्जमाणे नाव निप्पट्टपसिणयागरण करमाणे
आसुरुत्ते नाव मिसिमिसमाण नो संचाण्ड समणाण निगथान
सरीरगस्स किंचि आवाह वा वावाह वा उप्पापत्तए, छविच्छेद वा
10 करत्तए । तए ण ते आजीविया थरा गोसाल मखलिपुत्त समणेहि
निगथेहि धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोयज्जमाण धम्मियाए
पडिसारणाए पडिसारिज्जमाण, धम्मिएण पडोयारण पडोयारज्जमाण
अट्टेहि य हेऊहि य नाव करमाण आसुरुत्त नाव मिसिमिसमाण,
समणाण निगथान सरीरगस्स किंचि आवाह वा वावाह वा छविच्छेद
15 वा अकरमाण पासंति, २ गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अतिथाओ
आयाए अयज्जमति, २ जेणव समणे भगव मदावीरे तणव उवागच्छति,
२ समणं भगव मदावीर तिक्कपुत्ता आयादिणं थयादिण करति २ वदति
नमसति, २ समणं भगव मदावीर उवसणज्जित्ताण विहरति । अथेगइया
आजीविया थरा गोसाल थरा मखलिपुत्त उवसणज्जित्ताण विहरंति ॥

२७ तए णं म गोसाले मखलिपुत्त जम्मट्टाए हव्यमाण तमट्टं
असाहमाण, रुदाई पलाणमाण, वीट्टण्णाई नीसगमाणे दादेयाए
समाए हव्यमाण, अयट्टं कंदुयमाण, पुयलि पण्णादमाण हव्ये
जिण्णसुणमाण, सादि वि पाप्पं भूमिं काट्टमाण, 'हा हा अदा हा अदा
ममि ति कट्टु ममग्ग भगव ना मदावीरस्स अनियाआ काट्टयाआ
मयाभा पडिनिवसम, २ जयय सावथी मयए, जयय हाहाहव्य

कुमकारीण कुमकारावणे तेणे उवागच्छइ, १ हालाहलाए कुमकारीण
कुमकारावणसि अत्रकृणगहत्थगण, मज्जपाणग पियमाणे, अमिक्खण
गायमाणे, अमिक्खण नच्चमाणे, अमिक्खण हालाहलाए कुमकारीण
अजलिकम्म करमाणे, सीयलण मट्टियापाणण आयचणिउदण
गायाइ परिमिचमाणे विहरइ ॥ (सू० ५५३)

१८ 'अज्जो' ति समणे भगव महायारे समण निग्गये आभतेत्ता
एव धयासी—'जाउए ण अज्जो गोसालेण मखलिपुत्तेण मम
धहाए सरिरगसि तए निसट्ठ, से ण अलाहि पज्जत्ते सीलसण्ह
जणवयाण । त जहा—१ अगाण, २ चगाण, ३ मगाहाण, ४ मलयाण,
५ मालवगाण, ६ अच्छाण, ७ वच्छाण, ८ कोच्छाण, ९ पाट्ठाण, १०
११ लाट्ठाण, १२ यज्जाण, १३ मोर्लीण, १४ कासीण, १५ कोसलाण,
१६ अवाहाण, १७ सभुत्तराण धायाए धहाए उच्छावणयाए भासी-
करणयाण । ज पि य अज्जा, गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए
कुमकारीण कुमकारावणसि अत्रकृणगहत्थगण, मज्जपाण पियमाणे,
अमिक्खण ण अजलिकम्म करमाणे विहरइ, तस्स पि य ण १५
यज्जस्स पच्छायणट्ठयाए इमाइ अट्ठ चरिमाइ पन्नवेइ । त जहा—
१ चरिमे पाणे, २ चरिम गेय, ३ चरिमे नट्टे, ४ चरिमे अजलिकम्मे,
५ चरिमे पोक्खलसवट्ठए महामहे, ६ चरिमे सेयणए गघहत्थी, ७ चरिमे
महासिलाकटण सगामे, ८ अह च ॥ इमासे ओसप्पिणीए चउवीसाए
तित्थकरण चरिमे तित्थकरे सिज्झिस्स जाव अत करिस्स ति । ज २०
पि य अज्जो गोसाले मखलिपुत्ते सीयलण मट्टियापाणण आयचणि
उदण गायाइ परिमिचमाण विहरइ, तस्स पि य ण यज्जस्स
पच्छायणट्ठयाए इमाइ चत्तारि पाणगाइ चत्तारि अपाणगाइ पन्नवेइ ॥

२१ से किं त पाणए? पाणए चउविहे पण्णत्ते । ॥ जहा—
१ गोपुट्टए, २ हत्थमादियए, ३ आयतत्तए, ४ सिलापम्मट्टए, से त २५

- पाणय ॥ से किं ॥ अपाणय ? अपाणय ध्वज्विहे षण्णते । ॥ जहा—
 १ थालपाणय २ तयापाणय, ३ सिंचलिपाणय, ४ सुद्धपाणय ॥ से
 किं त थालपाणय ? ज ण दायालम वा दावारम वा दाकुमम वा
 दाकलम वा मयिन्म उहम हत्येहिं परामुसइ, न य पाणिय पियइ,
 5 से त थालपाणय ॥ से किं त तयापाणय ? ज ण अब वा अवाडम वा
 जहा पभाणय वाव जोर वा तिंदुरय वा तरुणम वा आमम वा
 आसगसि आरीलेइ वा पवीलेइ वा, न य पाणिय पियइ से त
 तयापाणय ॥ से किं त सिंचलिपाणय ? ज ण कलसगलिय वा मुग-
 सिंगलिय वा माससगलिय वा सिंचलिसगलिय वा तराणिय आमिय
 10 आसगसि आरीलेइ वा पवीलेइ वा, न य पाणिय पियइ, से त
 सिंचलिपाणय ॥ से किं त सुद्धपाणय ? ज ण उम्मासे सुद्धत्ताइम
 खाइ, दो मासे पुदविसथारोवणय य, दो मासे कट्टसथारोवणय, दो
 मासे इम्मसथारोवणय । तस्स ण बहुपडिपुण्णाण छण्ह मासाण
 अतिमरारूप इमे दो देवा महद्दिया जाव महेसक्खा अतिय पाउम्भवति ।
 15 त जहा— पुण्णमहे य माणिमहे य । तए ण ते देवा सीयलप्पहिं
 उहप्पहिं हत्येहिं गायाइ परामुसति । जे ण ते देवे साइज्जइ, से ण
 आसीविसत्ताए कम्म पकरेइ, जे ण ते देवे नो साइज्जइ तस्स ण सासि
 सरीरगसि अगणिकाण समवइ, से ण सएण तेएण सरीरग इामेइ
 १ सा तओ पच्छा सिज्जइ जाव अत करेइ, से त सुद्धपाणय ॥
- 20 १० तत्थ ण सायर्थीए नयरीए अयपुले नाम आजीविओवासए
 परिवसइ, अहे जाव अपरिमूए, जहा हालाहता जाव आजीवियसमएण
 अप्पाण भावेमाणे विहरइ । तए ण तस्स अयपुलम्म आजीवि-
 ओवासगस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तापरत्तकालसमयासि खुहुबजागरिय
 जागरमाणस्स अयमेयारुवे अज्झातिए जाव समुप्यजित्या— किंसटिया
 25 ह्ता षण्णत्ता ? तए ण तस्स अयपुलस्स आजीविओवासगस्स दोच्छं

पि अयमेवाक्ये अज्जमत्थिए जाव ममुप्पज्झिया-‘एणं तलु मम
धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मत्तलिपुत्ते उप्पन्नानणइसणधरे जाव
सज्जन्नु सज्जदरिसी इहेव सावत्थिए नयरीए हालाहलाए कुमकारीए
हुंमकाराण्णसि आजीवियसधसपरिवुटं आजीवियसमण्ण अप्पाण
भावेमाणे विहरइ । स सय रत्तु मे कह्ठ जाव जलत्ते गोसाल 5
मत्तलिपुत्ते यदित्ता जाव पज्जुवासित्ता इम एयान्णं यागरण यागरिसए’
ति वट्ठु एवे सपइइ २ ता कह्ठ जाव जलत्ते ण्हाए कय जाव
अप्पमहाग्घामरणालकियसरिए साओ गिहाओ पढिनिक्खमइ १ ता
पायगिहारधारण सावत्थिं नयरीं मज्झमज्झेण जेणव हालाहलाए
कुमकारीए कुमकाराण्णे तेणेउ उयागच्छइ, १ ता गोसाल मत्तलिपुत्ते 10
हालाहलाए कुमकारीए कुमकाराण्णमि अवट्ठणगहत्थगय जाव
अज्जलिक्खम करेमाण सीयलएण मट्ठिया जाव मायाइ परिसिंखमाण
पासइ, १ ता लज्जिए विलिए विट्ठु सणिय १ पयोसइइ । तण ण ते
आजीविया थेरा अयपुल आजीविओयासग लज्जिय जाव पयासक्कमाण
पासइ (पासति ?), १ ता एव ययासी-‘एहि ताउ अयपुला, एत्तओ । 15
तण ण ते अयपुले आजीविओयासए आजीवियथेरोहिं एणं वुत्ते
समाणे जणेउ आजीविया थेरा तेणेव उयागच्छइ, १ आजीविए थरे
यइइ ममंसइ, १ नयासन्न जाव पज्जुगसइ । ‘अयपुला’ इ
आजीविया थेरा अयपुल आजीविओयासग एउ ययासी-‘से नूण ते
अयपुला, पुज्जरत्ताउरत्तकालसमयासि जाव किंसउिया हत्ता पणत्ता ?’ 20
तण ण तउ अयपुला, दोअ पि ते चव चव माण्डिव जाव सावत्थिं
नयरीं मज्झमज्झेण जेणव हालाहलाए कुमकारीए कुमकाराण्णे,
जेणव इह तेणेव हव्वमाण । स नूण ते अयपुला अट्ठे समट्ठ ! एत्ता
अत्थि । ‘ज पि य अयपुला, तउ धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले
मत्तलिपुत्ते हालाहलाए कुमकारीए

जाव अजलिं करेमाणे विहरइ, तत्थ वि ण भगवं इमाइ अट्ट चरिमाइ
 पद्मवेइ, त जहा-चरिमे पाणे जाव अत करेस्सइ । जे वि य अयपुला,
 तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मखलिपुत्ते सीयलण्ण मट्ठिया
 भाव विहरइ, तत्थ वि ण भगव इमाइ चत्तारि पाणगाइ चत्तारि
 5 अपाणगाइ पद्मेइ । से किं त पाणए ? १ जाव तओ पच्छा सिज्झइ
 जाव अत करेइ । त गच्छ ण तुम अयपुला, एस चेव तव धम्मायरिए
 धम्मोवदेसए गोम ले मखलिपुत्ते इम एयाक्ख वागरण वागरित्तण' ति ।

३१ तए णं से अयपुले आजीविओवासए आजीविपहिं येरोहिं
 एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, १ जेजेव गोसाले मखलिपुत्ते
 10 तेजेइ परित्थ गमणाए । तए ण से आजीविया थेरा गोसालस्स
 मखलिपुत्तस्स अब्बकूणगपट्ठावणट्ठयाए एगतमंते सगार कुब्बति ।
 तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते आजीवियाण थेराण सगार पडिच्छइ,
 १ अब्बकूणग एगतमंते पडेइ । तए ण से अयपुले आजीविओवासए
 जेजेव गोसाले मखलिपुत्ते तेजेव उवागच्छइ, १ गोसाल मखलिपुत्त
 15 तिक्खुत्तो जाव पञ्जुवासइ । 'अयंपुला, १ गोसाले मखलिपुत्ते
 अयपुल आजीविओवासए एव वयासी-' से नूण अयपुला, पुब्बरत्ता-
 वरत्तकालसमयसि जाव जेजेव मम अतिय तेजेव हव्वमागए । से नूण
 अयपुला, अट्ठे समट्ठे ! 'इत्ता अत्थि' । त नो ररलु एम अब्बकूणए,
 अब्बोयए ण एसे । 'किं सठिया हत्ता पण्णत्ता ?' वंसिमूलसठिया हत्ता
 20 पण्णत्ता । वीण वाणहि रे वीरगा, वीण वाणहि । तए ण स अयपुले
 आजीविओवासए गोसालेण मखलिपुत्तेण इम एयाक्ख वागरण
 वागरिए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियण गोसाल मखलिपुत्त वदइ
 नमसइ, १ पसिणाइ पुच्छइ, १ अट्ठाइ परिआइयइ, १ उट्ठाए उट्ठेइ,
 १ ता गोसाल मखलिपुत्त वदइ नमसइ, १ ता वाव पडिगए ॥

25 ३२ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते अप्पणो मरण आभोणइ, १ त

आजीविण थरे सदावेइ, १ पय ययासी- 'तुम्हे ण देवाणुप्पिणा, मर्म
कालगय जाणेत्ता सुरभिणा गधोदण्णं प्ढाणेइ, १ पण्डलसुप्तमालाप
गधकासारप गाथाइ इहेइ, १ सरसेण गासीसचदणेणं गाथाई
अणुलिपट, १ महरिह ईसलक्खण पडसादग निर्यसेइ, १ सग्यालकार-
विभूसिय करइ, १ पुरिसदस्सवाहिणिं सीयं इरुइइ, १ सावत्थीप 5
नयरीप मिंघादग नाव पहेसु मदया मदया राहेण उग्घोसेमाणा
एवं वक्क 'पय खलु देवाणुप्पिणा, गोसाले मंग्गालेपुत्ते जिणे जिणप्पलावी
नाव जिणसइ पगासेमाणे विहरित्ता इमिंसे ओसाप्पिणीप चउर्यासाप
तित्थयरणं थरिमे तित्थयरेसिद्धे नाव सव्यइक्खप्पदीण। इद्विसङ्कार-
समुदण्ण मम सरीरगस्स भीदरण करइ' । तए ण ते आजीविया थरे 10
गोसालस्स मत्तलिपुत्तस्स पयमदु विणण्ण पडिसुणेंति ॥ (सू० ५५४)

११ तए ण तस्म गोसालस्स मंग्गलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणम-
माणंसि पडिल्लसम्मत्तस्स अयमेयाकवे अज्झत्थिप नाव समुप्पाजित्था-
'नो खलु अह जिणे जिणप्पलावी नाव जिणसइ पगासेमाणे विहरिप।
अह ण गोसाले चंउ मत्तलिपुत्ते समणघायप समणमारण समणपदिणीप 15
आयरियउज्झायाण अयसकारण अयण्णकारण अकित्तिकारण इहं
असत्तभावुज्झायाणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसहि य अप्पाणं या पर वा तदुभय
या बुग्गादिमाणे बुप्पाप्पमाणे विहरित्ता सएण तेएण अक्काइहे समाणे
अतां सत्तरत्तम्स पित्तज्जरपणियसरिरे इहायकतीप छउमत्थे चंय
काल करेस्स । समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी नाव 20
जिणसइ पगासेमाणे विहरइ', - एउ मपदेइ, १ आजीविण थरे
सदावेइ, १ उच्चात्रयसवहसात्रिप करेइ १ पयं ययासी- 'नो
खलु अह जिणे, जिणप्पलावी पगासेमाणे विहरिप । अह
ण गोसाले मत्तलिपुत्ते समणघायप नाव छउमत्थे चंय काल फरिम्सं।
समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी नाव जिणसइ पगासेमाणे 25

विहरत् । त त्वमे ण देवाणुप्पिया, मम कालमय जाणेत्ता वामे पाप
 सुवेण बधत्, १ तिकसुत्तो मुहे उठुत्त, २ ता सावत्थीए नयरीए
 सिंघाडग जाव पहेसु आकट्टिकिट्ठि करेमाणा महया महया सदेण
 उग्घोसेमाणा १ एवं वदत्- 'नो खलु देवाणुप्पिया, गोसाले मत्तलिपुत्ते
 ४ जिणे जिणप्पलायी जाव विहरिण । एस ण गोसाले चेव मत्तलिपुत्ते
 समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालमए । समणे भगव महावीरे जिणे
 जिणप्पलायी जाव विहरत् । महया अणिट्ठीअसक्कारसमुदण मम
 सरीरगस्स नीहरण करेज्जाह' एव वदित्ता कालमए ॥ (सू० ५१५)

१४ तए ण आजीविया थेरा गोसाल मत्तलिपुत्ते कालमय जाणित्ता
 10 हालाहलाए कुम्भकारीए कुम्भकारावणस्स दुवारइ पिहति १ ता
 हालाहलाए कुम्भकारीए कुम्भकारावणस्स बहुमज्झवेसमाए सावत्थि
 नयरीं आलिहति १ ता गोसालस्स मत्तलिपुत्तस्स सरीरग वामे पादे
 सुवेण बधति १ ता तिकसुत्ता मुहे उठुमति, २ ता सावत्थीए नगरीए
 सिंघाडग जाव पहेसु आकट्टिकिट्ठि करेमाणा नीय १ सदेण उग्घोस-
 15 माणा १ एव वयासी- 'नो खलु देवाणुप्पिया, गोसाले मत्तलिपुत्ते
 जिणे जिणप्पलायी जाव विहरिण । एस ण गोसाले चेव मत्तलिपुत्ते
 समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालमए । समणे भगव महावीरे
 जिणे, जिणप्पलायी जाव विहरत् । सवहपडिमोक्खणग कराति १
 वोच्च पि धूयासक्काराविरीकरणद्वयाए गोसालस्स मत्तलिपुत्तस्स
 20 वामाओ पादाओ सुवे सुयति, १ हालाहलाए कुम्भकारीए कुम्भकारा-
 वणस्स दुवारवयणाइ अवयुणति, १ गोसालस्स मत्तलिपुत्तस्स सरीरग
 सुग्गिणा गंधोदण ण्हाणति, ते चेव जाव महया इड्डिसक्कारसमुदण
 गोसालस्स मत्तलिपुत्तस्स सरीरस्स नीहरण कराति ॥ (सू० ५५६)

२५ तए ण समणे भगव महावीरे अजया कयाइ सावत्थीओ नयरीओ
 २५ कोट्टयाओ चइयाओ पडिनिक्खमइ, १ वहिया जणउयविहार विहरत् ॥

३२ तेण कालेण तेण समणं मट्ठियगामे नाम नयरे होत्था,
चण्णओ। तस्स ण मट्ठियगामस्स नयरस्स उट्ठिया उत्तरपुरत्थियमे
दिसीमाण णत्थ ण साण(ल)कोट्टण नाम चेइण होत्था, वण्णओ नाव
पुट्ठगिस्सिलापट्टओ। तस्स ण साण(ल)कोट्टगस्स ण चेइयस्स अदूरसामते
एत्थ ण महंगे मालुयाकच्छउय यावि होत्था, किण्हे किण्होभास नाव ७
निहरइभूए, पत्तिए पुप्फिय फल्लिण हत्थिगरेरिज्जमाणे सिरीण अईव
२ उउमोभमाणे चिट्ठइ। तत्थ ण मट्ठियगामे नयरे रेव। नाम गाहावइणी
परिवसइ अट्ठा नाव अपरिभूया। तए ण समणे भगव महावीरे
असया कयाइ पुत्ताणुप्पिअ चरमाणे नाव जणेअ मट्ठियगामे नयरे
जेणेव साण(ल)कोट्टण चेइए नाव परिसा पडिगया। तए ण समणस्स 10
भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउल रोगायके पाउभूए, उज्जले
नाव इरहियास पित्तज्जरपरिगयसरीरे वाटवक्कतीण यावि निहरइ,
अविद्याइ लोहियउच्चइ पि पफरेइ, चाउज्जण धामरेइ-‘एअ खलु
समणे भगव मट्ठारीरे गोसालस्स मरालिपुत्तस्स तणेण तेण्ण अत्ताट्ठे
समाणे अतो उणए मामाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे वाटवक्कतीण 15
उउमत्थे चेव काल करिस्सइ’। तेण कालेण तेण समणं समणस्म
भगवओ महावीरस्स अनेवासी सीहे नाम अणगारे पगसमइए नाव
धिणीए मालुयाकच्छउगस्स अदूरसामते उट्ठउट्ठेण अनिक्खित्तेण २
तयोक्कम्मेण उट्ठवाहा नाव निहरइ। तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स
झागतरीयाए चट्टमाणस्म अयमेयासुते नाव समुप्पज्जित्था— 20
‘एअ खलु मम धम्मपरियस्स धम्मोउत्तमस्म ममजस्स भगवओ
महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायके पाउभूए उज्जले नाव
उउमत्थे चेव काल करिस्सइ। चट्ठिस्मनि य ण अन्नतित्थिया—
‘उउमत्थे चेव कालेण’। इमेण एयासुतेम महया ममोमाणसिण्ण
इउत्तेण अभिभूए समणे आयाउज्जमीओ पचोहइ, २ जेणेअ 25

- मालुयाकच्छुण तेणेव उवागच्छइ, १त्ता मालुयाकच्छुण अतो
 अणुपरिसइ १ महया २ सहेण कुट्टुक्कुस्स पक्कन्ने। 'अज्जो' ति
 समणे भगव महावीरे समणे निग्गये आमतेइ, २ एउ वयासी—
 'एव खलु अज्जो मम अतेवासी सीहे नाम अणगारे पगइमइए,
 5 त चव सव भाणियव जाव पक्कन्ने। त गच्छइ ण अज्जो, तुमे सीह
 अणगार सइह'। तए ण ते समणा निग्गया समणेण भगवया
 महावीरेण एउ वुत्ता समाणा समण भगव महावीर यइति नमसति, १
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ साण'ल'कोट्टयाओ चेइयाओ
 पडिनिव्वमति, १ जेणेव मालुयाकच्छुण जेणेव सीहे अणगारे तेणेव
 10 उवागच्छति १ सीहे अणगार एवे वयासी—'सीहा, धम्मायरिया
 सइयति'। तए ण से सीहे अणगारे समणेहिं निग्गयेहिं सइहिं
 मालुयाकच्छुणाओ पडिनिव्वमइ १ जेणेउ साण'ल'कोट्टय चेइए,
 जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ १ समण भगव महावीर
 तिमवुत्तो आ यहिणएयहिण जाव पज्जुयासइ। 'सीहा' इ समणे
 15 भगव महावीरे सीहे अणगार एउ वयासी— से नूण ते सीहा
 क्षाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयाएव जाव पक्कन्ने। से नूण ते
 सीहा अट्ट समट्टे'। इता अत्थि'। 'त नो खलु अह सीहा,
 गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अन्नाट्टे समाण अतो छणइ
 मासाण जाव काल करेस्स; अह ण अन्नाइ सोलस्स यासाइ जिणे
 20 सुट्ठथी विहरिस्सामि। त गच्छइ ण तुम सीहा मद्रियगाम नयर
 रेवईए गाहाउदणीए गिहे। तत्थ ण रेवईए गाहाउदणीए मम अट्टाए
 डुवे वयोयस्सरीरा उवक्खडिया तहिं नो अट्टो। अत्थि से अस्से
 पारियासिए मज्जारकट्टए कुक्कुडमसए, तमाहयाहि, एएण अट्टा'।
 तए ण से सीहे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते
 25 समाणे इट्ठट्ट जाव हियए समण भगव महावीर वइइ नमसइ

२ ता अतुरियमचवलमसमत मुहपोत्तिय पडिहेहइ, २ जहा गायममाभी
 नाव जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेउ उवागच्छइ, २ समण
 भगव महावीर वदइ नमसइ २ ता समणस्स भगवओ महावीरस्स
 अतियाओ साण(ल)कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, २ अतुरिय
 नाव जेणेव मट्टियगामे नयरे तेणेउ उवागच्छइ २ मट्टियगाम नयर
 मज्झमज्जेण जेणेउ रेवईए गाहाइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ
 ॥ रेवईए गाहाइणीए गिह अणुप्पाधिटे। तए ण सा रेवई गाहाइणी
 सीह अणगार एज्जमाण पासइ, २ हट्ठुहट्ठ खिप्पामेउ आसणाथो
 अणुहइ २ सीह अणगार सत्तइ पयाइ अणुगच्छइ, २ तिक्खुत्तो
 आयाहिणपयाहिण करेइ, २ वदइ नमसइ ॥ एव धयासी- 'सदिससु ण 10
 देवाणुप्पिया, किमागमणप्पओयण'। तए ण से सीहे अणगार रउइ
 गाहाइणी एउ धयासी- 'एउ खलु तुमे देवाणुप्पिए, समणस्स भगवओ
 महावीरस्स अट्ठाए दुये कयोयसरीरा उअक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो अत्थि
 ॥ अत्रे पारियासिए मज्जारकडए सुअडुडमसए, एयमाहराहि, तेण
 अट्ठा'। तए ण सा रेवई गाहाइणी सीह अणगार एउ धयासी- 13
 कस ण सीहा, से भाणी था तउस्सी था, जण तव एस अट्ठे मम ताउ
 रहस्सकडे एउमकपाए, ज-आ ण तुम जाणासि? एव नइ खइ नाव
 जआ ण अह जाणामि। तए ण सा रेवई गाहाइणी सीहस्स
 अणगारस्स अतिथ एयमट्ठ सोधा निस्सम्म हट्ठुहट्ठ जणव भत्तघरे
 तेणेउ उवागच्छइ २ ता पत्तग मोणइ, २ ता जेणेउ सीहे अणगार 20
 तणव उवागच्छइ, ॥ ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गएगसि त स्स-
 सम्म निस्सइ। तए ण तीण रेवईए गाहाइणीए तेण वउसुद्धेण
 नाव दाणण सीहे अणगारे पडिलाभिए समाण देवाउए निउद्ध, नइ
 विअय्म नाव जम्मजीविअफल रेवईए गाहाइणीए रेवईगाहा-
 इणीए। सीह अणगार रेवईए गाहाइणीए 23

पडिनिक्खमइ, १२ता मद्धियगाम नयर मज्झमज्झेण निगच्छउइ १ ३दा
 गोयममाभी नाव भत्तपाण पडिदसेइ, १ समणस्स भगवओ महावीरस्स
 पाणिंसि त सव्व सम्म निस्सिरइ । तए ण समणे भगव महावीरे
 अमुच्छिउए नाव अणज्झोत्रवन्ने त्रिलमिउ पध्वगभूएण अप्पाणेण
 5 तमाहार सररीरकोट्टगासि पक्खिवइ । तए ण समणस्स भगवओ
 महावीरस्स तमाहार आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायके
 खिप्पामेव उउसम पत्ते हट्ठे जाए, आरोगे, बलियसररे तुट्ठा समणा,
 तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा साज्या तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा धेया
 तुट्ठाओ देवीओ सद्धेमणुयासुरे लोए तुट्ठे, 'हट्ठे जाए समणे भगव
 10 महावीरे, हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे' ॥ (सू० ५५७)

१७ 'भते' ति भगव गोयमे समण भगव महावीर ववइ नमत्तइ,
 १ एव ययासी- एउ खलु देवाणुप्पियाण अतेयासी पाइणजाणयए
 सत्थाणुभूइनाम अणगारे पगइमइए नाव विणीए । से ण भते तदा
 गोसालेण मत्तलिपुत्तेण तवेण तेएण भासरासीकए समाणे कहिं गण,
 15 कहिं उयवन्ने ? 'एव खलु गोयमा, मम अतेयासी पाइणजाणयए
 सत्थाणुभूइनाम अणगारे पगइमइए नाव विणीए । से ण तदा
 गोसालेण मत्तलिपुत्तेण भासरासीकए समाणे उट्ठ चद्धिमसूरिय नाव
 उमलत्तकमहासुक्के कप्पे वीद्वदत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उयवन्ने ।
 तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण अट्टारस्स सागरोयमाइ डिई पणत्ता । तत्थ
 20 ण सत्थाणुभूइस्स णि देवस्स अट्टारस्स सागरोयमाइ डिई पणत्ता । से ण
 सत्थाणुभूइ देवे ताओ देवल्लेणाओ आउक्कएण भक्कएण
 डिइक्खएण नाव महाविदे वामे सिज्झिहिइ नाव जत करेहिइ ॥

१८ एउ खलु देवाणुप्पियाण अतेयामी कोसलजाणयए सुनक्खत्ते
 नाम अणगारे पगइमइए नाव विणीए । से ण भते, तदा ण गोसालेण
 25 मत्तलिपुत्तेण तवेण तेएण परिताविए समाणे कालमासे काल किच्छा

कहिं गण, कहिं उवउत्ते । एउ खलु गोयमा, मम अतवासी सुनकरत्ते
नाम अणगारे पगइमइए ताव विणीए । से ण तदा गोसालेण मखलि-
पुत्तेण तवेण तेएण परिताविण समाने जेणेय मम अतिए तेणेउ उवा-
गच्छइ, १ यदइ नमसइ, २ सयमेउ पच महव्वयाइ आरुभेइ २ समणा
य समणीओ य रामेइ, २ आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे ७
काल किच्चा उट्ट चंदिमसूरिय ताव आणयपाणचारणकप्पे वीईयइत्ता
अच्छुण कप्पे देवत्ताए उउत्ते । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण धावीस
सागरोयमाइ डिई पण्णत्ता । तत्थ ण सुनइस्वत्तस्स त्रि देवस्स धावीस
सागरोयमाइ तेव तदा सव्याणुमुत्तस्स जाव अत काहिइ ॥ (सू० ५५८)

३९ एउ खलु वेघाणुप्पियाण अतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम 10
मखलिपुत्ते । से ण भत्ते, गोसाले मखलिपुत्ते कालमासे काल किच्चा
कहिं गण कहिं उउत्ते । एउ खलु गोयमा, मम अतेवासी कुसिस्से
गोसाल नाम मखलिपुत्त समणयायए ताव छउमत्थे चेव कालमाने
काल किच्चा उट्ट चंदिमसूरिय ताव अच्छुण कप्पे देवत्ताए उउत्त ।
तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण धावीस सागरोयमाइ डिई पण्णत्ता । तत्थ 15
॥ गोसालस्स त्रि देवस्स धावीस सागरायमाइ डिई पण्णत्ता ॥

४० से ण भत्ते गोसाले देवे ताओ देवलोणाओ आउकरत्तएण ३
जाव कहिं उवउत्तिहिइ । गोयमा, इहेव जवुद्धीवे दीवे भारटे यासे
विंझगिरिपायमूले पुढेसु जणउपसु सयइउारे नयरे समुइस्स रत्ता
मइए भारियाए सुच्छिंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । से ण तत्थ नयण्ट 20
मासाणं वट्ठुपडिपुण्णण ताव वीइक्कताण जाव सुखे द्वारए पयाहिइ ॥

४१ ज रयणि च ण से दारए जाइहिइ, त रयणि च ण सयइउार
नयरं समितरवाटेरिण भारगसो य कुमगसो य पउमवासे य
रयणयासे य यासे चासिहिइ । तव ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो
एकारसमे दिउसे वीइक्कते ताव सपत्ते धारसाहद्विस्स अयमेयाइय 25

गोष्ण शुणानिष्फन्न नामधेज्ज कार्त्तिके- 'अम्हा ण अम्ह इमस्सि
 दारगसि जायसि समाणसि सयदुवारे नयरे सन्निभतरगाहिरिण जाव
 रयणगासे बुद्धे, त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज महापउमे
 महापउमे' । तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो तामधेज्ज करेहिंति
 5 महापउमे' ति । तए ण त महापउम दारग अम्मापियरो साइरेगट्ट-
 दासजायग जाणित्ता सोमणसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तसि
 महया ९ रायाभिसेणेण अभिसिंघेहिंति । से ण तए राया भविस्सइ,
 महयाहिमयत जाव विहरिस्सइ । तए ण तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नया
 कयाइ दो वेवा महद्धिया गाव महेसकरा सेणाक्म्म कार्त्तिके । त जहा
 10 पुण्णमद्दे य माणिमद्दे य । तए ण सयदुवारे नयरे वहये राईसरतल्लपर
 गाव सत्थगाहप्पभिओ अन्नमन्न सदावेहिंति, ९त्ता यध वर्णहिंति-
 जम्हा ण देवाणुप्पिया, अम्ह महापउमस्स रन्नो दो वेवा महद्धिया
 गाव सेणाक्म्म करति, त जहा-पुण्णमद्दे य माणिमद्दे य, त होउ
 ण देवाणुप्पिया, अम्ह महापउमस्स रन्नो दोच्चे पि नामधेजे 'देवसेणे
 15 देवसेणे' । तए ण तस्स महापउमस्स रन्नो दोच्चे वि नामधेजे
 भविस्सइ 'देवसेणे' ति ॥

४९ तए ण तस्स देवसेणस्स रन्नो अन्नया कयाइ सेए सत्तल-
 धिमल्लसनिगासे चउद्धते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ । तए ण से
 देवसेणे राया त सेए सत्तल्लसनिगासे चउद्धते हत्थिरयणे दुरुद्धे
 20 समाणे सयदुवार नयरे मज्झमज्जेण अभिकरण ९ अभिजाहिइ
 निज्जाहिइ य । तए ण सयदुवारे नयरे वहये राईसर गाव पमिईओ
 अन्नमन्न सदावेहिंति, ९ वर्णहिंति- 'जम्हा ण देवाणुप्पिया अम्ह
 देवसेणस्स रन्नो सेए सत्तल्लसनिगासे चउद्धते हत्थिरयणे समुप्पन्ने,
 त होउ ण देवाणुप्पिया, अम्ह देवसेणस्स रन्नो तच्चे वि नामधेज्ज

‘विमलवाहणे विमलवाहणे’ ति । त ए ण तस्स देवसेणस्स रत्तो
तच्च पि नाम्भेज्जे ‘विमलवाहणे’ ति ॥

४३ त ए ण से विमलवाहणे राया अन्नया कयाऽ समणेहिं
निगयेहिं मिच्छ विप्पडिवज्जिह्विह, अप्पेगइय आउसेहिह, अप्पेगइय
अउहसिहिह अप्पेगइय निच्छेडोहिह, अप्पेगइय निभत्थे(च्छे)हिह, 5
अप्पेगइय वधेहिह, अप्पेगइय निरुमेहिह अप्पेगइयाग छविच्छेड
करेहिह अप्पेगइय पमारहिह, अप्पेगइयाग उइवेहिह, अप्पेगइयाग
यत्थ पडिगह कवल पायपुउण आउडिहिह पिच्छिडिहिह मिदिहिह
अउहसिहिह, अप्पेगइयाग भत्तपाण योउविहिह अप्पेगइय निन्नगरे
करेहिह, अप्पेगइय निगिस्सए करेहिह । त ए ण सयइवारे नगरे वटवे 10
रास्सर जाव वडिहिह - एव खलु देवाणुप्पिया, विमलवाहणे राया
समणेहिं निगयेहिं मिच्छ विप्पडिवज्जिह्विह अप्पेगइय आउस्सइ जाव
निगिस्सए करेह । त नो खलु देवाणुप्पिया, एव अहं सेय नो खलु
एव विमलवाहणस्स रत्ता सेय, नो खलु एव रउजस्स वा रउस्स वा
वल्हस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अतेउरस्स वा जणयस्स वा सेय, 15
अ ण विमलवाहणे राया समणेहिं निगयेहिं मिच्छ विप्पडिवज्जिह्विह, त
सेय खलु देवाणुप्पिया, अहं विमलवाहण राय एयमहु विन्नचित्तए ।
ति कहु अन्नमज्जस्स अनिय एयमहु पडिस्सुणति, २ जेणेव विमल-
वाहणे राया तेणेउ उअगइउनि, २ करयलपटिगहिय विमलवाहण
राय जण्ण पिजण्ण चट्ठावति, २ एव वण्णहिह - ‘एव खलु देवाणु- 20
प्पिया समणेहिं निगयेहिं मिच्छ विप्पडिवज्जिह्विह, अप्पेगइय आउ-
स्सति जाव अप्पेगइय निगिस्सए करेहिह । त नो खलु एव देवाणु-
प्पियाण सेय नो खलु एव अहं सेय नो खलु एव रउजस्स वा जाव
जणयस्स वा सेय अ ण देवाणुप्पिया, समणेहिं निगयेहिं मिच्छ
विप्पडिवज्जिह्विह । त विरमत्तुण देवाणुप्पिया एवस्स अहुस्स अकरगशेय ॥ 25

- ४८ तए ण से विमलवाहणे राया तहिं बहहिं राईसर ना
 सत्यगहप्यभिदहिं एयमदु पिबते समाने 'नो धर्मा' ति 'नो
 तवा' ति मिच्छाविणयण एयमदु पडिस्सुणाहिं । तस्स ण स-
 दुवारस्स नगरस्स वदिया उत्तरपुरात्थिमे दिसीभाए पत्थ ण सुभूमि-
 ५ भागे नाम उज्जाणे भविस्सइ सन्धीयं वण्णो । तेण कालेण तण
 समएण विमलस्स अरहन्तो पउप्पए सुमगल नाम अणगारे जाइ-
 सपन्न वहा धम्मयोगस्स वण्णो नाव सपित्तायिउल्लतेयलेस्से तिक्काणो-
 वगए, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठउट्ठेण
 अणिविपस्सेण नाव आयावेमाणे विहरिस्सइ ॥
- 10 ४९ तए ण से विमलवाहणे राया अन्नया कयाइ रत्थरिय काउ
 निज्जाहिं । एए ण से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
 अदूरसामंते रत्थरिय करेमाण सुमगल अणगार छट्ठउट्ठेण नाव
 आयावेमाण पासिहिं १ आसुवत्ते नाव भित्तिमिहेमाणे सुमगलं
 अणगार रत्थसिरेण मोहावहिं । तए ण से सुमगले अणगारे विमल-
 1५ वाहणेण रत्ता रत्थसिरेण मोहाविए समाने सणिय १ उट्ठेहिं, १ ता
 दोच्च पि उट्ठ वाहाओ पणिज्झिय १ नाव आयावेमाणे विहरिस्सइ ।
 तए ण से विमलवाहणे राया सुमगल अणगार दोच्च पि रत्थसिरेण
 मोहावेहिं । तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रत्ता दोच्च
 पि रत्थसिरेण मोहाविए समाने सणिय १ उट्ठेहिं १ ओहिं पउज-
 20 हिं १ विमलवाहणस्स रण्णो तीवद्ध ओहिणा आयेणहिं १
 विमलवाहण राय एव वइहिं- 'नो खलु तुम विमलवाहणे राया नो
 खलु तुम देवत्तेणे राया नो खलु तुम मत्तापउमे राया । तुम ण इओ तच्चे
 भवग्गहणे गोसाले नाम मरालिपुत्ते होत्या सम्मणायए, नाव छउमत्ते
 चैव कालगए । त जइ ते तदा सवाण्णभूइणा अणगारेण पशुणा वि-
 25 होरुण सम्म सद्धिय समिय तिइक्किय आहियासिय जइ ते तदा

सुनवत्तेण अणगारेण जाव अहियासिय, जइ ते तदा समणेण
मगय्या महारारेण पभुणा त्रि जाव अहियासिय, त नो खलु ते अहं
तहा सम्म सहिस्स जाव अहियासिस्स। अहं ते नगर सह्य सरह
ससारहिय तरेण तेण एगाहच्च कृडाहच्च भासरासि करेजामि ॥

४६ तए ण से विमलवाहणे राया सुमगलेण अणगारेण एउ वुत्ते 5
समाण आसुरुत्ते जाव भित्तिमिसेमाणे सुमगल अणगार तच्च पि
रहसिरेण नोटावेहिइ। तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण
रणा तच्च पि रहसिरेण नोटाधिप समाणे आसुरुत्ते जाव
भित्तिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोसुहइ, ७ तेयासमुग्धाएण
समोहभिहिइ, ९ सत्तट्ट पयाइ पच्चोसकिहिइ, ९ विमलवाहण राय 10
सह्य सरह ससारहिय तरेण तेण जाव भासरासि करेहिइ ॥

४७ सुमगले ण भते, अणगारे विमलवाहण राय सह्य जाव
भासरासि करेत्ता कहिं गच्छिउहिइ कहिं उयवज्जिहिइ। गोयमा
सुमगल अणगारे ण विमलवाहण राय सह्य जाव भासरासि करेत्ता
वट्ठिं उट्ठमदसमदुवालय जाव विचित्तेहिं तवोक्कम्मेहिं अप्पाण 15
भावमाण वट्ठिं यासाइ सामण्णपरियाग पाउणिहिइ, १ मासियाए
सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए जाव छपत्ता आलोइयपडिक्कते
समाहिपत्ते उट्ठ चदिम जाय गेविज्जविमाणायाससय धीईउत्ता
सउट्ठसिद्धे मदाग्निमाणे देउत्ताए उयवज्जिहिइ। तत्थ ण देवाण
अजहम्मणुक्कासण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता। तत्थ ण 20
सुमगलस्म पि देउत्ता अजहम्मणुक्कासण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई
पण्णत्ता। से ण भते, सुमगले देवे ताओ देवलोमाओ जाव
मदाग्निदेवे यास निज्झिहिइ जाव अत काहिइ ॥ (सू० ५५९)

४८. विमलवाहणे ण भते, राया सुमगलेण अणगारेण सह्य जाव
भासरासिक्कप समाण कहिं गच्छिउहिइ, कहिं उयवज्जिहिइ। गोयमा. १.

- विमलवाटणे ण शया सुमगलेण अणगारेण सहए णव भासरिसाकए
 समाणे अहेसत्तमाए पुट्ठीए उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए
 उववज्जिहिइ । से ण तओ अणतर उवट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिइ ।
 से ण तत्थ सत्थयज्जे दाट्ठकक्कीए कालमासे काल किच्चा दोच्च
 ० पि अहेसत्तमाए पुट्ठीए उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए
 उववज्जिहिइ । से ण तओ अणतर उवट्टित्ता दोच्च पि मच्छेसु
 उववज्जिहिइ । तत्थ वि ण सत्थयज्जे णव किच्चा छट्ठीए तमाए
 पुट्ठीए उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।
 से ण तओरितो णव उवट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिइ ।
 10 तत्थ वि ण सत्थयज्जे दाट्ठ नार दोच्च पि छट्ठीए तमाए पुट्ठीए
 उक्कोसकाल णव उवट्टित्ता दोच्च पि इत्थियासु उववज्जिहिइ ।
 तत्थ वि ण सत्थयज्जे णव किच्चा पक्कमाए भूमण्णमाए पुट्ठीए
 उक्कोसकाल णव उवट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिइ । तत्थ वि ण
 सत्थयज्जे णव किच्चा दोच्च पि पक्कमाए णव उवट्टित्ता दोच्च
 15 पि उरएसु उववज्जिहिइ णव किच्चा चउत्थीए पक्कण्णमाए पुट्ठीए
 उक्कोसकालट्टियसि णव उवट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिइ । तत्थ वि
 ण सत्थयज्जे तहेः णव किच्चा दोच्च पि चउत्थीए पक्क णव
 उवट्टित्ता दोच्च पि सीहेसु उववज्जिहिइ णव किच्चा तट्ठाए
 थालुयण्णमाए पुट्ठीए उक्कोसकाल णव उवट्टित्ता पक्कीसु उव-
 20 वज्जिहिइ । तत्थ वि ण सत्थयज्जे णव किच्चा दोच्च पि तट्ठाए
 थालुय णव उवट्टित्ता दोच्च पि पक्कीसु उववज्जिहिइ णव किच्चा
 दोच्चाए सक्करण्णमाए णव उवट्टित्ता सिरीसएसु उववज्जिहिइ ।
 तत्थ वि ण सत्थ णव किच्चा दोच्च पि दोच्चाए सक्करण्णमाए णव
 उवट्टित्ता दोच्च पि सिरीसवेसु उववज्जिहिइ णव किच्चा इमीसे
 रणण्णमाए पुट्ठीए उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए उव-

यज्जिहिह्वा नाव उग्रद्विक्ता मर्मीसु उववज्जिहिह्वा । तत्थ वि ण सत्थयज्जे
 नाव किच्चा असर्मीसु उग्रज्जिहिह्वा । तत्थ वि ण सत्थयज्जे नाव
 किच्चा दोच्च पि इमीसे रयणप्पमाण पुट्ठीए पलिओयमस्स
 असत्थेज्जइमागद्विइयमि नरगसि नेरइयत्ताए उग्रज्जिहिह्वा । से ण
 सओ नाव उग्रद्विक्ता जाइ इमाइ रत्थयविहाणाइ भवति, ण जहा 5
 चम्मपक्खीण, लोमपक्खीण, समुग्गपक्खीण, विययपक्खीण, तेसु
 अणेगसयसत्थस्सत्तुत्तो उद्वाइत्ता ॥ तत्थेय ॥ भुज्जो ॥ पच्चायाहिह्वा ।
 सत्थय वि ण सत्थयज्जे वाटयक्खीण कालमासे काल किच्चा जाइ
 इमाइ भुयपरिस्सप्पविहाणाइ भवति, त जहा- गोहाण, नडलाण, जहा
 पन्नवगाए नाव नाहगाए चउप्पाइयाण, तेसु अणेगसयसत्थस्सत्तुत्तो 10
 सन जहा सत्थराण नाव किच्चा जाइ इमाइ उरपरिस्सप्पविहाणाइ
 भवति त जहा- अहीण, अयगराण, आत्तालियाण, मटोरगाण, तेसु
 अणेगसयसत्थस्स नाव किच्चा जाइ इमाइ चउप्पइविहाणाइ भवति
 त जहा- ण्णातुराण, इरुराण, गड्डीपक्काण, सणत्पक्काण, तेसु अणेगसय-
 सत्थस्स नाव किच्चा जाइ इमाइ जल्यरविहाणाइ भवति, त जहा- 15
 मच्छाण, कच्छमाण नाव सुसुमारण, तेसु अणेगसयसत्थस्स नाव
 किच्चा जाइ इमाइ चउरिंदियविहाणाइ भवति, ण जहा- अधियाण,
 पौत्तियाण, जहा पन्नवगाए नाव मोमयक्कीडाण तेसु अणेगसय
 नाव किच्चा जाइ इमाइ तेइदियविहाणाइ भवति, त जहा- उवधियाण
 नाव हत्थिसाटाण तेसु अणेग नाव किच्चा जाइ इमाइ धइदिय- 20
 विहाणाइ भवति त जहा- पुलकिमियाण नाव समुदत्तिकराण तेसु
 अणेगसय नाव किच्चा जाइ इमाइ उणस्सद्विहाणाइ भवति, त जहा-
 रुक्खाण गुच्छाण नाव कुट्ठाण, तेसु अणेगसय नाव पच्चायाइस्सइ ।
 उस्सन्न च ण कट्ठयक्कसु कट्ठयक्कीसु सत्थय वि ण सत्थयज्जे
 नाव किच्चा जाइ इमाइ चाउक्काइविहाणाइ भवति त जहा- पारिण- 25

चायाण जाव सुद्धचायाण, तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा जाइ इमाइ तेउक्काइयविदाणाइ भरति, त जहा- इमाणाण जाव सूरकतमणि-
 निस्सियाण तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा जाइ इमाइ आउक्काइय-
 विदाणाइ भरति, त जहा- उस्साण जाव खातोदगाण तेसु अणेगसय जाव
 ॥ पच्चायाइस्सइ । उस्सञ्च च ण खारोदणसु खातोदणसु, सत्तथ त्रि ण
 सत्थयज्जे जाव किच्चा जाइ इमाइ पुट्टयिक्काइयविदाणाइ भरति, त
 जहा- पुट्टवीण सक्कराण जाव सूरकताण, तेसु अणेगसय जाव पच्चाया-
 इइ । उस्सञ्च च ण खरघायपुट्टयिक्काइयसु, सत्तथ त्रि ण सत्थयज्जे
 जाव किच्चा रायगिदे नयरे वाहिं खरियत्ताए उवयज्जिहिइ । तत्थ
 10 त्रि ण सत्थयज्जे जाव किच्चा बोच्च वि रायगिट नयरे अतो खरियत्ताए
 उवयज्जिहिइ । तत्थ त्रि ण सत्थयज्जे जाव किच्चा इहेय जमुद्धीवे
 कीवे भारहे वासे जिंजमिरिषायमूले वेभेले ननिरेसे माएणडुलसि
 वारियत्ताए पच्चायाइइ । तए ण त वारियअम्मावियरो उम्मुक्कवाए-
 भाव जौद्धणगमणुप्पत्त, पडिरुएण सुक्केण, पडिरुएण विणएण,
 1० पडिरुएयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए वलइस्सति । सा ण तस्स भारिया
 भविस्सइ इट्ठ । कता जाव अणुमथा, भड्करदगसमाणा तेहकेला
 इव सुत्तगोविया, खेलपेडा इव सुत्तपरिगाहिया, रयणकरद्वओ विय
 सुत्ताराविया, सुत्तगोविया, मा ण सयि, मा ण उणह जाव
 पस्सिस्सहोयसग्गा फुत्तनु । तए ण सा वारिया अज्जया कयाइ मुत्तिणी
 20 ससुरकुलाओ कुलघर निज्जमाणी अतरा द्वग्गिजालाभित्था
 कालमासे फाल किच्चा दाहिणिट्ठेसु जग्गिजुमारेसु देवेसु देवत्ताए
 उवयज्जिहिइ ॥

४९ से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्ठित्ता माणुस्स विगट
 लभिहिइ, २ केउल बोहिं बुज्जिहिइ, १ मुडे भत्तिता अगाराओ
 25 अणगारिय पवइहिइ । तत्थ वि य ण त्रियहियसामण्णे कालमासे

काल किञ्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवताए उवज्जि-
हिइ। से ण तओहिंतो नाव उव्वट्ठित्ता माणुस विग्गह त चेव पाव
तत्थ णि ण विराहियमामण कालमासे नाव किञ्चा दाहिणिल्लेसु
नागकुमारेसु देवेसु देवताए उवज्जिहिइ। से ण तओहिंतो अणतर,
एव एण अभिलेखेण दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु, एव विज्जु- 5
कुमारेसु, एव अग्गिकुमारवज्ज नाव दाहिणिल्लेसु यणियकुमारेसु।
से ण तओ नाव उव्वट्ठित्ता माणुस्स विग्गह लभिट्ठि नाव विराहिय-
सामण जोइणिएसु देवेसु उवज्जिहिइ। से ण तओ अणतर
चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिट्ठि नाव अविराहियसामणे
कालमासे काल किञ्चा सोहम्मे कप्पे देवताए उवज्जिहिइ। स ण 10
तओहिंतो अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिट्ठि, कवल
वाहिं पुज्जिहिइ, तत्थ णि ण अविराहियसामणे कालमासे काल
किञ्चा इत्ताणे कप्पे देवताए उवज्जिहिइ। से ण तओ चइत्ता
माणुस्स विग्गह लभिट्ठि। तत्थ णि ण अविराहियसामणे काल
मासे काल किञ्चा मणकुमार कप्पे देवताए उवज्जिहिइ। से ण 15
तओहिंतो एव जहा मणकुमारे तहा उगलेण, महासुक्के, आणण
आरणे। से ण तओ नाव अविराहियसामण कालमास काल किञ्चा
मण्डसिद्धे महाप्रमाणे देवताए उवज्जिहिइ। से ण तओहिंतो
अणतर चय चइत्ता महाप्रदहे धासे जाइ इमाइ कुलाइ भगति-
अट्ठाइ नाव अपरिभूयाइ तट्ठपुमारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ। 20
एव जहा उव्वट्ठित्ता दण्डवत्तवया न उव्वट्ठित्ता निरदग्गा भाणियवा
नाव केवलवरणाणइमणे समुप्पज्जिहिइ॥

५० तए ण स दट्ठप्पइने केवली अप्पणो तीअद्ध आमाणहिइ,
२ समणे निग्गये सद्धोवेहिइ, ३ एव चइहिइ-एव एलु अह
अज्जो, इओ चिच ४ गोसाल नोमं मसालिपुत्ते होत्था, ५५

समणधायणं चारुमुत्तमं चैव कालगणः । तन्मूलगं च न अह
 अज्ञो, अणाय अणयदग्ग दीदमद्व चाउरतससारकतारं
 अणुपरियट्ठिणं । त मा ण अज्ञा तु म केइ भउउ आयरियपडिणीयणं,
 उअज्झायपडिणीयणं आयरियउअज्झाययाणं अयग्नकारणं अयणकारणं
 5 अकित्तिकारणं । मा ण स वि षयं चैव अणाय अणयदग्ग च
 ससारकतारं अणुपरियट्ठिणं जहा ण अह । तप ण स समणा निग्गथा
 वट्ठप्परसस केवलस्स अत्थियं पयमद्वं सोद्या निसम्मं भीया तथा
 तत्थिया ससारमउत्थिग्गं वट्ठप्परस केवलं धरिहंति नमसिदिंति, ९
 तत्थं ठाणस्स आलारपट्ठिंति निदिंति चैव पडियाज्झिहंति । तप ण
 10 स वट्ठप्परस केवली धरि चोसाइ कवलपरियाणं पाउणिहंति, १०
 अप्पणी आउसेस जाणत्ता भत्तं पट्ठयक्करोहिं, एवं अहा उअरए
 धानं सउत्तकलाणमतं काहिं ॥ (सू० ५६०)

संभते ! संभते ! सिं जायंति ॥

तेनिसग्गं समत्ता ।

समत्तं च पन्नरसमं सयं पक्कसरयं ॥

श्रीमद्भगवतीसूत्रम् ।

(व्याख्यापज्ञप्ति)

अथ पञ्चदश गोशालकाण्य शतम् ।

श्रीमच्चन्द्रकुलाम्बरनभोमणिश्रीमदभयदेवमूरिमणीता वृत्तिः ॥

१५ गाशालकदासे षड्विंशचरसमागम-सूत्र ५३९

‘वारयान चतुर्दशतम्, अथ पञ्चदशमारम्यते । तस्य चाय पूरणं तद्व
अभिसम्बन्ध — अनन्तराशत क्वली रत्नप्रभादिकं वस्तु जानाति इत्युक्तं, तत्-
परिज्ञानं च आत्मसम्बन्धं च यथा भगवता श्रीमन्महार्घरेण गीतमाय जाविभाविन
गाशालकस्य स्वशिष्याभामस्य नरकाविगानि अधिकृत्य तथा अनन उच्यते
इति एवसम्बन्धस्य अस्य इदं आदिमूनम् —

‘तेण’ मित्यादि, ‘मरास्तिपुत्ते’ति मरुत्व-यभिधानमङ्गस्य पुन
‘चउयीसनासपरियाण’ति चतुर्विंशतिवचनमागमनन्यापयाय, ‘द्विंशचर’
ति दिश-मरा अस्ति—यान्ति मय त भगवता वय शिष्या इति द्विकचरा
देशाया वा, दिक्चरा भगवच्छिष्या वा वस्तीभूता इति टीकाकार, ‘पासा
वच्चिञ्ज’ ति चूर्णिकार, ‘अतिय पाठमविज्ज’ ति समीपमागता, 5
‘अट्टनिह पुव्यगय मग्गदसम’ति अष्टनिधम्-अष्टप्रकार निमित्तमिति शेष,
तच्चेद-दिय १ औत्पात २ जान्तरिम ३ माम ४ जाङ्ग ५ स्वर ६ लक्षण ७ यत्तन ८
चोति, पूवगत-पूर्वाभिधानश्रुतविशेषम-पगत, तथा मार्गो-गीतमायानुत्पन्नागलक्षणा
सम्भावयत, ‘दसम’गति अत्र नवमदशस्य लक्षणस्य दर्शनानवमदशनाविति दृश्य,
ततश्च मार्गो नवमदशमो यत्र तत्तथा, ‘सणहि’ ~ स्वर २ स्वरतीय २ 10
‘मइदसणोहि’ ति मतं बुद्धमत्या वा दशनानि-प्रमेयस्य परि-उदनानि मनि
दशनानि ते, निज्जृहंति’ति निरूपयति पूर्वलक्षणश्रुतपयाययूथान्निधायन्ति-

- उद्धरन्तीत्यर्थः, 'उद्धटाइसु' ति उपस्थितवन्त आभिनवन्त इत्यर्थः
 'अट्टगस्म' ति अण्भदस्य, 'केणइ' ति क्वचित्—तथाविधजनानिदिन
 स्वप्नेण, 'उत्तोयमेत्सेण'ति उद्देशमात्रेण, 'इमाइ छ अणइक्रमणिज्जाइ'
 नि इमानि पट्ट अननिक्रमणीयानि—यभिचारयितुमशक्यानि, 'वागरणाइ'ति
 5 पुण्न सता यानि 'याक्किचन्त—अभिधीयन्ते तानि 'याकरणानि पुहुपायोंपपोरि-
 त्ताथैतानि पडुक्कानि, 'अथथा नष्टमुष्टिचिन्तादूसाप्रभृती'यन्यान्यपि बहूनि
 निमित्तगोचराभरन्तीति॥ 'अजिणे जिणप्पइज्जाणि' ति अजिन-
 अशीतराग सन् जिनमात्मान मरुपण लयनात्येवशीतो जिनप्रलपी, एवमन्यान्यानि
 पणानि वाच्यानि, नरम् चरन्—पूनाह, केवली—परिपूर्णशानादि, किमुक्ते
 10 भवति ?— 'अजिणे' इत्यादि । (सू ५३९)

१५ मोक्षालकशस्ते मोक्षालकोत्थानपरियानिकम् सू ५४०

- 'एव जहा निइयसए नियहुइसए' ति द्वितीयशतस्य पञ्चमाद्वैश्वे
 'उद्धाणपरियाणिय'ति परियान—निर्विध-यतिरूपरिममन तदेव पारियानिकं—
 धरितम् उत्थानात्—अमन आरम्भ पारियानिक उत्थानपारियानिक तत्पारि-
 1० कथित भगवद्विरिति गम्यते । 'मस्से'ति मत्तु —चित्रफलक—यप्रकार भिमाक-
 निशय, 'सुसुमाल' इह यावत्करणादेव इदम् — 'सुसुमालपाणिपाप
 लक्ष्मणप्रजणमुणोववेण' इत्यादि । 'रिद्धत्थिमिय' इह यावत्करणादेव
 इदम्—'रिद्धत्थिमियसमिद्धे पमुइयजणजाणयण' इत्यादि, 'पारया
 तु पुनन्त, 'चित्तफलमहत्थगण' ति चित्रफलक इस्ते गन यस्य स तथा,
 20 'पाहिण्ण' ति एकमात्मान प्रति प्रत्येक गितु फलकादिभित्तिर्यर्थः । (सू ५४)

श्रीवीरेण मोक्षालसगम —सू ५४१

'अगास्वासमज्जे वसित्त' ति अगास्वाप्तमज्जे वसित्त—महत्त्वमन मुष्य—आत्मेय-

'एव जहा भावणाए' ति आचारद्वितीयधृतस्कन्धस्य पञ्चदशोऽध्ययने,

अनन चद सूचित — ‘समत्तपद्धते नाह समणो ह्येह अम्मापियरामि
जीयते’ ति समाप्ताभिग्रह इत्यर्थ, ‘चिच्छा हिरण्ण चिच्छा सुउण्ण
चिच्छा धल’ इत्यादीनि, ‘पट्टम वास’ ति विभक्तिपरिणामात् प्रवज्याप्रति
दंष्ट्रे प्रथमे वर्षे, ‘निस्साण’ ति निघाय निघा कृत्वत्यर्थ, ‘पट्टम अतरा
घास’ ति विभक्तिपरिणामादेव प्रथमऽन्तर अवसरा वर्षस्य—वर्षेय्यासावन्तरवर्ष, 5
अथवाऽन्तरेऽपि—जिगमिपतयेनमप्याप्यापि यत्र सति साधुभिरवश्यमारासो विधी
यते सोऽन्तरावासो—वर्षाकालस्तत्र, ‘वासायासं’ ति वषासु वाम — चातु—
मासिकमवस्थान वर्षावासस्तमुपागत —उपाभिन । ‘वोच्च वास’ ति द्वितीये
वर्ष, ‘तंतुनायसाह’ ति कुविन्दशाला, ‘अजलिमउल्लियहत्थे’ ति अज
लिना मुकुल्लिती — मुकुलाकारौ वृत्तौ इत्तौ येन स तथा, ‘द्वयसुद्धेण’ ति 10
द्वय—ओदनादिक शुद्ध—उद्भवादिदोषरहित यत्र दाने तच्चथा तन, ‘वायग
सुद्धेण’ ति वायक शुद्धो यत्राशसादिदोषरहितत्वात् तच्चथा तेन, एवमितरद्वि,
‘सिचिरेण’ ति उक्तलक्षणैर्न विविधेन, अथवा विविधेन कृतकारितानुमतिभेदेन
निरुणशुद्धेन—मनोवाक्यायशुद्धेन, ‘यसुहारा धुट्ठ’ ति वसुधारा—द्रवरूपा धारा
वशा, ‘अहो धाण’ ति अहोरात्रो विस्मये, ‘कयत्थे ण’ ति कृतार्थ —
कृतस्वमयोगेन, ‘कयलक्खणे’ ति कृतफलवृत्तवर्ण इत्यर्थ, ‘कया ण लोण’ 15
ति कृतो शुभफलो अथवे समुदायोपचारात् लाङ्गी—इहलोकरपरलोको, ‘जम्म—
जीवियफले’ ति जन्मनो जीवित—वस्य च यत्फल तच्चथा, ‘तहारूवे साहु
साहुरूवे’ ति तथारूपे तथाविधे अविज्ञातवताविशेष इत्यर्थ, ‘साधो’ भ्रमणे
‘साधुरूपे’ साध्वाकारे, ‘धम्मतेजसि’ नि शिष्यादिग्रहणार्थमपि शिष्यो
भवतीत्यत उच्यते—धर्मान्तेवासी, ‘स्रज्जमविहीण’ ति स्रज्जखायादिरक्षण— 20
भोजनप्रकारेण, ‘सज्जकामगुणिण’ नि सर्व कामगुणा — अभिलाषविषय—
भूता रसादय सज्जाता यत्र तत्सर्वकामगुणिर्न तेन, ‘परमसुद्धेण’ नि परमानेन—

- क्षेत्र्या, 'आयामेत्य' ति आचामितवान्, तद्भाजनदानदार्णोच्छ्रिता-
सम्पादनेन तच्छुद्धयमाचमनं कारितवान् भोजितवानिति तात्पर्यात् । 'सर्व-
तरवाहिरिण' ति सहाय्यतरणविभागेन बाह्येन च यत्तत्तथा तत्र, 'मग-
णगदेसण' ति अन्वयतो मामणव्यतिरेकतो गवेपणततश्च समाहारद्वन्द्वः ।
■ 'सुखं य' ति श्रूयत इति श्रुति-शब्दरता, चक्षुषा किल दृश्यमानाऽथ दाम्बेन
निश्चीयत इति श्रुतिग्रहण, 'सुखं च' ति क्षयणं ह्यति-छीतव्यं ताम्, एषाऽ-
प्यदृश्यमनुभ्यादिगमिका भवतीति गहीता, 'पवासं च' ति प्रवाप्ति-वार्त्ता,
'साहियाओ' ति परिधानवस्त्राणि, 'पाहियाओ' ति उत्तरीयवस्त्राणि,
इति 'भहियाओ' ति दृश्यते तत्र भण्डिका-रन्धनादिभाजनानि,
10 'माहण आयामेह' ति शास्त्रिकादीनर्थान् ब्राह्मणान् लम्बयति, शास्त्रिकादीन्
ब्राह्मणेभ्यो ददातीत्यर्थः, 'सुखं च' ति सह उत्तराष्ट्रेण सोत्तराष्ट्र-सहस्रभुक्
यथा भवतीत्येव, 'सुखं' ति सुखं कारयति नापितेन, 'पणियभूमिण' ति
पणितभूमौ-भाण्डविश्रामस्थाने, प्रणतभूमौ वा-मनोऽभूमौ, 'अभिसम-
न्नापण' ति मिलित, 'एचमट्ट पडिसुणेमि' ति अभ्युपगच्छामि,
15 यच्चैतस्यायोग्यस्याप्यभ्युपगमनं भगवत्तत्तदधीनरागतया परिचयनपत्स्नेहगर्भा
नुकम्पासद्भावात् छान्दस्यतयाऽनागतदोषानवगमादवश्यभाषित्वाच्चेतस्यार्थस्येति
भावनीयमिति । 'पणियभूमिण' ति पणितभूमेराभ्यः प्रणतभूमौ वा-मनोऽभूमौ
विहृतवानिति योगः, 'अणिच्छजागरिण' ति अनित्यचिन्तां कुर्वन्निति
वाक्यशेषः । (सू. ५४१)

तिलस्तम्बाधिकार — सू. ५४२

'पदम सरयकालसमयसि' ति समयभाषया मागर्शापरीक्षे शरदमि कीयते,
तत्र प्रथमशरत्कालसमये मागर्शाप, 'अप्यवुद्धिकायसि' ति अल्पशब्दस्य
अभाववचनत्वाद्विद्यमानवर्ष इत्यर्थः, अ-ये तु अश्वयुजातिर्को शरदित्याहुः,

अन्यवृष्टिकापत्वाच्च तत्रापि निहतां न दूषणमिति, एतच्चासद्भूतमेव, भगवतोऽप्यवश्यं पशुपणस्य कृत् यत्नं पर्युपणाकल्पेऽभिहितत्वादिति । 'हरियगरेरि ज्जमाणे' ति हस्तिक इति कृत्वा, 'रेरिज्जमाणे' ति अतिशयन राजमान इत्यर्थः । 'तए ण अह गोयमा' गोमाल मरालिपुत्त एव वयासि' ति, इह यद्भगवत् पूर्वफाल्गुनप्रतिपन्नमोनाभिग्रहस्यापि मध्युत्तरदानं तदंकादिकं 5 वचनं सुक्कलमित्येवमभिग्रहणस्य संभाव्यमानत्वेन न विरुद्धमिति, 'तिलसगलियाए' ति निलसलियाया, 'मम पणिहाए' ति मा प्राणिघाय-मामाश्रित्याय मिथ्यायादी भवत्विति विकल्प कृत्वा, 'अ-भमइलए' ति अभ्ररूप धारो-जलस्य दलिक-कारणमप्रवादलं, 'पतणतणायइ' ति मरुर्धेण तणतणायने गजतीत्यर्थः, 'नट्ठोदग' वि नात्युदकं यथा भवति, 10 'नाइमट्टिय' ति नानिरुद्धं यथा भवतीत्यर्थः, 'पविरलपण्णुसिय' ति पविरला मस्पृशिका-विश्रुता यत्र तत्तथा, 'रयरेणुविणासण' ति रजो-वानोत्पादित योमवर्ति, रेणवश्च-भूमिस्थितपाशवस्तादिनाशन-तदुपशमकं, 'सलिलोदगरास' ति सलिला-शीतादिमहानयस्तासामिव यदुदङ्-रसा दिगुणसाधन्यादिति तस्य यो वर्षं स सलिलोदकवपास्तस्त, 'बद्धमूले' ति 15 बद्धमूलं सन्, 'सत्थेय पइट्टिए' ति यत्र पतितस्तत्रैव प्रतिष्ठितः । (सू. ५४२)

सू. ५४३-४६ वैश्यायनतेजोलेइया । पउट्टपरिहार । तेजोलेइया ।
धीरोपर्यमप ।

'पाणभूयजीरससत्तइयट्टयाए' ति प्राणादिषु सामान्यं या दया सेनाथ प्राणादिद्वयाथसंज्ञावस्तच्चा तथा, अथवा पशुपदिका एव प्राणानामुच्छ्वासादीना 20 भावात् प्राणा भवनधमकत्वाद्भूता उपयोगलक्षणत्वाज्वात्वा सत्त्वोपपेतत्वात्सत्त्वा स्तुत कर्मधारयस्त्वर्थनायै, चश-द पुनरर्थः, 'सत्थेय' ति शिरःप्रभृतिरे,

‘महया अमरिस’ ति महान्तममयम्, ‘एष वापि’ ति एष चेति
महापद्मोपद्वयमानलोपचिह्नम्, अपीति समुच्चयः । (सू. ५४३-४६)

सू. ५४७-४९—आनन्दाय गोशालोक्तो वणिग्दृष्टान्तः ।

तेजशक्तिः । नोदनानिषेधः ।

‘मह उचमिथ’ नि मम सम्बन्धि महद्वा विशिष्ट-लोपम्यमुपमा इणन्तः ५
इत्यथ, ‘चिरार्थाय अद्वाप’ ति चिरमतीति काले, ‘उच्चाग्रय’
ति उच्चावचा-उत्तमानुत्तमा, ‘अत्यथि’ ति अत्यप्रयोजना, कुत एवम् ?
इत्याह—‘अत्यलुद्ध’ ति अत्यलुप्ता, अन एव ‘अत्यग्रेसिय’ ति,
अर्थगवणिगोऽपि कुत इत्याह—‘अत्यकग्रिय’ ति मासस्यथऽविचिच्छेच्छा,
‘अत्यपिद्यासिय’ ति अमाप्ताथविषयसंज्ञानतण्णा, यन एवमत एवाह— 10
‘अत्यग्रेसम्ययाय’ इत्यादि, ‘पणियमडे’ ति पणिन-‘पणहारस्तदर्थं
भाण्ड, पणिने वा-व्याणक तद्वै भाण्ड न तु भाजनमिति पणितभाण्ड,
‘सगडीसागडेण’ ति शकटयो-गन्त्रिका, शकटानां गन्त्रीविशेषाणां समूह
शकट, तत समाहाद-शोऽतस्तेन, मत्तपाणपत्थयण’ ति भक्तपानरूप यत्प
थ्ययन—दाम्बल तत्तथा, ‘अगामिय’ नि अग्रामिसं अग्रामिको वा— 15
अनभिलाषविषयभूताम्, ‘अणोहिय’ नि अविशमात्रलोपिस्मतिगहनत्वेना
विद्यमानोहा वा, ‘छिन्नाप्राय’ ति वच्छिन्नस्यार्थवोधात्रापत्ता, ‘दृष्टिमह’
ति दीर्घमार्गी दीर्घकाला वा, ‘किण्ह किण्होमास’ इह यावत्करणादिद
द्वय-‘नीलि नीलोमास हरिय हरिओमास’ इत्यादि, व्याख्या चास्य
प्राक्त्व, ‘महेग धम्मीय’ नि महातमेक वमकि, ‘वप्पुओ’ ति वप्पुपि 20
सरीराणि शिस्तपणित्यः, ‘अमुग्गयाओ’ ति अम्बुद्वयतान्यओद्वेनानि
वोच्चानीत्यर्थ, ‘अभिनिस्सटाओ’ ति अभिविधिना निमता सटा—
तद्वचनरूपा केशरिक्कपस्यवद् वेश तान्यभिनि शानि, इदं च तेषां

- उध्वगत स्वरूप अथ नियमाह—‘तिरिय सुसपगमहियाओ’ति ‘सुसपगमही तानि’ सुमन्तानि नानि विन्नीषणीयानि, अथ क्रियन्तानि ? इत्याह—‘अहे पन्नगद्धरूपाओ’ति सर्पाद्धेरूपाणि यादृश पन्नगस्योदरच्छिन्नस्य पुच्छत ऊर्ध्वीकृतमद्गमयो विन्नीषणमुपर्युपरि चानिश्चक्षण भवतीत्येव रूपं येषां तानि
- 5 तथा, पन्नगार्द्धरूपाणि चवणादिनाऽपि भवन्तीत्याह—‘पन्नगद्धसठाणसाठि याओ’ति भावितयेव। ‘ओराल उदगरयण आसाइस्सामो’ति अस्या यमभिप्राय—एवमिधममिगर्चे मिलेदक भवति बल्मीके चावश्यभाविनो गर्ता, अतः शिखरभेदे गर्तं प्रकट्ये भविष्यति तत्र च जल भविष्यतीति, ‘अच्छ’ति निमल, ‘पत्थ’ति पथ्य—रागोपशमहेतु, ‘जच्छ’ति जात्य सस्काररहित,
- 10 ‘तणुय’ति तनुक भुजगमियथ, ‘फालियवण्णाभ’ति स्फटिकवण-वदाभा यस्य तत्तथा, अत एव ‘ओराल’ति प्रधानम्, ‘उदगरयण’ति उदरमेव एतमुदरत्न उदकजाती तस्योत्कृष्टत्वात्, ‘वाहणाई पज्जाति’ति बलार्द्धादिवाहनानि पाययति, ‘अच्छ’ति निमल, ‘जच्छ’ति एकानिम, ‘तागणिज्ज’ति तापनीय तापम्ह, ‘महत्थ’ति
- 15 महाप्रयोजन, ‘महग्घ’ति महामूल्य, ‘महरिहं’ति महता याग्य, ‘विमल’ति विगताग-तुकमल, ‘निम्मल’ति स्वाभाविस्मलरहित, ‘निस्तल’ति निस्तलनतिवृत्तमित्यर्थ, ‘निक्कल’ति निष्कल नासादित्वादोपरहित, ‘घइर रयण’ति वज्राभिधानरत्न, ‘हियकामए’ति इह हित अपायाभाव, ‘सुहकामए’ति सुरा-आनन्दरूप, ‘पत्थकामए’ति पथ्यमिव पथ्य-आनन्दकारण वस्तु,
- 20 ‘आणुकपिण’ति अनुसम्पया चरतीत्यानुसम्पिक, ‘निस्मेयस्सिए’ति नि श्रेयस यमाममिच्छन्तानि नै श्रेयसिह, अधिकृतगणिजस्यैव गुणे वैधियुगपयोगमाह—‘हिए’त्यादि, ‘त होउ अलाहि पज्जत्त पे’ति, तत्—तस्माद् भवतु अलं पयाप्तमित्येते शब्दा प्रतिषेधवाच्यत्वेनैकार्था आत्पन्तिरुपनिषद्विपादनायमुक्ता, ‘जे’ति न—अस्माक, ‘सउउसगा

यावि' वि ॥ चायानि सम्भावनाय, 'उगमिस' नि दुर्जरविष, 'चडविस' नि दुष्करकायस्य क्षमिनि 'यापकविष, 'घोरविस' ति परम्परया पुरुषसहस्र स्थापि इननसमर्थाविष, 'मशविस' नि जम्बूदीपप्रमाणस्यापि देहस्य 'यापन-
हमयविष, 'अहकायमहाकाय' ति कायान् शेषादीनामनिबान्नोऽनिकायोऽन एव महाकायस्तन कर्मवाच्य, अथवा अनिकायानां म रे महाकायोऽनिकाय ॥
याद्यानाऽस्तं, 'मसिमूसाकालम' ति मयी-कजल, मूसा च- सुगन्धादि तावत्प्रधानविशेषेरेव ह्य फलको य स तथा त, 'नयगधिसरोसपुण्ण' ति तनविशेष-वृत्तिविषण्येवेण च पूर्णो य स तथा तम्, 'अजगपुजनिगर-
नगास' ति अजनपुत्रानां निगरस्येव प्रकाशो-दीप्तिर्यस्य स तथा त, पूर्व शब्दवणत्वनुक्तमिह तु दीप्तिरिति न पुनरुक्तमेतत्, 'रत्तच्छ' नि रत्नार्थ- 10
'जमठनुयल' च चलचलं तजीह' नि, जमल-सहवर्ति, युगल-द्वय, चञ्चलं यथा भगवते च ल-त्यो- अतिचपलयोर्निर्द्वयोर्यस्य स तथा त, प्राङ्मुखत्वाच्चेप
मास, 'घरणीतल' ऐणिमूय' ति घरणीतलस्य घेणीभूतो-यनिनाशिस्त कश्च-धविशेष इव य कृष्ण-वदीर्यत्वश्लक्ष्णपश्चाद्भागतत्वाद्भिनाधर्म्यत् स तथा ।
तम्, 'उक्कडफुडदुडिलजडुलककल्लडरियडफडाडोयरुणवच्छ' ति 15
उत्कटो बलवताऽ-येनाप्यसनीयत्वात्, रुडो-यकन प्रयत्नविहितत्वात्,
कुडिलो-यक्रमनस्वरूपत्वात्, जडिल-रुक्म्यदेशे केशरिणाभिवाहीना कमर-
सम्भवात्, रुकंशो निष्ठुगे बलवत्त्वात्, विकटो-विस्तीर्णा य रुकटाग्रेण —
फणासरम्भस्तत्करणे दक्षो य स तथा त, 'लोहागरधम्ममाणधमधमेत-
थोस' ति लोहस्येवाकरे ध्यायमानस्य-अग्निना ताप्यमानस्य धमधमाय 20
माना-धमधमेतिवर्णयन्किमितीत्याद्यन् घोष-शब्दो यस्य स तथा तम्,
'अणागलियचडति' वरोस' ति अनिगलित-अनिवारितोऽनाकलितो
वाऽप्रमेयश्चण्ड तीव्रो रोषो यस्य स तथा त, 'समुहियतुरियचउल
धमत' नि शुनो मुखं श्वमुखं तस्यैवाचरणं श्वमुखिका-क्रीयेकस्यैव

- भयं ता त्वरिन् च चपलमतिचङ्कुलतया धमन्त- शब्द कुन्तमित्यय,
 ‘मरसरसरसरस्स’ ति सर्पगतेऽनुकरणम्, ‘आदच्च निज्ज्ञायद्’ ति
 आदित्य पश्यति दृष्टिलक्षणविषय तीक्ष्णतार्थ, ‘समदमसोवगरणमायाय’
 ति सह भाण्डमारया-पणितपरिच्छेदेन उपररणमात्रया च ये ते तथा,
 5 ‘एगाहृच्च’ ति एरा एव आहत्या-आहनन प्रहाये यत्र मस्मीकरण
 तदेकादित्य तद्यथा भवत्येव, कथमिव ? इत्याह-‘कूटाहृच्च’ ति कृत्स्न-
 पापाणमयमारणमहायन्त्रस्येवाहत्या-आहनन यत्र तत् कृटादित्य तद्यथा
 भवतीत्येव, ‘परियाय’ ति पयाय-अवस्था, ‘किञ्चिज्जणसद्वसिलोग’
 ति, इह वद्ध-यारया-सर्पदिग्यापी साधुवाद फीनि, एकदिग्यापी वण,
 10 अर्द्धदिग्यापी शब्द, तत्स्थान एव श्लोक श्लाघेति यावत्, ‘सर्वेयमणुयासुरे
 लोए’ ति सह वृषेमनुजरासुरा-यो लोका-जीवलोक स तथा तत्र, ‘पुनति’
 ति ‘पुनते’ गच्छति, ‘मुहुगता’ इति वचनात्, ‘शुनति’ ‘शुनन्ति’
 व्याकुलाभवन्ति, ‘शुप-याकुलत्वे’ इति वचनात्, ‘शुवति’ ति क्वचित्तत्र
 ‘स्तुयन्ते अभिष्टुयन्त-अभिन-यन्ते, क्वचित् परिभ्रमन्तीनि दृश्यते, ‘यत्
 15 चेतदिति, एतदेव वदयति-‘इति खल्वि’ स्यादि, इतिशब्द परयत्त
 गुणानुवादनार्थ, ‘त’ ति तस्मादिति निगमन, ‘तत्रेण सेएण’ ति
 तपोजन्य तजस्तप एव वा तेन ‘तजसा’ तेजोलक्ष्यया, ‘जटा या घालेण’ ति
 यथैव ‘पालन’ भुजगन, ‘सारक्षसामि’ ति सरक्षसामि दाहभयात्,
 ‘सगोवयामि’ ति सगोपयामि क्षमम्यानप्रापणन । (सू ५४५-८९)

‘पशु’ ति प्रमविष्णुर्गोशालो मस्मरार्थि कर्तुम् ? इत्येक प्रश्न, प्रभुत्वं च
 दिधा-विषयमात्रापेक्षया तत्करणतश्चति पुन पृच्छति-‘निस्र एण’ मित्यादि,
 अनेन च प्रथमो विकल्प भूय, ‘समत्ये ण’ मित्यादिना तु द्वितीय इति,

‘पारितापणिय’ नि पारितापनिकीं कियो पुन कुर्यादिति । ‘अणमारण’
 नि सामान्यसाधूनां, ‘स्रतिक्कम्म’ ति क्षान्त्या-कोषनिग्रहण क्षमन्त इति
 क्षान्तिक्षमा, ‘येरण’ नि आचार्यादीनां वयं भुतपर्यायस्थविराणम् ।
 ‘पट्ठिचोयणाए’ ति तमनप्रतिकूलो बोदना कर्त्तव्योत्साहना प्रतिबोदना
 तथा, ‘पट्ठिसाहरण्णए’ ति तमनप्रतिकूलतया विस्मयार्थस्मरणा तथा, 5
 किमुक्तं भवति !-‘धम्मिएण’ मित्यादि, ‘पट्ठायारेण’ ति प्रत्युपचारेण
 प्रत्युपकारेण वा, ‘पट्ठायारेउ’ ति ‘प्रत्युपचारपटु’ प्रत्युपचार करोतु, एव
 प्रत्युपकारयतु वा, ‘मिच्छंति पट्ठियस्से’ ति मिथ्यात्वं म्लच्छद्म वा-अनायत्वं
 विशेषतः प्रतिपन्न इत्यर्थः । ‘सुट्ठु ण’ नि उपालम्भरचनम्, ‘आउसो’ ति
 हे आयुष्मन् !- चाम्रशस्तर्जविन ! ‘कासउ’ ति काश्यपगार्गीय ! 10
 ‘सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि’ ति सत्तम शरीरान्तरप्रवेशं करोमीत्यर्थः,
 ‘जेवि आइ’ नि जेऽपि च, ‘आइ’ ति निपातः, ‘अउरासीइ महाकप्प
 सयसहस्साइ’ इत्यादि गोशालकसिद्धान्तात् स्थान्यो, बुद्धैः अप्यनारयान-
 त्वात्, आइ च चूर्णिकारः — सदिद्धत्ताओ तस्स सिद्धतस्स
 न लुक्खिज्जइ’ ति, तथा पि शब्दानुसारेण द्विधिवुच्यते- यत्तु शरीरं 15
 महाकल्पशतमहस्राणि क्षणवित्त्वेनियोगः, तत्र कल्पा- कालविज्ञाया, ते च
 लोकप्रसिद्धा अपि भवन्तीति तद्व्यवच्छेदायमुक्तं महाकल्पा वक्ष्यमाण
 स्वरूपास्तथा यानि शतसहस्राणि-लक्ष्माणि तानि तथा, ‘सत्त दिव्वे’ ति सत्त
 ‘दिव्वान्’ देवभवान्, ‘सत्त सत्तूहे’ ति सत्त सयूथान्- निद्रायविशयान्,
 ‘सत्त सन्निगम्भे’ ति सन्निगम्भान्- मनुष्यगणसत्ती, एतच्च तमन 20
 मोक्षगामिना सप्तसन्तरा भवन्ति वक्ष्यन्ति चैवैतान् स्वयमवनि, ‘सत्त
 पउट्टपरिहारे’ ति सत्त शरीरान्तरप्रवेशान्, एते च सत्तमसन्निगम्भान्तर
 क्रमेणावसमाः, तथा ‘पचे’ त्यादाविद् सभाष्यतः, ‘पच कम्मणि सयसहस्साइ’
 ति कमणि-कमविषय कर्मणामित्यर्थः, पञ्च शतसहस्राणि लक्ष्माणि, ‘तित्ति

- य कम्मस्सि' ति ग्रीष्म कर्मभिदान्, 'स्रग्दत्त' ति 'क्षययैत्वा' अनिगद्य ।
 'से जहे' त्यादिना महाकल्पप्रमाणमाह, तत्र 'से जहा व' ति महाकल्प-
 प्रमाणवाक्योपन्यासाथ, 'जहिं वा पञ्जुत्तिय' ति यत्र गत्वा परि-
 सामसत्येन उल्लिखिता-उत्तरना समाप्ता इत्यर्थ, 'एस ण अद्द' ति एष
 5 गङ्गाया मार्ग, 'एवण गमापमाणेण' ति गङ्गायास्त-मार्गस्य चामेदाद्गङ्गा-
 प्रमाणेनेत्युक्तम्, 'एवामेव' ति उक्तनैव क्रमेण, 'सपुट्ठावरेण' ति सह
 पूरण गङ्गादिना यद्पर महागङ्गादि तत् सपूर्वापर तेन भावप्रत्ययलोपदर्शनात्
 सपूर्वापरतमेत्यर्थ । 'तास्सि बुविहे' इत्यादि, तासा गङ्गादीना गङ्गादि-
 गन्धालुकाकणादीनामित्यर्थ, त्रिविध उद्धार उद्धारणयैर्विध्यात्, 'सुद्धुम-
 10 धौविकलेयरे चेय' ति सूक्ष्मबोन्दीनि-सूक्ष्माकाराणि कलेयराणि-असङ्घघात
 रण्डीकृतवालुकाकणरूपाणि यनोद्धारे स तथा, 'वायरवौविकलेयरे चेय'
 ति [प्रधाप्रम् १४०] वायरबोन्दीनि-वाद्यकाणानि कलेयराणि-
 वालुकाकणरूपाणि यत्र तथा, 'ठप्पे' ति न वास्येय, इतरस्तु व्यापयेय
 इत्यर्थ, 'अवहाय' ति अपहाय-त्यक्त्वा, 'से कोट्टे' ति स कोष्ठा-
 15 मङ्गासमुद्रायात्मक, 'सीणे' ति क्षाण, स चारसपसद्भावेऽप्युच्यते,
 यथा क्षीणधान्य कौष्ठागारमत उच्यते, 'नीरण' ति नारजा स च तद्भूमि-
 गनरजमाममभावे उच्यते इत्याह-'निलेरे' ति निर्लेप, भूमिभित्त्यादिसंनिष्ठ
 निकृतालेपाभावात्, किमुक्त भवति ? 'निट्टिण' ति निट्टिन-निरवयवीकृत
 इति, 'सेत्त सरे' ति अथ तत्तावत्कालरण्ड सर-सरसञ्ज्ञा भवति
 20 मानससञ्ज्ञा सर इत्यर्थ, 'सरप्पमाणे' ति सर एवोक्तालक्षण प्रमाण-
 व्यप्यमाणमहाकल्पादेर्मान सरप्रमाण, 'महामाणसे' ति मानसीत्तर, यदुक्त
 चतुरशीतिमहाकल्पजनसहस्राणानि तत्प्रसरितम्, अथ सप्तानां दिव्यादीनां
 प्रत्यणयद्-'अर्णताओ सज्जूहाओ' ति जनन्नगविसमुदायरूपाभिरायात्,
 'चय चइत्त' ति चय चयुक्ता-व्यजन कृत्वा, चय वा देह, 'चइत्त' ति

त्यक्त्वा, 'उपरिष्ठे' ति उपरितनमध्यमाधस्तनानां मानसानां सद्भावात्
तद् य-यवच्छदायोपरितन इत्युक्त, 'माणसे' ति मद्भादिप्ररूपणत प्रागुक्त
स्वरूपे सरसि सर प्रमाणायुष्कयुक्त इत्यर्थ, 'सज्जूहे' ति निनायविशये द्व, 'उव-
च्चज्जइ' ति प्रथमो द्वि-यभव सज्जिगभसङ्ख्यासूत्रात् एव, एव त्रिषु मानसेषु
सयूथग्रायसयूथसहितेषु चत्वारि सयूथानि त्रयश्च द्वभवा, तथा 'मानसोत्तरे' 8
ति महामानस पूषाक्तमहारूपप्रमिनायुष्कवाति, यच्च प्रागुक्त चतुरशीतिं महो
कल्पान् शतसहस्राणि क्षपयित्वति तत्प्रथममहामानसापक्षयेति द्रष्टव्य, अन्यथा
त्रिषु महानानसषु बहुतराणि तानि स्युरिति, एनेषु चोपरिमादिभेदात् त्रिषु मानसोत्त
रपुत्रीण्यव सयूथानि त्रयश्च द्वभवा, आदितस्तु सप्त सयूथानि पद् च द्वभवा,
सप्तमद्वनभवस्तु गङ्गालोक, स च सयूथं न भवति, सूने सयूथत्वेनानभिहितत्वादिनि, 10
'पाइणपडीणायण उदीणइहिणयिथिण्णे' ति इहायामनिष्क्रमभयो
स्थापनामानत्वमय-त-य, तस्य प्रतिपूणच द्रवस्थानसंस्थितत्वेन तयास्तुल्य
त्वादिति, 'जहा ठाणपण' ति गङ्गालोकस्वरूप तथा वाच्यं यथा 'स्थान
पद्' प्रज्ञापनाद्वितीयप्रकरणे, तच्चेव 'पडिपुण्णचदसत्ताणसठिण अचि
मालीभासरसिप्पमे' इत्यादि। 'असोगवडेंसण' इत्यत्र यावत्तरणात् 15
'सत्तिपण्णरहसण चपमरडेंसण चूयमरडेंसण मज्जे यधमलौयमरडेंसण'
इत्यादि वृत्त्य, 'सुकुमालगमइलण' ति सुकुमारकथासा भद्रश्च-भद्रवृत्ति
रिति समास, लकाररुद्धारी तु स्वार्थिकाविति, 'मिउण्डलकुचियकेसण'
ति मदन कुण्डलमि-दभादिकुण्डलकमिव कुञ्चिताश्च केशा यस्य स तथा,
'मट्टगडतलकण्णपीटण' ति मृगगण्डतले कणपीठके-कणाभरणविशयो 20
यस्य स तथा, 'देवकुमारसप्पमण' ति देवकुमारवत्तमभ देवकुमारममानमभो
वा य स तथा, रुशब्द स्वार्थिक इति, 'कोमारियाण पन्नज्जाण' ति
कुमारस्येय कोमारी नव कीमारी तस्यां प्रव-याया विषयभूतार्था, कृत्यान्-बुद्धि
निलेभ इति योग, 'अरिद्धकण्णण चव' ति कुशुनिशङ्कायाऽरिद्धकर्ण

—अयुत्पन्नमतिस्त्वित्यर्थः । ‘एणेज्जम्से’ त्यादि, इहेणकादय एव नामतोऽभिहिता द्वी पुनरन्त्यो पितृनामसन्निताविनि । ‘अल धिर’ नि अत्यर्थं स्थिरविवक्षितकालं यावद्व्यवस्थायिनात्, ‘धुव’ ति ध्रुव तद्गुणानां ध्रुवत्वात्, अत एव ‘धारणिज्ज’ ति धारयितुं योग्यम्, एतदेव भावयितुमाह—‘सीए’ इत्यादि, एवधूतं च तत् कुत ? इत्याह—‘धिरसघयण’ ति अविपटमानसहननमित्यर्थः, ‘इतिकहु’ ति ‘इतिइत्या’ इतिहतास्तन्नुप्रगिरामाणि ।
(सू. ५५०)

सू. ५५१—५६ स्तेनहृष्टान्तः । आक्रोशः । तेजोलेस्यामोचनम् ।

गोदाहलेतेजोलेस्याशक्तिः धरमाप्रकमयपुलागमश्च ।

10 सम्यक्त्वोत्पादः । तनुपासरुक्त नीहरणम् ।

‘गहु य’ ति गतं श्वभ्र, ‘हरिं’ ति गगानादिकृतध्रुविवरविशेष, ‘दुग्ग’ ति दुःसगम्य वनगहनादि, ‘निस्स’ ति निम्न शुष्कतर प्रभृति, ‘पय य’ ति प्रतीत, ‘प्रिसम’ ति गतवापाणादियाकुलम्, ‘एणेण मए’ ति एकेन महता, ‘तणसूएण य’ ति ‘तणसूवेन’ तणावण, ‘अणावरिण’ ति अनावरो
15 सावावरणस्याल्पत्वात्, ‘उवलभसि’ ति उपलम्भयसि वृक्षवृक्षीत्यर्थः, ‘त मा एव गोसाल’ ति इह कुर्विनि शेष, ‘मारिहासि गोसाल’ ति इह च व कहुमिति शेष, ‘सच्चवे ते सा छाया’ ति सव ते छाया अन्यथा दर्शयितु मिष्टा छाया—प्रवृत्तिः । ‘उच्चवायारि’ ति असमअसाभि, ‘आउसणारि’ ति मतोऽसि त्वमित्यादिभिवचनं, ‘आमोशयति’ शपति, ‘उद्धसणारि’ ति
20 दुःकुलीनेत्यादिभिः कुलाभिमानपातनादिवचनं, ‘उद्धसेइ’ ति कुलाभिमानादव पातयताव, ‘निम्भउणारि’ ति न त्वया मय प्रयोजनमित्यादिभिः पश्यवचनं, ‘निम्भउडेइ’ ति निवरा दुष्मभिषत्त, ‘निच्छोउणारि’ ति त्यजास्मदीयास्तीर्थकराद्व्यापानित्यादिभिः, ‘निच्छोडेइ’ ति प्राप्तमर्थ

त्यानयन्ति, 'नट्टेसि' कयाइ 'ति नञ् स्वाचातनाशान्, 'जसि' भवसि त्व,
'कयाइ' ति कदाचिदने विनमार्थ, अहमव म-य यदुत नष्टस्त्वमसीति,
'मिणट्टेसि' ति मताऽसि, 'मट्टेसि' ति भ्रष्टाऽसि—सम्पद् व्यपेताऽसि त्व
धर्मत्रयस्य योगपदेन यायात् नञ्विनञ्भ्रष्टोऽसीति, 'नाहि ते' ति नैव त ।

'पार्हणज्जाणउण' ति प्राचीनज्ञानपद् प्राप्य इत्यथ, 'पट्टाणि' ति 5
प्रकाशित — शिष्यत्वनाम्नुपगत, 'अ-मुषममा पवज्ज' ति पचनात्,
'मुहाविण' ति मुण्डितस्य तस्य शिष्यत्वनानुमननात्, 'सेहाविण' ति भित्तिवत्
सोपित भनिसमाश्वात्मराया तस्य भगवतो हतुधूनत्वान्, 'सिक्कणाणि' ति
शिरितभनजोलस्यानुपदशदानन, 'बहुस्सुइकण' ति नियतिवादान्निप्रनियानि
हेतुभूतत्वान्, 'कोसलज्जाणउण' ति अथाध्यादेशात्पच । 'याउक्कलियाइ 10
य' ति वातोत्कलिक। स्थित्वा २ यो वातो वाति ता वानोत्कलिका, 'धायमवहलि
याइ थ' ति मण्डलिकाभिर्वा वानि, 'सलसि वा' इत्यादी तृतायाथ सतमी,
'आररिज्जमाणि' ति स्सल्यमाना, 'निवारिज्जमाणि' ति निवृत्त्यमाना,
'मो कमइ' ति न क्रमते—न प्रभवति, 'नो पक्कमइ' ति न प्रकथन क्रमते,
'अच्चित्ताच्चि' ति अक्षिते—सङ्कटगत अक्षितन वा—सङ्कटगमन दशेनाधि—पुन 15
गमनमधिनाधि, अथवा अध्या—गमनेन सह आधि — आगमनमध्याधिगमागम
इत्यथ, ता करानि, 'अञ्जाइट्टे' ति 'अन्यामिट्ट' अभिन्यास, 'सुहत्थि' ति
सुहस्तान् सुहस्ती, 'अहप्पहाणे जण' ति यथाप्रधाना जनो यो य प्रधान इत्यर्थ,
'अगणिझामिण' ति अग्निना ध्यामो—दग्गे ध्यामितो वा हपण्य, 'अगणि
झूसिण' ति अग्निना छवित छपितो वा, 'अगणिपरिणमिण' ति अग्निना 20
परिणामिन — पूर्वस्वभावत्याजनेनात्मभाव नीन, ततश्च हततेजा धूत्यादिना
गन्तजा, कश्चित् स्वत एव नष्टतेजा, कश्चिद् यस्मिन्भूततेजा भ्रष्टतेजा, कश्चित्
स्वरूपभ्रष्टतेजा—ध्यामतेजा इत्यर्थ, लुप्ततेजा कश्चित् अर्द्धभूततेजा, 'लुप्ल

‘छेदने जिदिर इधीभावे’ इतिवचनात्, त्रिमुक्त भवति? ‘त्रिणद्वतेण’—
 विनश्येज्जा नि सत्तास्मिन्तेजा, एकाया वेने सन्दा, ‘छेदेण’ नि स्वाभिदायेण
 यथेष्टमित्यथ, ‘निष्पट्टपमिणवागरण’ ति निर्गतानि स्थानानि मन्त्राकारणानि
 यस्य स तथा तम्। ‘रुदाइ पलोएमाणे’ चि दीर्घा दृष्टीर्दिशु मक्षिपन्नित्यर्थः,
 मानधनाना इतमानानां दृक्षणमिदं, ‘वीट्टुण्टाइ नीसासमाणे’ चि नि स्वाभा-
 निति गम्यते, ‘दाटियाए लोमाइ’ नि उचरीष्ठस्य रोमाणि, ‘अवड्डु (अनड्डु)’
 नि कृकाटिका, ‘पुयल्लि पप्फोडेमाणे’ चि ‘पुततटी’ पुनपदेश मस्फोटयन्,
 ‘विणिशुणमाणे’ चि विनिशुन्वन्, ‘हाटा अहो हओऽहमस्सीतिकड्डु’
 चि हा हा अहो इतोऽहमस्मीति कृत्वा—इति भाषित्वत्यथ, ‘अवड्डुणगट्ठयगए’ चि
 आम्रफलहस्तगतं, स्वर्णयतपस्तेजोजनिनदाहोपशमनार्थमाप्रास्थिकं दूषाभिनि
 भाव, गानादपस्तु मयपानकृता विक्राय समरसेषा, ‘मट्टियापाणएण’ ति
 मत्तिकाभिभित्तजलनं, मत्तिकाजल सामान्यवर्ण्यस्त्यन आह—‘आयच्चणि
 ओवएण’ ति, ॥ टीकायाट्या—आतन्व्यनिर्दोहं कुम्भकारस्य यद्भाजने
 स्थितं तेमनाय ममिभ जल तन। ‘अलाहि वज्जते’ चि ‘जलम्’ जत्यधि
 ‘पर्याप्त’ शक्तो धातायेति योग, धातायेति हननाय तदाभिननसापेक्षया,
 ‘वहाए’ चि वधाय, एतच्च तदाभितस्थावरापेक्षया, ‘उच्छादयणयाए’
 चि उच्छादनताय सचतनाचतनतद्गतवस्तुच्छादनायेति, एतच्च प्रकारान्—
 रेणापि भवतीत्यभिपरिणामोपदेशनायाह—‘भासीरुरणयाए’ नि।

‘वज्जस्स’ चि वजस्य—जवस्य, वजस्य वा मयपानादिपापस्येत्यर्थः,
 ‘चरमे’ चि न पुनरिदं भविष्यतातिक्त्वा चरमं, तत्र पानकादीनि चत्राणि
 स्वगतानि, चरमता चेष्टा स्वस्य निवाणममननं पुनरुत्तरणात्, एतानि च किल
 निवाणकाष्ठे त्रिनस्यावश्यम्भावीनीति नास्त्यतेषु दोष इत्यस्य तथा नादमनानि
 दाहोपशमायापसवार्थात्यस्य चार्थस्य प्रकाशनार्थत्वादयमच्छादयथानि भवन्ति,

सुष्कलसर्वतर्कार्दीनि ॥ त्राणि बाह्यानि प्रवृत्तानुपयामऽपि चरमसामान्या-
 ज्ञानचिचरजनाय चरमाण्युक्तानि, जनेन हि तयां सातिशयत्वाच्चरमता
 अर्द्धीयते, ततस्ते सहेक्तानामाग्रकूणरूपानर्द्धीनामपि सा सुअर्द्धया भवत्विति
 बुद्धयेति, 'पाणयाइ' ति जलविशेषा वतियोग्या, 'अपाणयाइ' ति पानक
 अदृशानि शीतलत्वेन दाहोपशमहेतव, 'गोपुट्टए' ति गोपत्रादत्पनिन, 5
 'हत्थमद्विये' ति हस्तन मर्दित-मर्दित मलितमित्यथ, यथतदेवान-यनिको
 दक, 'धालपाणए' ति स्थाल-ग्रह(?) तत्पानकमिव दाहोपशमहेतुत्वान्
 स्थालपानकम्, उपलक्षणत्वादस्य भाजनान्तरग्रहाऽपि दृश्य, एवमन्यान्यदि नगर,
 त्वक्-उल्ली, सीम्बली-कलायादिकलिङ्गा, 'सुन्दपाणए' ति दक्षस्तस्यज्ञ इति,
 'दाधालय' ति उदकार्क स्थालक, 'दाधारण' ति उदक्धारण, 'दाडुभग' 10
 ति ॥ कुम्भो महान्, 'दाक्लस' ति कलशस्तु लघुतर, 'जहा पभोगपए'
 ति प्रज्ञापनायां षोडशपदे, तत्र चेदमत्रमभिधायते-'मत्र वा फणस वा
 वालिम वा' इत्यादि, 'सरुणग' ति अभिनवम्, 'जामए' ति अपरम्,
 'आसगसि' ति मुखं, आवीलेइ' ति 'आपीडयत्' इयत्प्रपीडयेत्, प्ररुपत
 इव यदिति शप, 'कल' ति कलायो-धान्यविशेष, 'सिञ्जलि' ति वक्षविशय, 15
 'पुट्टविसधारेवगए' इत्यत्र वक्तत इति शेषो दृश्य, 'जे ण ते देवे
 साइज्जइ' ति यस्ती दवी 'स्वदत' अनुमन्यते, 'ससि' ति स्वक स्वर्काय
 इत्यथ । 'हलु' ति गोशालिकातृणसमानाकार कीटकविशेष, 'जाय स-अन्नु'
 इति ॥ यावत्करण्यादिर्द दृश्य-'जिणे अरहा केवली' ति, यागरण 'ति'
 मश्र, 'यागरिस्तए' ति मष्ट, 'जिलिण' ति 'यलीकित' सआत-यलीन, 20
 'विहु' ति वीडा अस्यास्तीनि वीड -लज्जाप्रकषयानित्यथ, धूमाथऽस्त्यथ
 प्रत्ययोपादानात् । 'एगतमते' ति विजने सूक्तिभागे यावदयपुलो गोशालका
 न्तिके नागच्छतीत्यथ, 'समार' ति 'सङ्कृतम्', अयपुलो भवत्समीपे जाग
 मिष्यति ततो भवानाग्रकूणिकं परित्यज्यतु सवत्तथ भवत्ववस्थापिति । 'त नो ररलु

एष अत्र कृण्वे' ति तदिह क्लिष्टास्थिरं न भवति, यद्व्यभिचारिण्यस्य यद्
 भवती आश्रयस्थिरतया निरुत्थितं, किंतु इदं यद्भवति दृढतदाश्रयत्वं, एतदेवाह
 'अत्र चोपलब्ध एते' ति, इयं च निर्विशेषमनकाले आश्रयणीयेन,
 तत्प्रधानकृतादस्या इति । तथा ह्यत्राश्रयस्थानं यत्पृथग्मात्रं तत्तर्जयमाह—'यसी-
 मूलसंस्थित' ति, इदं च यसीमूलसंस्थितत्वं तृणगोवाश्रित्या लोकावस्थिति
 5 मनेति, एतावत्पुनस्तु मद्रिरामद्विविधलिनमपानृचिरसामरस्मादाह—'धीणि यावद्वि-
 रे धीरगा २' एतदेव दिरावस्थिति, एतद्योगादरचनं तस्योपामकस्य
 शास्त्रतोऽपि न व्यलीक्यमाणं ज्ञानं, यो हि सिद्धिं गच्छति सा चरमे गेयाद्वि-
 करोतीत्यादिवचनैर्विमोदितमतिरिक्त्यादिति । 'हसलसंस्थित' ति हसलरूपं शूल-
 10 मित्यर्थः, हसचिह्नं चेति, 'इहोसकारसमुद्भूत' ति अत्राद्ये सकारा-
 पूजाविशेषास्तेषां च समुद्भूतं स तथा तेन, अथवा अद्विसत्कारसमुद्भूतमित्यर्थः,
 समुद्भूतं जनानां सत्त्वं, 'समगच्छाय' ति भगवतोस्तज्ज्ञानेदयाशेषलक्षण-
 घातदानान् घातदो घातका या, अत एव भगवन्मारुत इति, 'वाहयकृती' ति
 ति वाहोत्पत्त्या, 'सुखेण' ति चक्ररज्ज्वा, 'उद्बुध' ति अवशीयत-
 15 निधीयत, कथितं 'उद्बुधमह' ति वृक्ष्यते तत्र आपसम् किञ्चिद्विशेषतैत्यर्थः,
 'आकट्टिकि' ति आकषणेर्कर्मिणाम्, 'पूजासकारादिरिकरणद्वयात्' ति
 पूजासत्कारयोः पूर्वगतया स्थिरताहेतो यदि तु ते गोशालकक्षीरस्य
 विशिष्टपूजा न कुर्वन्ति तदा लोकं जानाति नार्यं जिनो बभूव, न चैने जिन
 शिष्या इत्येवमस्थिरी पूजासत्कारो स्यातामिति तथा स्थिरिकरणार्थम्, 'अव-
 20 गुणति' ति अपावृण्वति । (सू. ५५१—५५६)

सू. ५५७—५९ सिट्पर्यानीतीषधाहाहशम । सर्वानुभूतिसुनक्ष-
 साधुगति' । गोशालकगतिर्मिलवाहनमत्र ।

'साण(छ) कोट्टप नाम चेदप्य होत्या वण्णओ' ति तदणको

वाच्य ॥ च 'चिरार्हण' इत्यादि 'जात्र पुढविशिलापट्टो' ति
 पयिर्वीशिलापट्टकवणक यावत्, स च— 'तस्स ण असोगवरपायस्स हेट्ठा
 इस्सिखधीसमर्हणे' इत्यादि, 'मालुयाकच्छण' ति मालुका नाम एका
 स्थिका वक्षविशेषास्तथा यत् कर्ष—गहनं तत्तथा । 'मिउले' ति शरीर यापक-
 त्वात्, 'रोगायके' ति रोम-पीडाकापी स आसावातङ्गुब्ध—व्याधिरिति 5
 रोगातङ्गु, 'उज्जले' ति उज्ज्वल पीडापोहलक्षणविषमलेशेनाप्यकलङ्कित,
 यावत्करणादिव दृश्य—'तिउले' नीन्—मनोवाक्कायलक्षणानर्थास्तुल्यति—
 जयताति नितुन्, 'पगळे' प्रकर्षरान्, 'ककसे' कर्कशद यमिवानि इत्यर्थ,
 'कडुण' तथैव, 'खडे' रीद, 'तिव्ये' सामान्यस्य क्षमितिमरणदत्त,
 'हुक्खे' ति दु खो दु खहेतुत्वात्, 'बुग्गे' ति क्वचित् तत्र च दुगमिधान 10
 भिषनीयत्वात्, किमुक्त भवति ?— 'दुरहियासे' ति दुरधिसख —सोढुम
 शक्य इत्यर्थ, 'दाहयकतीप्' दाशो व्युत्क्रान्त — उत्पन्नो यस्य स,
 स्वार्थिकप्रत्यये दाहव्युत्क्रान्तिक, 'अवियाह' ति अपिचेत्यभ्युच्चय, 'आह'
 ति वाक्यालङ्कार, 'रोहियवट्वाह पि' ति लोहितवर्चास्थपि—रुधिरात्मक
 पुरीषाण्यपि परानि किमन्येन पीडावर्णनेनेति भाव, तानि हि किलात्यन्त 15
 वेदनोत्पादके रागे सति भवन्ति, 'चाउळवण्ण' ति चातुर्वर्ण्य — माझणादि
 लोक, 'झाणसरियाण' ति एकस्य ध्यानस्य समाप्तिरयस्यानारम्भ इत्येषा
 ध्यानान्तरिका तस्या, 'मणोमाणसिण्ण' ति मनस्यैव न बहिर्वचनादिभि
 रप्रकाशितत्वात् यन्मानसिकं दुःख तन्मनोमानसिक तेन, 'बुधे कपोया'
 इत्याद् भूयमाणमेवार्थं कचिन्मन्यन्ते, अन्ये त्वाद्—कपोतक — पक्षिविशेष 20
 स्तद्वद् य फले वर्णसाधर्म्यात् ते कपोते—कूष्माण्डे, ह्रस्वे कपोते कपोतके ते च
 ते शरीरे वनस्पनिजीवदेहत्वात् कपोतकशरीरे, अथवा कपोतकशरीरे इव
 भूसरवर्णसाधर्म्यादेव कपोतकशरीरे कूष्माण्डफले एव ते उपससृते—ससृते,
 'तोहिं नो अट्ठो' ति बहुपापत्वात्, 'पारियासिण' ति परिपातित

हस्तनमित्यथ, 'मञ्जारकडण्ड' इत्यादरपि केचित् श्रूयमाणमेवार्थं मन्यन्ते,
 अन्ये त्वाहुः — माजरी — वायुविशेषस्तदुपशमनाय कृत — संस्कृत माजरी
 कृतम्, अत्र त्वाहुः — माजरी — विगलिताभिधानो वनस्पतिविशेषस्तेन
 कृत-भाविन यत्तत्तथा, किं तत् ? इत्याह — 'कुक्कुटकमासक' बीजपूरक
 कण्डम्, 'आहरादि' ति निरवयत्वात्ति । 'पक्ष्म मीण्ड' ति पात्रक —
 पिठाकविशेष मुञ्चति सिक्क उपरिष्ठ सप्तस्माद्वतारयतीत्यर्थः, 'जट्टा
 विजयस्स' ति यथा इहेव — इह शते विजयस्य वसुधारायुक्त एव
 तस्या अपि वाच्यमित्यथ, 'चिलमिरे' यदि 'चिले इव' रन्ध्रे इव
 'पञ्चगभूतेन' सफरूपेन, 'आत्मना' करणभूतेन, 'त' सिंहानगारोपनीतमाहारं
 10 क्षीरिकावर्गं प्रक्षिपतीति, 'हृष्टे' ति 'हृष्ट' निर्व्याधि, 'अरोगे' ति
 निर्व्याधि, 'हृष्टे हृष्टे जाण' ति 'हृष्ट' नोपवान्, 'हृष्ट' विस्मित, रुस्मादवम् ?
 इत्याह — 'समणे' इत्यादि, 'हृष्टे' ति नीतेमो जात इति । 'भारगसो
 य' ति भारपरिमाणतः, भारध्व-भारः पुरुषोद्धवनीयो विंशतिपलशतप्रमाणो
 वेति, 'धुमगसो य' ति कुम्भो-जघन्य आत्मनां पट्टया, मध्यमस्तवशीत्या,
 15 उत्पृष्ट पुन शतनति, 'पठमयासे य रयणयासे य यासे घासिहि' ति
 'य' वृद्धिर्विध्यति, किरिष ? इत्याह — 'पञ्चवय' पञ्चवर्षरूप, एव
 रत्नवर्ग इति, 'सेष्ट' ति श्वेत, कथम्भूत ? — 'सत्त्वदलनिमलसज्जिगासे'
 ति शङ्खस्य यत्न — सख्यं तत् वा तद्वत् विमल तत्त्वनिष्काश — सङ्घश य स
 तथा, प्राकृतवाद्येषु सभास, 'आउसिहि' ति आग्रेसान् दास्यति,
 20 'निच्छोडेहि' ति पुरुषान्तरगन्धर्विनहस्तावययथा कारणता ये भ्रमणास्तां
 स्तो निपोजयिष्यति, 'निमत्येहि' ति आकाश-यनिरिक्तदुर्बलानि
 दास्यति, 'पमारिहि' ति प्रसार-प्रणयिष्यति, 'उद्धरेहि' ति अग्रावयिष्यति, अथवा पमारिहि' ति प्रारयिष्यति,
 'उद्धरेहि' ति उपद्रवान् कम्प्यति, 'आच्छिदिहि' ति ईदत् छेदयति,

‘चिच्छिन्देहिह’ ति विसरण विविचनया वा छेत्स्यति, ‘भिदिहिह’ ति
 स्फाटयिष्यति पात्रादेशमेतत्, ‘अवहरिहिह’ ति अग्रहयिष्यति—उद्घाटयिष्यति,
 ‘निमगरे करेहिह’ ति ‘निर्गणन्’ नगननिष्कान्तान् करिष्यति, ‘रज्जस्स घ’
 ति तापस्य वा, रज्ज्यं च राजादिष्वर्थसमुदाय, आह च— “स्वाम्यमात्यश्च
 त्वं च, कोशो दुर्गकलमुदत्। सप्ताङ्गमुच्यते रज्ज्यं, बुद्धिसत्त्वसमाधयम् ॥१॥” ०
 एणदयन्तु तदिशेषा, म्बन्तु एण्—जनपदैकदेश, ‘विरमतु ण वेषाणु
 पिया’ एयस्स अट्टस्स अकरणयाण’ ति विरमण किल वचनाद्योपयाऽऽरि
 स्यादन् उच्यते—अकरणतया—करणनिरपेक्षतया। ‘विमलस्स’ ति
 विमलजिन किलोत्सर्गिण्यामेकविंशतितम ‘समराये’ वृश्यते, स पावसर्गिणी
 चतुर्थजिनस्थाने प्राप्नोति तस्माच्चार्वाचीनजिनान्तरेषु वक्ष्य सामरोपम 10
 कोट्योऽनिकान्ता लभ्यन्ते, अयं च महापद्मो द्वाविंशते सामरोपमाणामन्ते
 भविष्यतीति बुद्धयगममिदं, अथवा यो द्वाविंशते सामरोपमाणामन्ते तीर्थहृदु
 त्सर्गिण्यां भविष्यति तस्यापि ‘विमल’ इति नाम सभाष्यते, अनेकाभिधाना
 भिधेयत्वा महापुरुषाणामिति, ‘वउप्पय’ ति शिष्यसन्तान, ‘जहा धम्म
 घोसस्स वण्णभो’ ति यथा धर्मघोषस्य—एकादशशतेकादशोद्देशका 15
 भिहितस्य वर्णस्तथाऽस्य वाच्य, स च ‘जाइसपप्पे कुलसपप्पे
 वल्लसपप्पे’ इत्यादिपिति, ‘रुच्चरिय’ ति रथचर्या, ‘नोह्मावेहिह’ ति
 नोदयिष्यति—प्रेरयिष्यति, सहितमित्यादय एकार्था । (सू ५५७—५५९)

सू ५६० गोशालकस्य ससारे अमणम् ।

‘सत्यमज्झ’ ति शस्रवच्य सन्, ‘दाहवक्कतीए’ ति दाहोत्पत्त्या काल 20
 कृत्वोति योग, दाहपुत्त्वान्तिको वा मूलेति शेष, इह च यथोक्तक्रमेणैवा-
 सत्रिंशप्रभृतयो रत्नप्रभादिषु यत उत्पद्यन्त इत्यसौ तथैवात्पादित, यदाह—
 “अस्सण्णी खलु पम्म दोच्च च सिरीसिवा तइय पत्तली। सीहा जीति

- चउत्थि उरगा पुण पचमि पुनवि ॥ १ ॥ उट्ठि च इत्थियाओ मच्छा मणुया
 सत्तमि पुनवि ॥ ” [असंशिन खलु मयमां दितोयां च सारिमुपा तृतीयां
 पणिण । सिंहा यान्ति चतुर्थी पञ्चमी पुन पथ्वीमुग्गा ॥ १ ॥ पथ्वी च सियो
 मत्स्या मनुष्याश्च सप्तमी पृथ्वीम् ॥] इति, ‘खट्चरगिहाणाई’ ति इह
 5 विधानानि—भेदा, ‘चम्मपक्खीण’ ति वगुलापभतीना, ‘होमपक्खीण’
 ति हसपभतीना, ‘समुग्गपक्खीण’ ति समुद्गकाकारपभतां मनुष्यक्षेत्र
 बाहिर्वसिना, ‘घिययपक्खीण’ ति विस्तारितपभतां समयक्षेत्रबाहिर्वसिनामेवति,
 ‘अणेगसयसहस्ससुत्तो’ इत्यादि तु यदुक्त्वा तत्तान्तरमवसेपे, निरन्तरस्य
 पथ्वेन्द्रियत्वलाभस्योत्पत्तौऽप्यष्टमप्रमाणस्यैव भावात्, यद्वाह—‘पथ्विदिय
 10 तिस्मिन्ना सत्तट्ठभावा भवगोदेण’ ति, [पथ्वेन्द्रियतिर्यग्गता सत्ताष्टभावा
 भवग्रहणे] इति ‘जहा पल्लवणापप’ ति प्रज्ञापनाया प्रथमपदे, तत्र चैवमिद—
 ‘सरद्धाण सल्लाण’ मित्यादि, ‘एगसुराण’ ति अम्वादीनां, ‘हुसुराण’
 ॥ गवादीनां, ‘गढीपयाण’ ति इस्स्यादीनां, ‘सणहप्पयाण’ ति
 सनत्तपदानां सिंहादिनत्तराणां, ‘क्खच्छमाण’ ति इह यावत्करणादिद्
 15 दृश्य—‘माहाण भगराण पात्तियाण’ इत्यत्र ‘जहा पल्लवणापप
 ति अनेन पत्सूचितं तदिद्—‘मच्छियाण मसगियाण’ मित्यादि,
 ‘उयचियाण’ इह यावत्करणादिद् दृश्य—‘रोहिणियाण कुयूण यियि
 लियाण’ मित्यादि, ‘पुलाकिमियाण’ मित्यत्र यावत्करणादिद् दृश्य—
 ‘हुच्छिडकिमियाण गल्लमाण गोलोमाण’ मित्यादि, ‘रुक्खाण’
 20 ति वृक्षाणामेकास्थिकवद्बुबीजप्रभेदेन द्विविधानां, तत्रैकास्थिका निम्बाग्रादयः,
 बहुबीजा—अस्थिकतिन्दुकादयः, ‘मुच्छाण’ ति वृन्ताक्रीमभृतीनां, यावत्
 करणादिद् दृश्य—‘मुम्माण लयाण वल्लीण पच्चमाण तणाण चलयाण
 हरियाण ओसहीण जलरुहाण’ ति तत्र ‘मुमाना’ नवमालिकाप्रभृतीनां,
 ‘लताना’ पत्रलतादीनां, ‘वल्लीनां’ शुष्पकलाप्रभृतीनां, ‘पर्वकाणाम्’ इत्यु

मभतीना, 'तूषानां' दर्भकुशादीना, 'बल्यानां' तान्ममालादीनां, 'हरितानाम्'
 अज्जागहस्तबुलीयरादीनाम्, 'औषधानां' शालिगोधूममभतीना, 'जल-
 रक्षाणां' कुशुदादीनां, 'कुल्लणाण' ति कुल्लणानाम्, आउरुयप्रभतिभूमी
 र्फाणानाम्, 'उरुस्तत्र च ण' ति बाहुत्येन पुन, 'पार्हिणवायाण' ति
 पूरुषानां, यावत्तरणादत्र दृश्य—'पडिणवायाण दाहिणवायाण' नित्यादि, 5
 'सुद्धवायाण' नि म्दस्तिमितवायूनाम्, 'इगालाण' इह यावत्तरणादेव
 दृश्य—'जालाण मुम्सुराण अरुच्चीण' मित्यादि, तत्र च 'ज्वालानाम्'
 अतलग्गम्बद्धस्वरूपाणां, 'मुमुराण' कुम्फुरादा मसृणाम्भिरूपाणाम्, 'अरिपाम्'
 अनलाप्रतिपदज्वालानामिति । 'जोस्ताण' ति रात्रिजालानाम्, इह यावत्तरणा
 दिदृश्य—'हिमाणं महियाण' नि, 'राओदयाण' ति रातायां—भूमी 10
 या सुदराणि तानि स्थानादरानि, 'पुट्टणीण' ति गतिराना, 'सक्कराण' ति
 चर्करिकाणां, यावत्तरणादिदृश्य—'घालुयाण उवल्लाण' ति, 'सूरफत्ताण'
 नि मणिविशेषाणां, 'घाहिं रारियत्ताण' ति नगरावधिर्विनिर्देशात्त्वेन, मान्तज
 पेक्षयात्त्वेन—यस्ये, 'अतोरायियत्ताण' ति नगराभ्यन्तरदेश्यान्, विशिष्टदेश्या
 र्त्वेनेत्यर्थः । (ख ५९)

15

न ५६१ दारिकामम्यस्तरणशुता भग्न दृढप्रतिभमयश्च ।

'पडिहयण्ण सुक्केण' ति 'प्रतिरूपेण' उचितेन शुभ्र-दोलेन,
 'भट्टकरडगसमाणे' ति आभरणभाजनतुल्या आदेयेत्यर्थः, 'सेत्तकेला
 इय सुमगोप्पिय' ति तेलकला इव—तेलाभयां भाजनविशेषं क्षीराण्मसिद्धं,
 सा च सुष्ठु समाप्राप्या भवत्यथवा लुठति ततश्च तेलदानि स्यादिति, 'चेल 20
 पेडा इय सुमपरिगटिय' ति चेलपटावत्—वस्त्रमञ्जुषेः सुष्ठु सपरित्या
 (गहीता)—निष्पद्मे स्थाने निवेशिना । 'दाहिणिहेसु असुरकुमारोसु
 देवेसु देवत्ताण उपपज्जिहि' ति विरागितश्चामण्यत्वाद्यथाऽनगाराणां

- यमानिरेष्ववापत्ति स्यादिति, यच्चह 'दाहिणित्सु' ति प्राच्यते तत्तस्य
 क्रूरकमत्वन दम्भिणक्षेत्रज्योत्पाद् इतिहृत्वा, 'अत्रिराहियसामण्णे' ति
 आराधितचरण इत्यथ, आराधितचरणना चेह चरणप्रतिपत्तिसममाश्रम्य
 मरणात् यावच्चिरतिचारतया तस्य पालना, आह च—“आराधना य एत्थ चरण
 5 पडित्तिसमयजा पभिइ । आमरणतमजसस सजमपरिपालण विहिणा ॥१॥” इति
 [आराधना चान् चारित्र्यनिपत्तिसमयत आरभ्य । आमरणान्तमजस निधिना
 समयपरिपालना ॥ १ ॥] एव चेह यद्यपि चारित्र्यप्रतिपत्तिभवा विराधनायुक्ता
 अशिक्षुमात्रमभवापरिज्यातिष्ठत्यहनुभवसन्तिता इरा अविराधनाभवास्तु यथात्
 सोधमादिदेवतासंस्मरणमिद्वयुत्पादिहेनव सप्ताण्मभ्य सिद्धिगमनभय इत्यथ
 10 मष्टादश चारित्र्यभवा उक्ता, मूयते चापेर भवाश्चारित्र्य भवति तथाऽपि न
 विराध, अविराधनाभवाभवाग्रहणान्ति, जय त्वाह — “जट्ट भवा उ
 चरिते” [चारित्र्य भवा] इत्यत्र सूत्र आदानभवाना युत्तिकृता चारणातत्वात्
 चारित्र्यप्रतिपत्तिविशारिता एव भवा ग्रहणा, नाराधनाविराधनाविशेषण कारणम्,
 अन्यथा यद् भगवता श्रीमन्महाश्रीरेण हाल्लिङ्गाय प्रमज्ज्या बीजमिनि
 15 दापिता तन्निवरु स्यात्, सम्बन्धमात्रेण बाजमानस्य सिद्धत्वात्, यत्तु
 चारित्र्यदान तस्य तद्वत्प्रचारिते सिद्धतस्य स्यादिति, विरल्याप्यपन्न स्यादिति,
 यच्च दशसु विराधनाभवेण तस्य चारित्र्यप्राप्तिन तद्वत्प्रयतोऽपि स्यादिति न
 दाप इति, अथ त्वाह — न हि पुत्तिकारवत्तनमात्रावम्भोदनादिद्वैतसुत्रमयथा
 चारयय भवति, आश्रयकचूर्णिकारणाप्याश्रयनापथम्य समर्पितत्वादिति ।
 20 एव जहा उज्वाहण इ यादि भावितमेव अम्भद्वयविज्ञानकथयानक इति ।
 पञ्चदश शत वृत्ति समाप्तमिति ।

श्रीमन्महाश्रीरजिनप्रभावाद् गोशालकाहङ्कृतिचदमतेषु ।

समस्तत्रिंशेषु समापितेय वृत्ति शते पञ्चदश मयेति ॥ १ ॥

॥ इति श्रीमद्भगवद्देवभूरिचरित्रिहितत्रिरणयुत पञ्चदश

20 गोशालास्य शतक समाप्तम् ॥

॥ प्रथमं परिशिष्टम् ॥

[श्रीमत्सूत्रवृत्ताद् द्वितीयं श्रुतस्कन्धं पञ्च अध्ययनम्]

गोसाले—

पुराकृद् अद् इमं सुणेह भेगन्तयावी समणे पुरासी ।
 से भिक्खुणो उरणेत्ता अणेगे आइक्खण्णं पुटो वित्तियेण ॥ १ ॥
 सार्जीविया पट्टवियाधियेण समागओ गणओ भिक्खुमज्जे ।
 आइक्खमाणो बहुजल्लमत्थं न सधयाई अरणेण पुव्व ॥ २ ॥
 एगन्तमेअ अद्वा वि ण्हिं दौयल्लमल्लं न समेअ अम्हा ।

अद्दे—

पुर्वि च ण्हिं च अणमय चा एगन्तमेव पडिसधयाइ ॥ ३ ॥
 समिअ लोअ तसथाचराण खेमकरे समणे माहणे या ।
 आइक्खमाणो वि सहस्समज्जे एगतय सारयई तद्दसे ॥ ४ ॥

धम्मं कहत्तस्स उ नत्थि दोसो
 खत्तस्स वत्तस्स जिह्दिदियस्स ।
 भासाय दोसे ॥ विअज्जगस्स
 गुणे य भासाय निसेवगस्स ॥ ५ ॥

मदयप पच अणुल्लप य तद्देय पचासअ सअरे य ।
 विरद इदं स्सामणियम्मि पुण्णे एअअसक्की समणे ति वेमि ॥ ६ ॥

गोसाले—

स्त्रीओदग सेअउ बीयकाय आहायकम्मं तद्द इत्थियाओ ।
 एगन्तचारिस्सिह अम्ह धम्मे तअस्सिणो नामिस्समेअ पाव ॥ ७ ॥

अद्दे—

सीओदग वा तह बीयकाय आहायकम्म तह इत्थियाओ ।
 एयाइ जाण पडिमेउमाणा अगारिणो अस्समणा भवन्ति ॥ ८ ॥
 सिया य बीओदग इत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवतु ।
 अगारिणो वी समणा भवतु सेवति क ॥ पि तहणमार ॥ ९ ॥
 जे यात्रि बीओदगभोइ भिक्खू भिक्खु विह जायइ जीवियट्ठी ।
 से नाइसजोगमधिप्पहाय कायोउगा णतकरा भवति ॥ १० ॥

गोसाले—

इम वय तु तुम पाउकुख पावाइणो गरिहसि सख एव ।

अद्दे—

पावाइणो पुढी पुढी किट्ठयन्ता सय सय विट्ठि करेन्ति पाउ ॥ ११ ॥
 ते अन्नमन्नस्स उ गरहमाणा अकलति भो समणा माहणा य ।
 सओ य अर्थी असओ य नत्थि गरहासु दिट्ठि न गरहासु किंचि ॥ १२ ॥
 न किंचि रुवेणऽभिपारयामो सविट्ठिमग्ग ॥ करेसु पाउ ।
 मग्गे इम किट्ठिप आरिण्हि अणुत्तरे सण्णुरिसेहि अज्जु ॥ १३ ॥
 उहु अहेय तिरिय दिसासु तसा य जे शरर जे य पाणा ।
 भूयाहिसकामि इगुउमाणा नो गरहइ बुस्सिम किंचि लोप ॥ १४ ॥

गोसाले—

आगन्तगारे आरामगारे समणे उ भीप न उणेइ वास ।
 दक्खता तु सती बहने मणुस्ता कणाहरित्ता य लब्धालया य ॥ १५ ॥
 मेहाविणो सिक्खिसय बुद्धिमता सुत्तेहि अत्थेहि य निच्छयत्ता ।
 पुच्छसु मा णे अणमार अन्ने इइ सकमाणो न उणेइ तत्थ ॥ १६ ॥

अद्दे—

नाकामकिञ्चा न य वालकिञ्चा रायाभिओमेण कुओ मपण ।
 वियागेरज पसिण न चा वि सकामकिच्चोणिह आरियाण ॥ १७ ॥
 गता च तत्था अदुया अगता वियागेरज्जा समियासुपखे ।
 अणारिया दसणओ परित्ता ह्म संकमाणो न उवेह तत्थ ॥ १८ ॥

गोसाले—

पण जहा यणिण उदयट्ठी आयस्स हेउ पगेरेह सग ।
 तऊरमे समणे नायपुत्त ह्मचेव मे होइ मई वियक्ता ॥ १९ ॥

अद्दे—

मय न कुज्जा निनुणे पुराणं धिक्खामह ताह ह्म साह पय ।
 पयावया बमज्ज सि धुत्ता तस्सोदयट्ठी समणे ति वेमि ॥ २० ॥
 समारभते धनिया भूयगाम परिगह चेव ममायमाणा ।
 ते नाइसओगमविण्णहाय आयस्स हेउ पगेरते सग ॥ २१ ॥
 विसेमिणो मेटुणसपमाट्ठा ते भोयणट्ठा यणिया वयति ।
 धय तु कामसु अज्झोवयक्का अणारिया पेमरसेसु निट्ठा ॥ २२ ॥
 आरंभग वेव परिगह च अविउस्सिया निस्सिय आयदडा ।
 तेसिं च से उदण ज वयासी चउरतणताय इहाय नेह ॥ २३ ॥
 नेगाति नच्चति य ओदण सो वयति ते दो विगुणोदयम्मि ।
 से उदण साइमणत्तपत्ते तमुदय साहयद ताइ नाइ ॥ २४ ॥
 अहिंसय सव्वपयाणुकपी धम्मे त्रिय कम्मविवेगहेउ ।
 तमायदडेहिं समायरता अबोहिण ते पढिरुवमेय ॥ २५ ॥

॥ द्वितीय परिशिष्टम् ॥

[दीधनिकायस्थसामञ्जफलधृत्वात्]

१९ एकमिदाह भन्ते समय येन मङ्गललिङ्गोसालो तेनुपसर्गमि ।
उपसर्गमिन्वा मङ्गललिङ्गोसालेन मर्द्धि समोर्द्धि समोदनीय कथं
5 सारणीय र्धातिसारेत्या एरमन्त निर्सादि । एकमन्त निसिद्धो खो अह
भन्त मङ्गललिङ्गोसाल पतद्वोच । “ यथा नु खो इमानि, भो गोसाल,
पुष्टिप्पायतनानि सत्यर्थाद् हत्याराहा पे सक्का नु खो भो
गोसाल पयमेव दिट्ठेन धम्मे सङ्गिट्ठि सामञ्जफले पज्जापेत्तु । ” ति ॥

२० एव धुत्ते भन्ते मङ्गललिङ्गोसालो म एतद्वोच । ‘ नत्थि
10 महाराज हेतु, नत्थि पच्चयो सत्तान सक्किलेसाय अहेतुअपच्चया
सत्ता सक्किलिस्सन्ति । नत्थि हेतु, नत्थि पच्चया सत्तान तिसुद्धिया,
अहेतुअपच्चया सत्ता तिसुज्झन्ति । नत्थि अत्तकारे, नत्थि परकारे

[सुपङ्कलेविलातिर्नीनाम्न्या दीधनिकायटीकाया]

१९ एत्थ पन मङ्गललीति तस्स नाम, भोगालाय जातत्ता गोसालो ति
15 बुत्तियं मामं । त किं सकदमाय भूमिया तत्तत्त गहेत्ता मञ्जन्त ‘ तात, मा
खलि ’ इति सामिको आह । सो पमादेन रात्तिवा पत्तिवा सामिकस्स भयेन
पलायितु आरब्धो । सामिको उपधावित्ता द्वावरुण आगदसि । सो हाटक
छट्ठेत्ता अचेत्तको हत्ता पलायि ॥

२० ‘ मङ्गललिङ्गादे पच्चयो हतुवचनमेव । उभयेणापि विपमानमेव काम
20 दुष्चरितार्द्धि सक्किलेसपच्चय, कायसुचरितार्द्धि च तिसुद्धिपच्चय
पटिक्खपति । अत्तकारे ति अत्तकारो । येन अत्तना क्तकम्मेन इमे सत्ता देवत्तं
पि मारत्तं पि ब्रह्मत्तं पि तावक्कवोर्द्धि नि पक्खेक्कवोर्द्धि पि सत्तञ्जुत्तं पि पाणुन्ति,

नत्थि पुरिसक्रारे, नत्थि बल, नत्थि विरिय नत्थि पुरिसयामो, नत्थि
पुरिसपरक्कमो । सत्त्वे सत्ता सत्त्वे पाणा सत्त्वे भूता सत्त्वे जीवा
अयसा अबला अधिरिया नियतिसमतिभावपरिणता छस्सेवाभिजातिसु
सुएदुक्ख पदिसवदेन्ति । सुदस रओ पणिमानि योनिपमुवसतसह-
स्सानि सट्ठि च सत्तानि छ च सत्तानि, पय्य च कम्मूनो सत्तानि पय्य 5

त पि पत्तिकित्थपत्ति । दुनियराद्धन य परकारं परस्म ओत्ताद्वानुयासनि निम्माय
ठोत्त्वा महामत्त अवमसो जनो मनुस्सप्पोभगपत्ता आदिं कत्था चाव अहत्त
पापुणानि, त परकार पत्तिकित्थपत्ति । एवमय बालो जिनचक्र पहार वेति नाम ।
नत्थि पुरिसक्रारे ति येन पुरितक्रारे सत्ता वुत्तप्पफारसपत्तिया पापुणन्ति
त बल पत्तिकित्थपत्ति । नत्थि विरिय ति जादीनि सत्तानि पुरिसक्रार- 10
वचचनानेष ' इदं नो विरियं इदं पुरिसत्थामेन इदं पुरिसपरक्कमेन पवत्त ' ति,
एव पवत्तरचनपत्तिकित्थेपकरणवत्तेन पनेतानि विमु आदिपति । सत्त्वे सत्ता
ति ओट्टुगाणगद्वभादयो अनवमेमे परिगणहाति । सत्त्वे पाणा नि एकविद्रियो
पाणो द्विविद्रियो पाणो निआदिरसन्न वदत्त । सत्त्वे भूता ति अण्डकोल
वत्थिकोत्तेसु भूते सभूते सत्ताय वदति । सत्त्वे जीवा ति छालियवगोधूमादयो 15
सत्ताय वदति । तेसु हि सो विरुद्धभावेन जीवसज्जी । अयसा अबला
अधिरिया ति तस अत्तनो वसो वा बल वा विरिय वा नत्थि । नियति
समतिभावपरिणता ति । इत्थ नियती ति नियता, समती ति छन्न
अभिजातीन तत्थ तत्थ गमने, मायो ति सभावो येव । एव नियतिया च
समतिमा च भावेन च परिणता नानप्पकारत पत्ता । येन हि यथा भवितव्य 20
सो तथेव भवति, येन न भवितव्यो न भवतीति दस्सेति । छस्सेवाभिजातिसु
ति छसु एव अभिजातिसु उक्त्वा सुम च दुक्ख च पत्तिकित्थेदेन्ति । अज्जा
सुवदुक्खभूमि नत्थीति दस्सेति योनिपमुवसतसहस्सानीति पमुवसयोनीन

य कम्मानी तीणि च कम्मानी कम्मे च अहुकम्मे च, इद्वि पटिपदा,
 इद्वन्तरकप्पा, छट्ठमिजातियो, अट्ठ पुरिसमूमिया पण्हनपञ्जास
 आजीयसते, एक्कनपञ्जास परिव्याजकसते, एक्कनपञ्जास नागायास
 सते, यीसे इन्द्रियसते, तिसे निरयसते, छत्तिम रजोधातुयो, सत्त
 5 सज्जिगम्मा, मत्त असाङ्गिगम्मा, सत्त निगाण्डिगम्मा, सत्त देवा,

उत्तमयोर्नानं शुद्धसत्तसद्वृत्तानि भव्यानि च सद्वृत्तताति, भव्यानि
 च छसतानि, पथ च कम्मूनो सतानीति पथ कम्मानी चाति केवलं
 तत्रमत्तं न निरयं दिद्वि दीयति । पथ च कम्मानी तीणि च कम्मानी
 आदिषु वि एतेषु मयो । केचि पण्ह-पथ कम्मानीति पथिप्रपक्वेन
 10 भवति, तीणी नि तीणि कायकम्मदिग्धेनाति । कम्मे च अहुकम्मे चाति,
 एथ पनस कायकम्म च इत्थीकम्म च कम्म नि लद्धि, ममाकम्म उपदुक्कम्म
 ति । इद्वि पटिपदा नि इद्वि पटिपदा ति वदति । इद्वन्तरकप्पा नि
 एकस्मि कप्पे चतुसद्वि अन्तरकप्पा नाथ होन्ति । अयं पन अज्ज हे
 अमानन्तो एवमाह । छट्ठमिजातियो ति कण्ठाभिजाति नीलाभिजानि
 15 लोहिताभिजानि इन्द्रिाभिजाति सुकाभिजाति परसुकाभिजानि इति इमा ॥
 अभिजातिषा वदति । तत्थ आरभिका सूकरिषा साकुन्तिषा भागविका लडा
 मण्डपातका चारा चौरपातका बधनागारिका य ए पनज्जे पि केचि
 कुम्भकम्मन्ता, अयं कण्ठाभिजातीति वदति । भिक्खु नीलाभिजातीति वदति ।
 ते किं चतुसु पञ्चयसु कण्टके (कन्दके) पक्खित्वा रादन्ति । भिक्खु च
 20 कण्टक (कन्दक) वृत्तिका नि अयं द्विस्त पालि येव । अथवा कण्टकवृत्तिका
 एव नाम एके पनजिता ति वदति । इमे किं पुरिमेहि ईहि पण्डरतरा ।
 गिदी ओदातवसना अपेलकसावका इन्द्रिाभिजातीति वदति । अयं अत्तनो
 पच्चयदायके निगण्ठे दि वि जेटुकतरे कपोति । आजीविका आजीविनियो अयं

सत्त मानुसा, सत्त पेसाचा, सत्त सरा, सत्त पदुवा, सत्त पडुया-
सतानि, सत्त पपाता सत्त पपातसतानि, सत्त सुपिना सत्त सुपिन
सतानि खुल्लासति महाकप्पुनो सतसहस्सानि यानि वाले च
पण्डिते च सधावेत्या ससरित्वा इक्खस्सन्त करिस्सन्ति । तत्थ
नत्थि-इमिनाह सीलन वा यत्तेन वा तपेन वा ब्रह्मचरियेन वा 5

सुक्काभिजाताति वदति । ते किर पुरिमिहि चत्तुहि पण्डितप । नन्दो वच्छो, किस्सो
सनिच्चो मक्खालिगोसालो परमसुक्काभिजातीति वदति । ते किर सव्वेहि पि
पण्डितरा । अट्ठ पुरिम्मभूमियो ति, मन्दभूमि सिद्धाभूमि विमत्तनभूमि उट्ठगत,
भूमि सेखभूमि समणभूमि जिनभूमि वन्नभूमीति इमा अट्ठ पुरिसभूमियो ति वदति ।
तत्थ जातदिनसतो पट्ठाय सत्तद्विक्खे सभापठानतो निक्खवन्तप्पा सत्ता मन्वा 10
होन्ति मोक्ष्वा । अय मन्दभूमिनि वदति । ये वन दुग्गतितो आगता होन्ति, ते
अभिण्ह रादन्ति चेष विषन्ति च, सुगतितो आगता ते अनुस्सरित्वा
अनुस्सरित्वा हसन्ति । अय सिद्धाभूमि नाम । मातापितुच हत्थ वा पाद्
वा मऊच वा पीठ वा महत्त्वा भूमियं पदनिकत्तमन वन वीमत्ताभूमि नाम ।
पद्दसा गत्तु समत्थकालो उट्ठमतभूमि नाम । सिप्पानि सिक्खत्तनकालो सत्त 15
भूमि नाम । घरा निकत्तम्म पब्बजनकालो समणभूमि नाम । आचरिय सेवित्वा
विजाननकालो जिनभूमि नाम । भिक्षु च पन्नको जिनो न किंचि आहानि
एव अलाभिं समण वन्नभूमीति वदति । एक्कनपञ्जास आजीवसत्ते ति
एक्कनपञ्जास आजीववुत्तिसतानि । परिट्ठाजकसत्ते ति परि वाजकपञ्जा-
सतानि । नागावाससत्ते ति नागमण्डलसतानि । वीसे इन्द्रियसत्ते ति वीम 20
इन्द्रियसतानि । तिंसे निरयसत्ते ति तिंस निरयसतानि । रजोधातुयो ति
रजआकिण्णट्टानानि हत्थपाठपादपीठानि सधाय वदति । सत्त सज्जिगग्मा
ति ओट्टुगोणगद्दमअजपसुमिगमहिसे सधाय वदति । असज्जिगग्मा ति

अपरिपक्व वा कर्म परिपाचेस्त्वामि, परिपक्व वा कर्म फुस्स फुस्स
 द्यन्तिकरिस्त्वामि इति । देव नत्थि दोणमिते सुखदुक्खे परियन्तकटे
 ससारे, नत्थि हायनदहुने नत्थि उक्कसायकसे । सेय्यथापि नाम
 सुत्तगुटे खित्ते निवेडियमानमेव फलेति, पणमय बाले च पण्डिते

- 5 सालिपवगोधूममुग्गङ्गुवरक्कुद्दसके सधाय वदति । निगण्ठिगम्भा ति
 गण्ठिग्गि जातगम्भा, उप्पुवेज्जुनाडादपा सधाय वदति । सत्त देवा ति बह
 देवा, सो पन सत्ता ति वदति । मानुसा पि अनन्ता, सो सत्ता ति वदति ।
 सत्त पिसाद्या नि पिसाद्या महन्तामहन्ता सत्ता ति वदति । सरा नि
 महासरा । कण्णमुण्डरथरारअनातससीहणपातनियगाअमुचल्लिन्दकुणान्दहे
 10 गहेत्वा वदति । पण्डा (१) ति गण्डिका । पपाता ति महापपाता । पपात
 सतानीति सुदकपातसतानि । सुपिना ति महासुपिना व । सुपिन
 सतानीति सुदकसुपिनासतानि । महाकप्पुनो ति महाकप्पान । तत्थ
 एकम्हा महासरा वस्मसते कुसम्मेन एक उदरुविन्दु मीहरित्वा सत्तकखत्तुं
 तम्मिं सरे निरुदुके कते एको महारूप्यो ति वदति । एवरूपान महारूप्यान
 15 चतुरासीतिसनसहस्रानि सेयेत्वा बाले च पण्डिते च हुवरस्सन्त फरोन्तीनि
 अयमस्स लद्धि । पण्डितो पि किर अन्तरा मुज्झितु न सज्जेति, बालो पि
 ततो उद्ध न गच्छति । सील्लेन वा ति अचेत्कसील्लेन वा अज्जेन वा येन
 रून चि । वतेना नि तादिसेमेव । तपेना ति तपोकम्मेन । अपरिपक्व
 परिपाचेति नाम, यो 'अह पण्डितो' ति अन्तरा विमुज्झति । परिपक्व
 20 फुस्स फुस्स द्यन्तिकरोति नाम यो अहं बालो ? ति युत्तपरिमाण काल
 अतिक्रमित्वा याति । हेव नत्थीति एव नत्थि, तं हि उभयं पि न सका फातु
 ति दीपेति । दोणमिते ति दोणन मिते, दोणेन मित विय । सुखदुक्खे ति
 सुख दुक्ख । परियन्तकटे ति युत्तपरिमाणेन बालेन कटपरियन्ते । नत्थि

च सघावित्वा ससारित्वा दुःखस्सन्त करिस्सन्तीति ॥ इत्थं एते
मे भन्ते मक्खलिगोसालो सदिट्ठिक सामञ्जफल पुट्टो समानो
ससारविसुद्धिं व्याकासि ॥

हायनवद्दुने ति नत्थि हायनवद्दुनानि । न ससारो षण्ढितस्स हायति, न बालस्म
षट्ठतीति अत्थो । उक्कसायकसे ति उक्कसायकमानि, हायनवद्दुनानेमेवेत ववचन 5
इवानि त अत्थ उपमाय सापेत्तो सेव्यथापि मामा ति आदिमाह । तथ
सुत्तगुळे ति वेडेत्वा कचमुत्तगुळ । निम्बेठियमानमेव फलेतीति पचते वा वा
रुक्खगे वा ठत्वा स्मित सुत्तप्यमाणन निम्बेठियमानमेव गच्छति, सुते एतेणे
तत्थेव तिट्ठति न गच्छति । एवमेव सुत्तकालतो उद्ध न गच्छतीति दस्सेति ॥

ARDHAMĀGADHĪ AND PRAKRIT WORKS

Edited By

Prof. N V VAIDYA, M A

Fergusson College POONA 4 (India)

- * (1) **ANTAGADADASĀO &
ANUTTAROVAVĀIYADASĀO** *Out of print*
- (2) **BAMBHADATTA & AGADADATTA** *Out of print*
- (3) **RĀYAPASENAIJJASUTTAM** *The Second*
Uṣāṅga of the Jain Canon *Out of print*
- (4) **NĀYĀDHAMMAKAHĀO** *The Sixth Anga*
of the Jain Canon Complete Text only **7-8 0**
Critically Edited for the first time
- (5) **NĀYĀDHAMMAKAHĀO**
Chapters IV-VIII & IX & XVI-Two Volumes **7-0-0**
- (6) **PAUMACARIYA** of Vimalasūri *Chapters I-IV* **4 0-0**
- (7) **SAMARĀICCAKAHĀ** Of Haribhadrasūri :
Chapter VI *Out of print*
- (8) **DASAVEYĀLIYASUTTAM** *The Second*
Mūlasūtra of the Jain Canon Chapters I-VI **2 0-0**
- (9) **USĀNIRUDDHAM :**
BY CANTOS I & II **2-4-0**
RĀMA PĀNIVĀDA
- (10) **NALAKAHĀ & VARUNAKAHĀ** *From*
KUMĀRAPĀLAPRATIBODHA
- (11) **UTTARĀDHYAYANASŪTRAM**
The First Mūlasūtra Of The Jain Canon
Complete Text Only

Edited By

R D Vadekar & N V Vaidya

2 0 0

Fergusson College Poona-4

Text Edited with English Translation, Notes and Introduction

JAINISM IN GUJARAT

(1100 A. D To 1600 A D)

By C B SHETH, M. A.

Some Opinions

With great interest, I read your book ' Jainism in Gujarat ' It is a very helpful work, being a mine of information which you have put together with great industry Please accept my greetings

Dr A N Upadhye
Vice-Principal Rajaram College
Kolhapur

Jainism in Gujarat is an original work on the history of Gujarat It was written at the invitation of the University of Bombay It fills up a gap in the Literature on the history of Gujarat that has not taken adequate account of the unique contributions made by Jainism to the history and culture of Gujarat This work dealing with a rich and glorious heritage preserved by Jainism in Gujarat will be very useful to students of Indian History

(Agan)

I have read with great interest the comprehensive and well-documented narrative of the Jain contribution to the history and culture of Gujarat and Saurashtra written by Mr Chimanlal B Sheth in English The writer has consulted all available literature which is extant in Sanskrit Prakrit and Gujarati on the subject and he has tried his utmost to connect it with the relevant Persian literature on that period The treatment is lucid and balanced

K H Kamdar
Professor of History and Politics
Vallabh Vidyanagar

